॥ श्री गुरवेनमः ॥

॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यांनमः ॥

॥ श्रीमते हनुमते नमः ॥

मोदलता-विवाह-पदावली

मोदलताजी

अनुक्रमणिका

गुरु-वन्दना	19
गणेश-वन्दना	21
मारुति-वन्दना	21
श्री स्वामिनी-वन्दना	22
श्री सरकार-वन्दना	23
ढाढी पद	25
मालिनक स्वप्न	27
फुलवारी प्रसंग	33
स्वयंवर	34
बरियातीक आगमन	36
मंगल देवाराधन	38
धनबट्टी	38
मटकोर	38
हरदि बुकावन (चुमाओन)	40
मातृका पूजन	41
परिछन	42
दूलह-छवि-वर्णन	44
धुरछक	52
बटगवनी	52
अन्दर-परिछन	55
अन्दर-प्रवेश	57
अढौंगर	57
कन्यादान	58
वरक प्रतिज्ञा	59

कन्याक प्रतिज्ञा	59
सिन्दूरदान	60
सप्तभामारि	61
कन्याक नहछू	62
वरक नहछू	62
लहकौरि	63
मंडप-झाँकी	63
कोवर-प्रस्थान	67
देहरि छेकावन	67
कुलदेवता	68
श्री अवधक स्त्री	69
कोवर हास्य	69
पाटी धराई	70
अष्ट सखी	74
पहेली	74
ज्योनार	75
फगुआ	81
घोघट	88
जगावनि	90
झाँकी	91
सहचरीगण-सरकार सँ	98
सहचरीगण श्री लाड़िली जी सँ	98
चतुर्थी	103
वधू-प्रवेश	104
उपदेश पद	111
महेशवानी	140
समयानुसार देशक दुर्दशा पर	142
अन्नकूट	143
श्री हनुमज्जयंती	143
श्री राघव जयंती	145
फूलबंगला	145
झूला	148

ईश्वरीजूक जयंती	152
श्री कृष्ण जयंती	153
प्रार्थना	157
रास-रहस्य	160
गोपाष्टमी	163
अन्यान्य कबित	164
अष्टयाम	177
आरती	189
पद	190
नम्र निवेदन	191

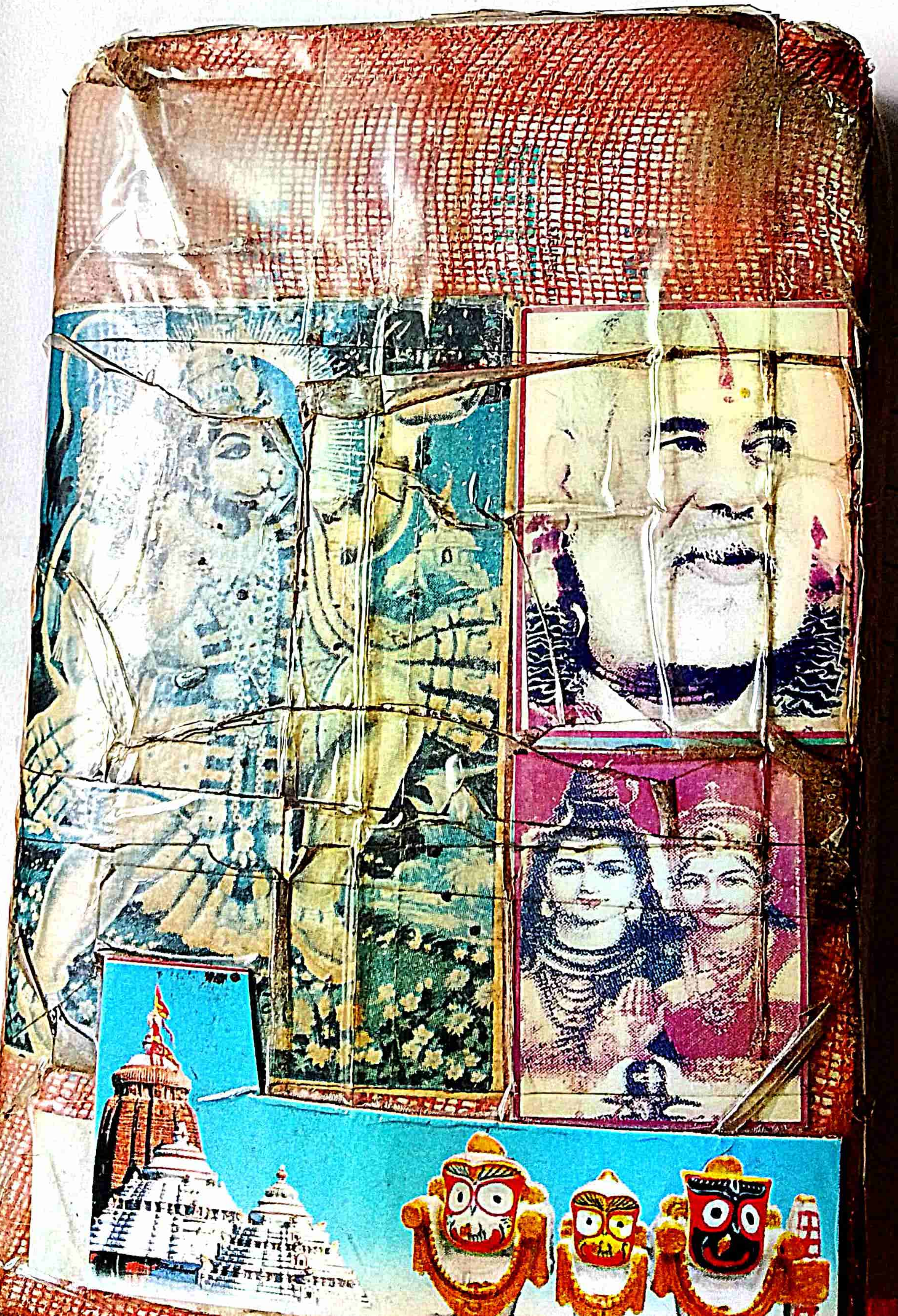

॥ श्री ५गुरवे नमः ॥

॥ श्री ५सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्रीमते हनूमते नमः ॥

॥ पदावली ॥

सर्व स्वच्छगुणाकरं बुधवरं विद्यादयासागरम्।
धर्म्माचाररतिं सुकान्तिललितं सच्चित्तमानन्ददम्॥
स्नेहागारविचारसारनिरतं मोहान्धकारापहम्।
वन्दे वन्द्यपदाम्बुजं मुहुरहं श्रीसद्गुरुं सर्वदा॥१॥

श्री गुरुदेव वन्दना ॥पद॥

आउ सबै मिलि गवै जाउ मुदित मन, सुमंगल गुरुवर चरण। छूटि जाएत महाभव भ्रमण, ओ जुड़ायत जिया के जरन॥ टूटि जाएत प्रबल चित कुटेवैं, वृथालाप विमुखीकरन। जूटि जाएत हृदय सील समता, छमा वयन मृदु मन हरन॥ फूटि जाएत मनोरथ के कलिका, किरण मोद गुरुवर ढरन। लूटि जाएत जिया लखि ललाई, लली लाल के रस भरन॥

॥ पद ॥

जोनिन भ्रमत मोहि बितेउ जुगनियाँ, ऐ श्रीगुरुवर स्वामी, अब न सहल दुख जाय। ऐ श्रीगुरुवर स्वामी॥ सुमिरि-सुमिरि सब अपनी करनियाँ ऐ श्री० रहि-रहि जिया घबराय॥ ऐ श्री०॥ संसृति समनियाँ सुनि रावरी शरणियाँ ऐ श्री० गुनि-गुनि हिया हुलसाय॥ ऐ

श्री०॥ एहि जग बीच तजि पुज्य श्रीचरणियाँ ऐ श्री० मोद के न और उपाय॥ ऐ श्री०॥

॥ पद ॥

सखी री, मैं गुरुवर पै बलि जाऊँ॥ पाँचो संसकार करवाऊँ, सब परपंच भुलाऊँ। गहवर ह्वै नामहिं रट लाऊँ, खतरा खौफ बहाऊँ॥ मैं गुरु०॥ सादर सीत प्रसादी पाऊँ, पदरज सीस चढ़ाऊँ। तजि सेवा नहिं अनत चिताऊँ, कृपा कटाक्ष अघाऊँ॥ मैं गुरु०॥ सदा अधीन दीनता लाऊँ, सब विधि मान मिटाऊँ। सिर काटन चाहै न हटाऊँ ऐसो ठाठ ठटाऊँ॥ मैं गुरु०॥ तीनों तन की ताप नसाऊँ, निज स्वरूपता पाऊँ। लली-लाल को लाड़ लड़ाऊँ, मोद परा रस छाऊँ॥ मैं गुरु०॥

॥ पद ॥

गुरुवर दयालु दानी, की जयति जयति जय हो। सब सद्गुणों की खानी, की जयति जयति जय हो॥ अति स्वच्छ शुभ सिंहासन, पै सोहते सिद्धासन, भव भीम भीति भानी, की जयति०॥ मुनि वसन अंग साजे, द्वादसी तिलक बिराजे, श्रीतुलसि-मालपानी, की जयति०॥ तन कान्ति स्वर्ण से हैं, क्या सान्त-रस लसे हैं, मृदु मधुर सुमुसकानी, की जयति०॥ अलि मोद शरण आवैं, परमात्म-तत्त्व पावैं, करैं जीव पिवमिलानी, की जयति०॥

॥ पद ॥

नेम से गुरुदेव स्वामी जू की झाँकी झाँकिये। जिनकी करुणा कोर से सर्वेश रस को छाकिये॥ हैं गुरु प्रभु से गुरु यह बात सियवर ही कही। ये अटल सिद्धान्त पथ तजि, और दिसि मत ताकिये। श्रीगुरुवर के कृपा हियकुंज अति सुखपुञ्ज में। मञ्जुरस छाका नहीं तो जग में आके का किये॥ विविध साधन कर थकैं दरसैं नहीं तरसैं सदा। मोद सो सहजे मिलैं गुरुदेव की सेवा किये।

॥ श्री गणेशजीक विनय ॥

ए उमा अहाँक नन्दन। देखैते-देखैते भेला जगतबन्दन। सुनितहि नामक निष्ठा कयलनि, दय परदक्षिण कसिकय धयलनि, ताहिसँ भय गेलनि गणाधिप विघ्नबाधा निकन्दन ॥१॥ कनि हमरा पर दृष्टि करथु, हियमें भव्यभाव भरथु, झट दै हरथु सकल भ्रम भेदक फन्दन॥२॥ किछु चाहै छी प्रभुगुण गावक, कहिऔन 'मोद' क उर में आबक, सत्पथ दरसावक-नसावक द्वन्दन ॥३॥

॥ श्रीमारुतिजीक विनय ॥

लोने लाल बजरंग। रँगि दिअ हमरा हृदय में रामरंग॥ जे हर हेरै छथि धै सिर गंग, से हम देखैत रही, दिय से सुढंग॥ प्रभुक सनेही सँ कराउ सदा संग। गुणनिगुणायक मनहिं करु दंग। दम्पति मुरति में सुरति कय अभंग। छवि छाकि-छाकि 'मोद' उमर्ग उमंग॥

॥ श्रीस्वामिनीक विनय ॥

जय-सीते जय सीते सीते, जय सीते जय सीते। प्रभु की पराशक्ति आह्लादिनि, वेद वदैं गुणगीते॥ बिनु तव कृपा रसिकवर प्रियवर, रघुवर होहि न मीते। जापर तव दृग नेक तिन्हैं वह, जोगवत हैं अति जीते। याते रसिकप्रवर शुचि सज्जन तव पद-कंजन चीते। बसे रहें नित प्रेमबाग में, दम्पति छवि रस पीते॥ सी-सी कहि तनु तज्यो सीतवस, सुवश बस्यो भय भीते। 'मोदलता' चित चाह यही हौं तेरी हटै न ही ते॥

॥ दोहा ॥

मंगल श्रीमिथिला-अवध, कञ्चन विपिन प्रमोद।
मंगल सीतारामजू, जो मोदहुँ को मोद॥१॥
मेरे मिथिला देश में, धारे नवशय वेष।
याते यही उपासना, चाहिये हमें हमेश॥२॥

॥ स्वामिनीक ऐश्वर्य-माधुर्य ॥

हैं मेरी वैदेहि सिया सर्वपरा गुणखानी।
हैं मेरी किशोरि सिया सर्वपरा सुख सानी॥
अमित ब्रह्माण्डों के त्रैदेव जो कर्त्ता-धर्त्ता।
सोउ कृपा कोरे चहैं, जोरे रहें युग पानी॥
जो प्रभु परेश जिन्हैं, जोहि जाच्यो स्वायम्भुव मनु।
सोउ मुख लखतेहि रहैं, हीय के सर्वस जानी॥
श्री, भू, लीलादिक जे, शक्ति हैं, तैंतीस शुभा।
श्रीरुख रखते हि रहैं, ठाढ़ी गहे सेवकानी॥
सची-उमा वाणी-रमा, हाथ जोड़े रैन दिवा।
दरस को तरसतेहि रहैं, मोद महा मुद दानी॥

॥ श्रीस्वामिनीजूसँ याचना ॥

दीदी (स्वामिनी) दे दे अब दीदार, होरहि जिय बेजार। ममता माइक तनकी तुरा दे, दे सुमिरण जिय जरनि जुरा दे, वृथाला[illegible] से मनहिं मुरादे---मार-मार मदमार ॥१॥ प्रतिदिन प्रेमिन पद परसा दे, सबमें निज साजन दरसा दे, करुणमयी करुणा बरसा दे--- भावकि भर भंडार ॥२॥ भला कि चित अन्यत्र न जावै, ज्यों जावै त्यों याद तुँ आवै, छन-छन नव-नव नेह बढ़ावै, यहि विधि का[illegible] सम्भार ॥३॥ बिनु तव दया दयालु न द्रवते, सी सुनतहिं पी की दृग श्रवते, ता ततृछण सम्भ्रम चलि अवते सुनि गुण मोद न्योछार ॥४॥

॥ पद ॥

स्वामिनी ये विनय सुनि लीजै॥ स्वामिनी येहौं वारे की मैं तेरी, चरण की चेरी, केवल तूं ही गति मेरी, हौ जानति सब हिय केरी-- अब नेकुदया दृग दीजै, विनय सुनि०॥ स्वामिनी ये---हौं किंकरि अति दीनी, प्रीतिधन हीनी, तव लतिका मोद अधीनी, गुणि विरद रहैं मुद भीनी, धै कर सिर आपन कीजै, विनय सुनि०॥

॥ पद ॥

क्या नीकी बनी नवेली हैं अलबेली लाड़ली। सुख सुखमा सकल सकेली हैं अलबेली लाड़ली॥ प्रकटै अंसनते गुणखानी, अगणित उमा रमा ब्रह्मानी, येही सर्वेसहुँ सुखदानी--रस सर्सेली लाड़ली ॥१॥ सौ-सौ कोटि मदन की नारी, इक-इक रोमन पै बलिहारी, येही अबधेसी धनुधारी--मन कर्षेली लाड़िली ॥२॥ येही हैं सौन्दर्य की सीमा, इनकी करुणा महा असीमा, येही रसिक सन्त जनजीमा--मुद वर्षेली लाड़िली ॥३॥

॥ पद ॥

वसिये उर आ सहितैं पियजू, सियजू सियजू सियजू सियजू॥ गुरुदेव बताये हैं आपहिं के, शरणागत के परतापहिंके, हठिके हरैं दीन की तापहिंके, कहिये और कौन कहाँ बिजयू ! अखिलेश को आनन्द दानि तुहीं, रखती सदा सन्त की कानि तुहीं, करती जिय पीय मिलानि तुहीं-- यह आस सदा दृढ़ कै कियजू॥ भवदीय कृपा बिनु नाथ नहीं, करते कोउ जीव सनाथ नहीं सुनिके गुनके यह गाथ सही-- न्योछावर मोद किये हिजयू॥

॥ श्री ५सरकारसँ ॥

सरकार ओ सरकार ओ, नहिं अहाँक बिना परकार ओ॥ हिय-मुखसँ नाम रटाउ ओ, पद पंकज पद लपटाउ ओ, प्रभु करुणासिन्धु उदार ओ ॥सर०॥ कनै अलक-झलक झलकाउ ओ, कनै बुलकनि डुलनि लखाउ ओ, श्रीसियस्वामिनि सरदार ओ ॥सर०॥ जेना बने तेना अपनाउ ओ, कनै हाथ माथ पर लाउ ओ, ई करु हमर उपकार ओ॥ सर०॥ कनै मधुर-मधुर मुसकाउ ओ, कनै चितवनि अमी चखाउ ओ, 'मोदलतिका-' होय न्योछावर ओ ॥सर०॥

॥ पद ॥

सरकार यो, सरकार यो, सरकार यो, सरकार। तब दरस परस

बिनु बूझि परैये जीवन आब बेकार॥ बहु दिन सौं आस लगे कहिओ मन भरि लखिये लेब॥ अति ललित महावर सहित चरण मस्तक रखिये देव॥ अपनायब अपने जानि अपन कर कंज सीस धार ॥१॥ हीतल सीतल करवैया नहिं जगतीतलमें केओ और। सुखमा सीलनिधान सुलभ श्रीसियबल्लभ सिरमौर॥ करुणा करि मदकाम नाम सुमिरण दिअ हिअ एकतार ॥२॥ सर्वव्यापी प्रभु विश्व कहवावैत अपने छी। पर प्रेमिन प्रेम विवस ह्वै तनु धरि धावैत अ छी॥ द्रवि जाउ दयामय विरद देखि आव मोदहिं दिअ दीदार॥

॥ पद ॥

दरस कब दीहौं राम, तरसत नयना। जानति हौं रमि चराचर, पै मन मानत है ना, मैं कैसे मनैहौं राम॥ संग सहेलिनि ध धरावै, भावै न काहूकी वैना, कबैलौं कनैहौं राम॥ सिय स्वामि संग, लखूँ रंगेरंग, मोदलि और चहै ना, परस कब पइहौं राम॥

॥ साकेत-दिग्दर्शन ॥

शोभित सदा साकेत में सर्वेश सीताराम हैं।
जिनकी सुसत्ता छा रही रस एकही सब ठाम हैं॥
प्रतिरोम पै उनके करोड़ों काम-छवि बेकाम हैं।
है ब्रह्म जिनकी कान्ति प्रभु ब्रह्मण्य अति अभिराम हैं॥
नहिं तत्र माया-काल-भय-शोकादि दुःखदभ्रान्ति है।
सब सखी-सखा समान वपु नखसिख महाछवि छांति है॥
उद्योत दसदिसि कै रही दम्पत्ति की कल कान्ति है॥
सर्वत्र ही सुख-शान्ति है सुख-शान्ति है, सुख-शान्ति है।

॥ दोहा ॥

एक समय सिय स्वामिनी, गहि प्रीतम के हाथ।
मन्द बिहँसि बोली सुनैं, प्राणनाथ मम नाथ॥
प्रकृति-मण्डल के जनन को, देवैं चलि आनन्द।
सुनि संकोचित ह्वै कह्यो, रसिक चकोरिन चन्द॥

वेद अजात कहैं हमें, उनकी झूठी बात॥
प्राणप्रिय कैसे करूँ, कह्यो मन्द मुसुकात।
करुणमई गुनि हीय कछु, स्वायम्भुव कहँ दीन्ह॥
भव्य-भाव वैराग्य तिन, जाय कठिन तप कीन्ह॥
विधि-हरि-हर आये बहुत, बार न लिय बरदान।
लखि अनन्यता विवस ह्वै, प्रगटे पुरुष पुरान॥

॥ सोरठा ॥

प्रीतम को प्रगटाय, मिथिला आप प्रगट भई।
रह्यो जयति-जय छाय बाजैं मधुरि बधाइयाँ॥

॥ ढाढ़ी पद ॥

सीरध्वज महराज भूरि भागिन सरदाज-राजराजन सरताज अजी वाह वाह॥
ढांढ़ी हौं मैं निमिकुल का ये जानै हैं सभासद्।
आनन्द मेरे हिय में आज हो रहा बेहद।
भूपत कहाते भूमि में सब झूठे-झूठे ही।
पुत्री जनाये भूमि से भूपाल मेरे ही।
वर्षों से जमी तर हुई हर्षों से मेरे उर।
बबुई छवि देखने को हैं छाये गगन में सुर।
ब्रह्मा वह हंस पर चढ़े विष्णु वह गरुड़ पर।
वह बैलवाले बूढ़ऊ वर्षैं फूल अंजुलि भर।
अजी बाह ॥१॥
आते हैं प्रजागण सबै बाजा बजावते हुलसावते, पुलकावते, सम्पत लुटावते।
आती हैं सुआसिन सबैं गाती हुई सोहर।
बाजैं नूपुर कटि किंकिंणी कंकण सुताल पर।
ऊमा उमंग में भरीं रमा सुरंग में।
लागीं हैं वयना सबकी सुनयना उछंग में।
बबुई के हस्त देखि के शिव ज्योतिषी हैं दंग।
सुन-सुन के कलेजा मेरा फूलके भया उतंग।
अजी बाह ॥२॥

सज्जन सकल ब्रह्माण्ड के धरते हैं जाको ध्यान।
वेद ओ पुराण जाके गुण को करैं गान।
जिनके लिये जाते हैं राजा राज छोड़ के।
संसार के सम्बन्ध को तिनके से तोड़ के।
विहरेंगे ओ परमात्मा मिथिला गली-गली।
मिलने के लिय लाड़िली मिथिलेश की लली।
सौभाग्य मेरा देख के ललचायँगे जहान।
परब्रह्म ही हो जायँगे आकर मेरा मेहमान।
अजी बाह ॥३॥

देने लगे महराज हीरा लाल भर थारी।
ले-लेके लुटाने लगा आनन्द से ढाढ़ी।
महराज मेरे धन को देखि लाजे हैं इन्दर।
ढांढ़िन को मेरी देखके हैं लाजते चन्दर।
मैं तो कंजकली-सी ललीचरण को चुमुँगा।
चूमि-चूमि के चरण को मैं आनन्द में झुमुँगा।
तरसैं दरस त्रयदेवता सो ढांढ़ि गोद हैं।
वर्षैं प्रसून अप्सरा कहैं धन्य मोद हैं॥
अजी बाह ॥४॥

॥ सोरठा ॥

श्रीकुशध्वजबाल, माण्डवि अरु श्रुतिकीर्त्ति भई।
जाइ भव्य छवि आल, श्रीसुनयना उर्मिला॥१॥
सिय की मुख्य सहेलि, सम बय-बपु गुण-आगरी।
जी, पी, करनि सुमेलि, चन्द्रकला शशिभानुजा॥२॥

॥ अष्टसखि ॥

श्री सुभगा अरु चारुसिला लक्ष्मणा सुलोचनि।
पद्मगन्ध वरारोह हेमा छेमा छवि की घनि।

खेलैं सियमिलि विविध खेल लखि हर्षें मातनि।
हर-धनु लिये उठाय दिवस इक बातनि-बातनि।

॥ दोहा ॥

सुनि मिथिलाधिप कीन्ह प्रण, जो करिहैं धनुखंड।
विजय सहित सिय पाइहैं, सोइ वीर बरबंड॥१॥

॥ सोरठा ॥

समय पाय महराज, कीन्ह स्वयंवर साज शुभ।
आये विपुल समाज, सुरनर असुर त्रिलोक के॥
पूरण यज्ञ कराय, करि मुनि-वनिता उद्धरण।
राम-लखन दोउ भाय, आये विश्वामित्र सँग॥
मिले मुदित मिथिलेश, बहु विधि वर्णत भाग्य निज।
रह्यो त तनहिं सरेष, बिध गये स्याम स्वरूप में॥
दै सब विधि विश्राम, पुनि-पुनि मुनि पद पद्मनय।
आय नृपतिनिज धाम, उगत-पुलकत-फिरि तकत॥

॥ दोहा ॥

मालिन श्री मिथिलेश की, स्वप्न लखी तेहि रात।
जागि कहन लगि कन्त से, अतिहिं पल्लवित गात॥

॥ मालिन का स्वप्न ॥

सुनु पिय माली ऐ, सपना देखी मैं आजु भोर।
आय छविशाली द्वै, राजकुमर चित-चोर॥१॥

थी मैं विचरती बाग, जागे हमारो भाग।
हरिआली से हरित किये वे स्याम गोर॥२॥

अँखिआ जबहिं जूटी, अति सुख लूटी।
छटा निराली पै, वारी में तो काम करोड़॥३॥

अँग अँग रंग छई, सुधि-बुधि गई।
जुजुफ घुँघराली में, घेरि लिये वे मन मोर॥४॥

'मोद' चिताओ जाओ, विलम्ब न लाओ।
प्रेम पिआली ले, रूप रस पी-पी हो विभोर॥५॥

॥ एक सखि ॥

अवध से आये द्वै छयलवा, छवि अंगन छा,
सखि नयननि में गरि जैहैं री उतको मति जा,
सखि मति गति सब हरि लैहैं री उतको मति जा॥१॥

एक स्यामल एक गौरवा, छटा कोटि छपा,
मंद मुसकनि अमि बरसावैं री छटा कोटि छपा।
हेऽलि मन विनु मोल मोलावै री छटा कोटि छपा॥२॥

हंसन के जनु जोरवा, यरी राखो झँपा,
मिथिला से न ये उड़ि जावैं री, यरी राखो झँपा।
पल नैननि से न दुरि जावैं री, यरी राखो झँपा॥३॥

सीय सरिस बर साँवला, गोरे-सी उर्मिला।
विधि इनहीं से धनुष तुराओ री, गारे-सी उर्मिला।
यह 'मोद' की आशा पुराओ री, लखै नयन खिला॥४॥

॥ दोहा ॥

मिथिला-शोभा-लखन को, लखन-चखन अति चाह।
लय आज्ञा पद बन्दि दोउ, चले सहित-उत्साह॥१॥
नखसिख-सुखमा देखि के, बालबृद्ध नरनारि।
पूरण परमानन्द पगि, भये चित्र अनुहारि॥२॥

॥ कवित्त ॥

आसन सजावैं सिर नाय बैसावैं कोउ इतर सुँघावैं कोउ फूलन बरषावैं हैं। संग-संग आवैं मिसु अँग परसावैं भुविरंग दरसावैं कर करन कसावैं हैं। कोउ गृह लावैं चारु चन्दन चढ़ावै फूल-माल पहनावैं रूप दृगनि बसावैं हैं। सुरन सिहावैं सुखरस सरसावैं मोद कहत न आवैं कोउ हँसि-हँसि हँसावैं हैं॥१॥

॥ प्रेमोन्मग्ना ॥

धनुसर-घर प्रीतम प्यारे जीवन जान लिया रे।
सखी मैं साँचि कहूँ इन सम नहिं कहिं जोरी
विधि बना के इन्हें साँचे को दिया तोरी
गौर-साँवला सिरमौर किय चितचोरी
इन्हें जो-जो लखी सो-सो भई उन्मत्त-भोरी
कुसुकादै तिर्छी सयन भृकुटी तान लिया रे॥१॥
हाय काह कहूँ कुछ न कही जाती है।
सिर्फ देखना टक एक ही सुहाती है।
बिना देखे पलक एक जुगनि जाती है।
मोदमुद की राह एक ही दिखाती है।
सियवल्लभ को महबूब अपना मान लिया रे॥२॥

॥ दोहा ॥

पुर-रचना अवलोकिके, निज-सुषमा दरसाय।
आय बन्दि गुरुवर-चरण, बैठे आयसु पाय॥१॥

सन्ध्या करि पुनि सुनि कथा, गुरुपद चाँप सुजान॥
सयन कीन्ह रघुवंश मणि, रजनी रुचिर सिरान॥२॥

प्रात-क्रिया करि गुरु-चरण, बन्दि सहित अनुराग।
आयसु पाय प्रसून-हित, गये भूप बर बाग॥३॥

॥ सोरठा ॥

सकै कौन कवि गाय, शोभा श्रीसियबाग की।
जहाँ बसन्त लुभाय, नायक से बनि नायिका॥१॥

॥ सोरठा ॥

लखि सुषमा सरसात, आनन्द-आनन्दकन्द भे।
करि माली सन बात, लगे लेन दलफूल दोउ॥१॥

अष्ट सखिन के सँग, सियजू आईं तेहि समय।
मज्जन करि सउमंग, श्रीगिरजा पूजन लगी॥२॥

सुभगा संग विहाइ, जाइ लखी रघुचन्द को।
दिये हेरि मुसुकाइ, जकि थकि भई चकोरि-सी॥३॥

पुनि करि हिय में होस, भूषण-बसन सँवारि तन।
बोली वचन सरोष सुनिये श्रीरघुलालजू॥४॥

॥ कवित्त ॥

चितबनि ते घायल करि चित-मन हर लीनो कीनो बाबरे ललासो असहाँ अकेलि पाये हौ। भले भौन वायन दै सर्वस सुबुधि छीने देखूँगी गुरु समीप खैर से जो जाये हौ। खरे रहो तौं लो जौं लो ल्यावति हौं सुस्वामिनी को जौंहुँ रघुवंश के सिरोमणि सुहाये हौ। तौ हूँ श्री किशोरीजू की एक ही विलोकनिते वीरता सुधीरता की नाम हूँ नसाये हौ ॥१॥

॥ सुभगा आपे आप ॥

कहाँ लेके जइहौं राम, ये जुल्मी नयना। नयननि मारी बेकारि भई दई-जबहिं दियो हँसि सयना-चयन कहाँ पइहौं राम ॥ ये जुल्मी०॥ जौं जनती दृग दृग न मिलैती, यहि पथ अइती हैना--जतन कौन लइहौं राम ॥ ये जु०॥ अन्तर होत मोद मरनो है, जीनो उचित अहै ना--जहर विष खैहौं राम ॥ ये जु०॥

॥ दोहा ॥

तन रोमांचित दृगनि जल, विचलित सिर की सारि।
डगमगाति अवरोध गर, आई अलिन मँझारि॥१॥
कोउ सिर वसन सँवारती, कोउ पोछति दृगवारि।
कोउ पूछति कहती न क्यों, को मारे दृगमारि॥२॥

॥ सुभगा पद-१ ॥

बगिया की बात कछु कहलो न जात दइयो।
तुमहिं जनाये बिनु रहलो न जात, दइयो॥
आय द्वै छवीले छैल छटा छहरात, दइयो॥
हाथों में सलोना दोना श्याम-गौर गात, दइयो॥
केतनो बनाय कहूँ शोभा न कहात, दइयो॥
देखैत देखैत ही में चितहिं चोरात, दइयो॥
मन्द कुसुकात करैं मनमा बेहाथ, दइयो॥
श्याम रंग रंगी और रंग ना लखात, दइयो॥
केतनो छिपाऊँ प्रेम छिपे न छिपात, दइयो॥
चलो मोद स्वामिनि वे होंगे अगुतात, दइयो॥

॥ सुभगा पद-२ ॥

मेरी आँखन ते आँखैं निकार दे सुबुधि सुधार दे ना। आये युगल नृप ढोटा, श्यामगौर जोटा, रूप के कोटा मारे चख चोटा-मेरी चोटन को कसेहु टार दे ।सु०॥ जबही जुरे बासे नयना, विहसि दियो सयना, नयन कियो ऐना, मैं हो गई अचैना चल तूहूँ तिरिछि तकि मार दे ॥ सु०॥ हमपै गजब कियो भारी, अजब जादू डारी, स्याम धनुधारी, मोद मन हारी-चल अजब जादू डारी, स्याम धनुधारी, मोद मन हारी-चल तूहूँ घायल करि छाड़ दे ।सु०॥ दोना सुमन भरि लैहैं, लाल चली जैहैं, दाव किमि पइहैं, बहुरिपछतैहैं, तौंलो मैया के मन में सँवार दे ।सु०॥

॥ सुभगा पद-३ ॥

अवध सहरिआ से आय दोउ ठगहरिया सुनु सजनी ये चल बेगि नयना वा से जोर ।।सु०।। कहत बनैना छबि लखते बनै हाँ सु०, एक अहैं स्याम एक गोर ।।सु०।। भूपों के भूषण प्यारे, भुवनों के भूषण सु०, भूषणों के भूषण मत मोर ।।सु०।। जबही विलोकी नयना, बिसरी मैं चैना सु०, करि-लीने अयना, नयना कोर ।।सु०।। मोहि को चला चल तैंरी कर अब न देरी सु०, 'मोद' परूँ मैं पैंयाँ तोर ।।सु०।।

॥ सुभगा पद-४ ॥

बगिया में अयलन सलोना ए सखि हम देखि अयलौं। एक श्यामल एक गौर मनोहर अंग-अंग पर टोना। ए सखि०। नख सिख सुखमा अति ही सुहावन दोउकर पावन दोना। ए सखि०। चाहलक चित्त ललकि गर लागक चितवनि अति ललचौना। ए सखि०। चलु-चलु लै लीअ नयनक फल लोक-लाज धय कोना। ए सखि०। विलम्ब न करु अब 'मोद' स्वामिनी होनी होय से होना। ए सखि०।

॥ सोरठा ॥

श्रवण परी यह बात, आय कुमर वर बाग में।
चली सीय ललचात, बन्दत बाँकी रहि गयो॥
आय लखीं अभिराम, स्याम सहज सुखधाम को।
बैठि गईं तेहि ठाम, उर-मन्दिर पूजन लगीं॥
विलंब जानि अलिवृन्द, कर गहि मनभाई कही।
खोली मुख अरविन्द, बोली मधुरी मन्दस्वर॥

॥ कवित्त ॥

येरी मेरी वीर निज हिय की दुसह पीर सहत रही थी पै न अजहूँ लौं भाख्यो मैं। जा दिन ते देव ऋषि मारग में गये भाखि ता दिन ते बाग लाख-लाख अभिलाख्यो मैं॥ पूज्यो श्रीगणप शिवा शिव

प्रसाद जाके सुभगा सहारे चितवनि अभी चाख्यो मैं। पलक उघारूँ कैसे कढ़ि जैहैं आँखिन ते सोर ना करोरी चितचोर मूँदि राख्यो मैं॥

॥ उनकी दशा ॥

पूर्णशशी शत-सी सिय-आनन देखत ही दृग की पट दूर भो। ठाढ़ ह्वै हेरि रहे तेहि ठाम सुपूरण काम को कामना पूर भो॥ शील-सनेह-स्वभाव विलक्षण देखि तत्क्षण छोभित ऊर भो। 'मोद' की स्वामिनि को लखि के रघुचन्द के गौरव चूरम चूर भो॥

॥ पद ॥

सिय मन मोहनी के, मुँहमाँ निहारिते-हेलि मन मोहलनि मोहना, तन मन भेला बलिहारि हे० ठगैत-ठगैत अयला ठगिओ ठगैला हे० एक टक दृग पट टारि हे०॥ विमल स्वभाव गुणि-गुणि पुलकैला हे०। छलकि गेलैन दृगवारि हे॥ ललित कपोल पर झलकय लगलैन हे० चातकि चख सुखकारि हे०॥ सकल सहेली उमगैली पुलकैली हे० पुष्पाञ्जलि बहु डारि हे०॥ विटप लतान ललचाय ललचैली हे० अलिअन भाग निहारि हे०॥ मोद महामुद पाय सिधारलनि हे० ऊ लिखि ई हिये धारि हे०॥

अधखिले पुष्प पर भ्रमर को देख श्रीजू की सखिगण

॥ पद॥

ऐ भ्रमर कली अधखीली है। पर तेरा ही ली जी ली है॥ अति कोमल किञ्चि रसीली है, सौरभ सौन्दर्य लसीली है। अति मन्द-मन्द विहँसीली है॥ ऐ०॥ अति ललित कलित सुजसीली है, गुणगौरव मंजु गसीली है-अति चोखी चखनि चुभीली है ।ऐ०॥ ललिताई अतिहिं लुभीली है, सावेहिनके हीय छुभीली है, बड़े भाग्य मोद तोहि मिली है ॥ ऐ०॥

प्रसाद जाके सुभगा सहारे चितवनि अभी चाख्यो मैं। पलक उघारूँ कैसे कढ़ि जैहैं आँखिन ते सोर ना करोरी चितचोर मूँदि राख्यो मैं॥

॥ उनकी दशा ॥

पूर्णशशी शत-सी सिय-आनन देखत ही दृग की पट दूर भो। ठाढ़ ह्वै हेरि रहे तेहि ठाम सुपूरण काम को कामना पूर भो॥ शील-सनेह-स्वभाव विलक्षण देखि तत्क्षण छोभित ऊर भो। 'मोद' की स्वामिनि को लखि के रघुचन्द के गौरव चूरम चूर भो॥

॥ पद ॥

सिय मन मोहनी के, मुँहमाँ निहारिते-हेलि मन मोहलनि मोहना, तन मन भेला बलिहारि हे० ठगैत-ठगैत अयला ठगिओ ठगैला हे० एक टक दृग पट टारि हे०॥ विमल स्वभाव गुणि-गुणि पुलकैला हे०। छलकि गेलैन दृगवारि हे॥ ललित कपोल पर झलकय लगलैन हे० चातकि चख सुखकारि हे०॥ सकल सहेली उमगैली पुलकैली हे० पुष्पाञ्जलि बहु डारि हे०॥ विटप लतान ललचाय ललचैली हे० अलिअन भाग निहारि हे०॥ मोद महामुद पाय सिधारलनि हे० ऊ लिखि ई हिये धारि हे०॥

अधखिले पुष्प पर भ्रमर को देख श्रीजू की सखिगण

॥ पद॥

ऐ भ्रमर कली अधखीली है। पर तेरा ही ली जी ली है॥ अति कोमल किञ्चि रसीली है, सौरभ सौन्दर्य लसीली है। अति मन्द-मन्द विहँसीली है॥ ऐ०॥ अति ललित कलित सुजसीली है, गुणगौरव मंजु गसीली है-अति चोखी चखनि चुभीली है ।ऐ०॥ ललिताई अतिहिं लुभीली है, सावेहिनके हीय छुभीली है, बड़े भाग्य मोद तोहि मिली है ॥ ऐ०॥

॥ पद ॥

ऐ प्यारे भ्रमरा-मधुर रसपीले। पीले-पीले पीले पीले। उर अन्तर बिललाने जेहि हित, आज बड़े भागन तोहि मीले॥ बलि जाओ गुन-गुन गुण गाओ, भूलि गरूरत भयउ लुभीले। याद रहे कहैं दल दल कैं नहिं, अतिकोमल यह हैं अधखीले॥ सुखमा पुञ्ज सरोज कली लहि, मोद अली तूँ युग-युग जी ले॥

॥ सखी की भावना ॥

सखीरी आये श्रीसीय ही योग श्याम। मैं चिन्तित ह्वै नित चिताति रहि, पूरण भय अब मनोकाम॥ 'मोद' शम्भु धनु अवसि तोरिहैं, फरकति हैं शुभ अंग बाम॥

॥ पुनः ॥

अयला शिकारी धनुसर सीखिक,
सखि लखु लखु लखु लखु॥
अयला-अयला मख-शाला।
हल्ला भेल सकल महल्ला।
नृपलाला भाला भेदैत तिर्छीली
वंक निमीषक॥ सखि ॥ १॥
अइखन ई धनुष चढ़ौता।
छविसँ श्रृंगार मढ़ौता।
सबपर सुख पौता 'मोद'क सम्पति
दम्पति चितवनि चीखिक॥२॥

॥ स्वयंवर ॥

सीय स्वयंवर आजु चलो सखि देखिये।
तोरहिं हर कोदण्ड ताहि धन लेखिये॥
दिव्य वेदिका ऊपर धनुष धराय हैं।

जो करिहैं यहि खण्ड सो सीतहिं पाय हैं॥
देश-देश के ईश आय यश आश कय।
तोरन तो बड़ि बात न तनक हिला सकय॥
आय रहे बनि वीर बैठे वनिता-सि ह्वै।
धिक्-धिक् इनके जन्म गई किन मातु च्वै॥
विश्वामित्र महाऋषि तेहि छन आयऊ।
श्रीरघुवंशकिशोर अनुज जुत लायऊ॥
ललकि लग्यो सबके दृग प्रभुमुख कञ्ज पै।
अधिक सनेह विदेह बिठाय सुमञ्च पै।
भूप सहस मिलि जाहिं, परसि धनु आवहीं।
मानहुँ लाजहुँ के उर लाज बढ़ावहीं॥
बोले विकल विदेह सबै घर जाइये।
करि झूठी बकवाद न मनहिं रिझाइये॥
विश्वामित्र कह्यो जु लाल धनु भंजिये।
सहित नृपन के मान जनक दुख गंजिये॥
गुरु प्रणाम करि कीन्ह खण्ड कोदण्ड को।
शब्द गयो जनु भेद सकल ब्रह्माण्ड को॥
तेहि अवसर नभ-नगर महा आनन्द छय।
'मोद' चली सिय-संग देन गर माल जय॥

॥ जायमाला पद ॥

कंजनि करबा, ललित सोहैं हरबा, पावैं न गरबा, अलि करती निहोरबा, नवो पिअरबा॥ स्याम सुन्दरबा, बड़े हठ धरबा, गुनै हिअरबा, हँसी होइहैं हमरबा, झुकाय सिरबा॥ करनि इशरबा, झुकाइ सखि थोरबा, दिलाइ मलवा, 'मोद' छाई जयकरबा, नभ-नगरबा॥

॥ मार्ग में ॥

श्रीशंकर-गौरि-प्रसाद सखी, चितचिन्ता मिट गई मोर॥ सियसम तेहुँपुर कोउ नाहीं, याते रहि हैं कुमारि सदा हीं, पर मिलि गये

जोरमजोर ।स०।। जौं जन्म विधाता देहीं, मिथिलैं मँह हिनक सनेही, यह माँगहिं 'मोद' निहोर ।स०।।

।। बारात आगमन ।।

घननन धमकत, झननन झमकत, मिथिला में आयेउ अवध बरिअतिया। एकदन्ता, दुइ दन्ता, मकुना, मुरिया, मैना, मलिआ, अगिनिआँ, अंगद, अगनितिआ। धौंरा, भौंरा, धूसरा, पंगद, कुंजा, करिवर पर झुल झलकत आवत झूमतिआ। घोड़वा अनेक स्यामकरन, सुरंगा, सबुजा, मच्छी, कच्ची पै सवार, मोछ कीड़रतिआ। ताजी मुश्की, पाखर, पंचकल्यानी, गर्रा, लक्खा, दरिआई, हरिअल, अति हिहिंनतिआ। हाँके कोई रविअन, रौहालन, कुडरिन कोई पोई, सरपट, दुलकी दौरतिआ। आगे-आगे गुरु बाबा भरथ शत्रुहन नृप, ताके पाछे क्षत्रिन जमात के जमतिआ। अगनित ऊँट पै नगारा घहरत घन, छूटत रवाइस जनु विज्जु छहरतिआ। आसा, सोंटा, बलम, विमान, बाजा अगणित, आनन्द अपार आजु उर न अमतिआ। मिलि मिथिलेश जनबास को सुपास किये, 'मोद' हूँ के उर आज मोद उमगतिआ।

।। तिलक चढ़ावन ।।

आजु परम परमानन्द सजनी, शोभा बरनि न जाय गे माइ।
चारो कुमरजी के तिलक चढ़ावन, विप्र मंडली आय।।
गाइक गोबर अँगना निपावल मोतिअन चोक पुराय।
सजल कलस पर पल्लव दीपक बारि सुमंगल गाय।।
गणपति, गौरि, गिरीश, ग्रामसुर, श्रीरंगदेव मनाय।
त्रिभुवन तिलकहिं तिलक देत लखि, सुर नभ जय-जय छाय।।
मुख में पान नयन में काजर सुखमा अति सरसाय।
प्रमुदित 'मोद' सकल दरसक-गण चितवनि चखनि बसाय।।

।। पुनः ।।

सखि हे आजु आनन्द बधावन।
सखि हे घर-घर लागत सुहावन।।
सखि हे उमगहुँ को उमगावन।
सखि हे रामजी के तिलक चढ़ावन।।
सखि हे आयउ वस्तु अपारन।
सखि हे हय-गज-रथ असबारन।।
सखि हे नख-सिख साजेश्रृंगारन।
सखि हे जीन अमारी जरतारन।।
सखि हे धोती पीत भरे जौतिन।
सखि हे माल विविध मणि-मोतिन।।
सखि हे जामा ज्योति जड़ावन।
सखि हे चादर विज्जु लजावन।।
सखि हे नख-सिख को बहु-भूषण।
सखि हे देख लजै विधु पूषण।।
सखि हे समला अधिक सुहावन।
सखि हे बिजुरिहुँ ताज लजावन।।
सखि हे कंचन के बहु थारन।
सखि हे झारी रंग हजारन।।
सखि हे मणिमयशोभित कोपर।
सखि हे वरणि जाय कहु कापर।।
सखि हे विविध खिलौना सुहैयनि।
सखि हे भरि गय सब अँगनैयनि।।
सखि हे कामरि भरे कहारन।।
सखि हे लाय मिठाई अपारन।।
सखिह हे सुमरि श्रीरंग-श्रीशंकर।
सखि हे तिलक किये सब द्विजवर।।
सखि हे शोभा सौगुण छाउल।
सखि हे 'मोद'क मन भल भायउ।।

॥ मंगल देवाराधन ॥

मंगल करन गणेश देव प्रथम मनाइए। देव श्रीरामलाल दुलहा सिया दुलहिन, योग सुयोग बनाइये॥१॥ शंकर परम शुभंकर पद-सिर नाइये। दे० सिय-रघुवर के संयोग सुयोग दिखाइये ॥२॥ गोर लागू गौरि गुसाउँनि पग परूँ प्रेम से। देवी श्रीरामलला दुलहा किशोरि दुलहिनि, मोरि के राखो सदा छेम से ॥३॥ बन्दौ श्रीदिनकर देवा जो काया के नाह हे। देवा हम कहँ वेगि दिखाइये सियाराम ब्याह हे॥४॥ हाथ जोरि माँगौं बर नाय माथ, दीजिये श्रीरंगनाथ हे। दे०। तौलों रहैं सिया के सुहाग जबैलौं महि अहिमाथ हे ॥५॥ विनती करौं ग्राम देवा ओ देवी दया करु हे। दे० सियारघुवर के संयोग दिखाय आनन्द भरु हे॥६॥ देव-पितर सन माँगहिं 'मोद' विनती करि हे। देवा प्रगट असीसहिं मातु लेहिं अंचल भरि हे ॥७॥

॥ धनबट्टी ॥

मिथिला आजु सुमंगल सजनी घर-घर आनन्द छाज। अवध नृपति के ब्राह्मण अयलनि लगन बाँटन केर काज॥१॥ ये माइ। लखितहिं नगरछटा छकि गेलनि मंगल रचनाक साज। भेटि यथोचित आदर कैलथिन शतानन्द महराज॥२॥ ये॥ मंगल गान सुनावय लगलनि हिलि-मिलि सखिन-समाज। हरदि-धान-दुवि फेंटि सुबटिलनि गहगहि बाजन बाज॥३॥ ये०॥ करि सम्मान दान बहु देलथिन निमि वंशिनि सिरताज। 'मोदलता' मन मुदित समातिन आनन्द उर मँह आज॥४॥ ये।

॥ मटकोर ॥

कमला पूजन चलि जात हैं, सिय चारो बहिनी संग में सुहागिनी सुहाति हैं, सि०॥ कनक थारनमां मँह अच्छत-चन्दनमा, गूँथी माल सुमनमा, हरे-हरे तुलसी के पात हैं, सि०॥१॥ धूप-दीप-नैवेद्य, विविध फलनमा, लै-लै बहु पकवनमा, व्यञ्जन बनी हैं भाँति-भाँति

हैं, सि०॥२॥ लखि-लखि शोभा सुर वर्षैं सुमनमाँ, ह्वै-ह्वै अंग पुलकनमाँ, गावैं निमि वंशी गुण व्रात हैं, सि०॥३॥ चुनि-चुनि गावैं गारी, उमगित नारी, नाम लै बारी-बारी 'मोद' शुभ औसर सुहात हैं, सि०॥४॥

॥ दूसरा ॥

शुभग सुआसिनि समदि सुनयना रानी, निज गोतनिन बुलाईरी। भूषण-वसन सँवारि सुता चहुँ, कमला-पूजन सिधाईरी॥१॥ परमानन्द पूरि सब सहचरि, मधु स्वर पंचम गाईरी। उमा-रमा-ब्रह्माणी आनि जुरि मिलि सिय अलि बलिजाईरी॥२॥ बाजन बाजहिं अतिहि सुहावन शोभा बरनि न जाईरी। पाँवरे पर परसत पद-पंकज दरसत ललित लुनाईरी॥ जाय निकट सिरनाय सवै मिलि भाव सहित गोहराईरी। श्रीकमला झट प्रकटि असिसेउ, जयति-जयति जय छाईरी॥४॥ चारिउ कुँअरि यथाविधि पूजेउ, मन भावति बर पाईरी। लय तट माँटि नाई सिर चलि सब, अँकुरि आदि बँटाईरी॥५॥ तुरतरु सुमन मुदित सुर वर्षहिं, लखि रहस्य तरसाईरी। 'मोद' सबैं आनन्द अमाति न मन-बुधि-चित न्योछाईरी॥६॥

॥ पद ॥

समदि सुनयना रानी, गोतनिन पुरहितनिन ए चारोललि लय चलली। कमला निकट करे मटकोर ए चारोललि लयचलली। कोटि रति चन्द ज्योति रोमरोमराजैं ए चा० जागैं जगमगित इजोर ए चा०॥ सकल सहेली जुरिअइली हुलसैली ए चा० पहिर अनूपम पटोर॥ ए चा०॥ विधिहरिहरनारी औसर विचारी ए चा० वनि मिथिलानी छविछोर ए चा०॥ पूजन के साज साजें बाजैं बहु बाजें ए चा०॥ गहनन करैं झननन-झननन सोर॥ ए चा०॥ गावती सुरीली तान मांगलिक गान ए चा० सुनिगुणि गन्धर्व विभोर॥ ए चा०॥ मातन के गातनहिं आनन्द समात ए चा० सुखमा निरखैं तृण तोर॥ ए चा०॥

पारा पारी दैवैं गारी प्रमुदितनारी ए चा० मोद रहस रस बोर।। ए चा०।।

।। अद्भुत गारि ।।

अहांके हम कौशल्या रानी कोन-कोन दिअ गरिआ ये। जिनका सबकेओ हरी कहै छथि अहां कहैछी हरिआ ये।। अहांक बेटा अहांक बेटी दूनू बड़ व्यभिचरिआ ये। एक विना नहिं एक रहै छथि एहन लाग लगरिआ ये।। दूनू प्राणि अहां गोर गोरिछी बेटा भेलनि किय करिआ ये।। अहीसँ त जानि परैये अछि किछु फेरम फेरिआ ये।। निज जमायसौं यन्त्र-मन्त्र लय चमकैलौं सुत चरिआ ये। शृंगीऋषि यज्ञ पूरण कैलनि जानै सब संसरिआ ये।। मोद उमंग उमगि कय गावथि अलिअन के महतरिआ ये। अहांक भाग्य धन धन्य कौशल्या धन मोरि गोरि सँवरिआ ये।।

।। उवटावन ।।

आनन्द आजु महा मिथिलापुर शोभा वरनि न जाइ ए माई। चारो दुलहिनि के अंग उबटावन हिलि-मिलि स्वासिनि आई।।१।। गाई के गोबर अँगना निपावल नगजरि चौकी सजाई ए०।। गणपति गौरि मनाय यथोचित चारो कुँअरि बैसाई।।२।। कंचन-थार, फुलेल औ उबटन सुगंध दसो दिसि छाई ए०। पंच सखी शुभ अंगन उवटहिं मधु स्वर पंचम गाई।।३।। तन परसतहिं परा सुख सरसहिं हर्ष न हिये समाई ए०।। यह रहस्य लखि सुरतिय तरसहिं, वर्षहिं सुमन सिहाई।।४।। उवटि अमल अंग, करि दृग-काजर वासित पान पवाई ए०। 'मोद' मगन इकटक छवि हेरहिं मन-वुधि-चित बिसराई।।५।।

।। हरदि बुकावन ।।

मंगल आज सुहावन अति मनभावन हे। युगल संयोग बढ़ावन हरदि बुकावन हे।।१।। मिथिला सुख सरसावन रस बरसावन हे।

दम्पति पद दरसावन हरदि बु०॥२॥ परम प्रीति प्रगटावन, लगन लगावन हे। लाल-लली उवटावन हरदि बु०॥३॥ निरखत जग के छुड़ावन आवन-जावन हे। 'मोद' हिये हरषावन हरदि बु०॥४॥

॥ चुमावन ॥

सिय साँवली को सजनी चुमावती हैं। मन्द-मन्द मुसुकावति हैं। दूवि-धान धै-धै शुभ अंगनि। तिर्छी नजरिया घुमावति हैं॥ हैं कि सती, कि सची, कि सरस्वती विष्णु-प्रिया श्री रमा-रति हैं॥ डाला परसि डुला सिर सेहरा, दिव्य दमक दमकावति हैं। 'मोद' के हियरा हलकत सजनी। जब तूँ हुमकि दबावति हैं॥

॥ मात्रिकापूजन ॥

सानन्द कहेउ शतानन्द रानिहिं टेरि री। रानी, करिय मात्रिका-पूजन भइ शुभ बेरि री॥१॥ करि प्रणाम दय आसन स्वासिनि आलियाँ। लय आई झट साजि सुपूजन थालियाँ॥२॥ गोबर पर दूर्वादल सोरह ठाँव दै। रानिराय गठजोरिकै कियउ अवाहन ए॥३। गौरी पद्मा सचि मेधा विजया जया। सावित्री देव सेना स्वधा स्वाहा करू दया॥४॥ हृष्टि-पुष्टि अरु तुष्टि मातर लोकमातरू। श्रीकुल देव समेत सदा रक्षा करू॥५॥ प्रकट भई अति प्रमुदित सबहिन शक्तियाँ। दम्पति पूजि घृताहुति दीन्ह सभक्तियाँ॥६॥ सबहिं शुभाशिष देहु ललनि सिर कर धरी। सदा सुहागिनि रहैं 'मोद' मंगल भरी॥७॥

॥ बरियाती-परिछन ॥

हुलसि चलोरी सब हिलिमिलि परिछन, दुलह सहज सुखकन्द री। राजद्वार रमणीक चौक महँ राजहिं चहुँ रघुचन्द री॥ मौरन सुहावन छपाकर छकावन कि, छोरन छहरैं छवि फन्द री। नख-सिखकी लुनाई लागैं चल चौधाई, मनहर हाँसी मन्द-मन्द री। चारो बना बननि बिलोके बने बरणत-बानिहूँ की वाणी होत बन्द री। सखि हम सबहिं

शिवाशिव प्रसाद पाये, पूरन परमानन्द री॥ ज्यों सुलुब्ध मधुप सुवास लहि आये भ्रमि, पाय पुष्प परम पसंद री। 'मोद' त्यों श्रीलालहूँ रहैं वलि पाय ललि, मुखकंज मंजु मकरंद री॥

॥ बरियाती परिछन सँ पूर्व ॥

बर महँ बड़-बड़ बात-सजनी बर महँ बड़ बड़ बात। मिथिला में नहिं आएल कहियो एहन अजब बरियात॥ सजनी॥ पहिनहिं आबिके सासुर बैसला ई सबके अछि ज्ञात। हिनके वेद पुकारि कहै छथि पुरुष पुराण अजात। सजनी॥ समधी छथि दस सेहो की रथ समधिन छथि सतसात। एक-एक पर सत्तरि सत्तरि होइत होएत। उत्पात॥ सजनी॥ तीन मास पहिने बरियाती अएला हिये ललात। ओतए तिया सब तड़पैत होइथिन तारागनिते रात ।।सजनी॥ गंगा यमुना सरयू पुरुखिन छथिन भुवन-विख्यात। छकल छिनारी पाप छिनै छथि छनमें छुविते गात॥ सजनी॥ दूषण सब भूषण भए गेलनि जुरिते सियजू सँ नात। 'मोद' मग्न सुर जय कहि वर्षहिं सुरतरु-सुमन सिहात॥ सजनी॥

॥ तिरहुत ॥

देखु देखु देखू सखि दूलह रघुनन्द। रोम-रोम राजैं छटा कोटि-कोटि चन्द॥ जेहने अपन सिय अति सुखकन्द। तेहने साँवर वर सबहि पसन्द॥ मनमा मोहाइए हेलि लखि मुसुकनि मन्द। हिया फँसि जाइऐ जुलुमी जुलुफक फन्द॥ नयन-सयन छन्हि मयन छल-छन्द। कोर पर काजर करैऐ मतिगति बन्द॥ मोद चाहैऐ सब छोरि छारि जगद्वन्द। स्वामिनि सहित सेवी दसस्यन्द-फरजन्द॥

॥ पद ॥

देखु देखु चम्पा बहिना शोभा के बहार ये। सिया के साजनजी के सुभग शृंगार ये। छमकि छावै ऐ छटा मौर छोरदार ये।

मारामारी करै की चाहै ऐ मंजुमार ये।। गुलफुल गाल पै जुलुफ घुँघरार ये। मुसुकनि लखि भूलैं सरीर संसार ये।। अपना लड़ैती पर 'मोद' वलिहार ये। जिनका प्रसादे पौलों शुभ सरोकार ये।।

।। पद ।।

कैसा बना है बना की बनन-रसिकन जीवन धन।। नैयननिते छवि छूटै न छन।। रसि०।। ललित महावर चारु चरन जेहि चिन्तैं चतुरजन। कटि में कसे हैं केसरिया, वसन।। जगमग जामा जड़े मणिगण, चारु चदरा तड़ितसन। गमकैं सुगेन्दे की गजरा गरन।। पान ललाई लसैं अधरन, मन्दहासी फासै मन कजरारे नजरौं पै मोद मगन।।

।। पद ।।

कहवां से अएला दुल्हा एहन लुहलुहार ये माय।
अंग-अंग ज्योति जागैं अति जगजगार ये माय।।
सिरपै विराजैं मौर तुर्रा कलंगीदार ये माय।
चिकनारे चमकारे जुल्फ घुँघरार ये माय।
केसर के खौर ऊँचे चिकने लिलार ये माय।
भौंह धनु नयना-तीर करैं हिया पार ये माय।।
गोल-गोल गाल पै कुण्डल उलटार ये माय।
ओठ-रस पीके डोलैं बुलकन मतवार ये माय।।
दतिया की जोतियापै बीजुरी न्योछार ये माय।
मुसकन मारी भई मोदिया बेकार ये माय।।

।। पद ।।

सियके साँवला बड़ा मनमोहना सखी। मौर मनिन जड़े, तुर्रा कलंगी धरे, जुल्मी जटुआ भरे लुल्फ जोहना सखी।। खौर केसर खरे,

टेढ़ी, भृकुटि तरे, नजरा कजरा परे, सौगुण सोहना सखी।। इनको जो-जो जोवैं, इनको सो-सो होवैं क्या करेंगे कबौ मोद पै छोहना सखी।।

॥ पद ॥

आजुक दिवस धन्य थिक सजनी, सिया सजन के देखूये। लए लए लाभ ललकि लोचन के, जन्म सुफल निज लेखू ये।। मणिन मौर पर जिग्गा लट्टू तुर्रा कलगी औ सर्पेच। चमकैये अति चारुचमाचम सभक आँखिके रखलनि खैंच।। उच्च भाल पर खौर केसरिआ जोहैते मनमोहैये। भृकुटि मड़ोर छोर अलकनके गोल गाल पर सोहैये।। मन्द हँसनि मृदु मधुर अधर, पर अमीबुन्द वर्षावैये। जादू भरल सुजुल्मी जोहनि युवतिन जिय तरसावैये।। एहन धार कर्कस नहिं सजनी छुरा तमंचा नेजामें मोद मुग्ध-भेलनि दृग लखिते, गरलैन कोर करेजा में।

॥ पद ॥

नवल चारो नवसय अवलोकु ऐ अली। माथे मंजुल मौरन, लाजैं विज्जु इजोरन, केसर दधिखौरन भृकुटि सुभली।। नयनन नेह जोरन, काजर कोर कोरन, चितौनी चितचोरन चोरैं चारुचली। अलकडोलैं गालपै, मणीनासा उत्तालपै, अधर लाललालपै-जाऊँ बली बली।। हँसनि मन्द मन्द री हैं 'मोद' मुदकन्दरी, सुपद अरविन्दरी लाओहियथली।।

॥ छविपर छकिके ॥

राजकुमरबर चार री सखिआ छवि लखि ले। माथे मणिन की मौर मनोहर, झलकत झालरदार री, दीठोना निरख ले।। रा०।। भाल विशाल केसर-दधि-अक्षत, कमलनयन कजरार री, चितवनि-अमि चख ले।। रा०।। ललित कपोलकलित कल कुण्डल,

बुलकनि हुलनि बहार री, हेरि हीय हरख ले।। रा०।। रूप यही सखि नयननि को फल, नाम इनहिं के सार री, जपि जीह परख ले।। रा०।। सीय कृपा यह 'मोद' मिले तोहि रघुवर प्राण-आधार री, अब आँखों में रख ले।।

।। पुनः ।।

।। बरिआती परिछन क समय मार्ग में।।

आजु जनकपुर घर-घर मंगल आनन्द अधिक उछाह ए माई। सजि बरियात सुपुत्र विवाहन, एला अवध के नाह।।१।। हाट-बाट मँह चहल-पहल छाएल, उमग सबहिं उर माह। रानी सुनयना के जाई जुड़ाउनि कैलनि सुखि सब काह।।२।। चारिऊँ कुमरि जेहने छवि तेहने, वर चारिहुँ रूपधारि। जानि परइय जनु चतुर विधाता रचलनि सोचि-विचारि।।३।। हम सब प्रगट भाग्यवश भेलहुँ मिथिला अम्बाक गोद। कोहवर वैसि सरस सुख लूटब प्रमुदित 'मोद' विनोद।।४।।

।। पुनः ।।

मंगल आजु जनकपुर मंगल-मंगल हे। मंगल तनेउ वितान गान-ध्वनि मंगल हे।।१।। मंगल बाजन बाजहिं पुर-नभ मंगल हे। मंगल वस्तु लए साजहिं मिलि सब मंगल हे।।२।। मंगल मंत्र उचारहि महिसुर मंगल हे। मंगलतनु धरि धाय उमगि जनु मंगल हे।।३।। मंगल दुलहिनि चारु दुलह चारो मंगल हे। मंगल ब्याह-उछाह 'मोद' प्यारी मंगल हे।।४।।

।। तथा ।।

आजु सियाजू के ब्याह की लगनियाँ ए सखि घर-घर मंगल, बाजन बाजैं घनघोर। ए सखि घर-घर मंगल ।।१।। आय बरियात

साजि, विविध बाहनियाँ, ए सखि०। रघुकुलमणि सिरमौर॥२॥ सुनि न परत सखि बतिआ अपनियाँ, ए सखि०। जुरे अगवनियाँ अथोर॥३॥ लखि बरषावैं बहु सुरन सुमनियाँ, ए सखि०। जयति-जयति करैं सोर, ए सखि०॥४॥ 'मोद' उमगि गावैं प्रेम मगनियाँ, ए सखि०। छवि छकि-छकि तृणतोर॥५॥

॥ तथा ॥

देखो सियापियवा के दुलह सुवेसवा हे।
आयउ बरात साजि अवधनरेशवा हे॥
हथिआ चौदन्ता है कि दिग्गज गजेशवा हे।
हौदवा में सोहैं चारो पाहुन प्राणेशवा हे॥
कहि नहिं जाति काहू भाँति छवि-लेसवा हे।
गिरा भई गँवारी सी औ गुंगा भये शेषवा हे।
घोड़वा नचावै आकि नचवै खगेशवा हे॥
छोहरे छबीले छैल क्षत्री वीर वेसवा हे।
हँसत-हँसावत दिखावत तमसवा हे॥
त्रोण-धनु काँधे, असि बाँधे कटि-देशवा हे॥
छूटत रवाइस मानो विज्जु छहरेशवा हे॥
फूटे बमगोला मानो घन घहरेशवा हे॥
दुलहा के बाबूजी के अधिक बयसवा हे।
तदपि सोहात जैसे शोभा में सुरेशवा हे।
दीजिये गोसइयाँ वर, कृपा कय विशेषवा हे।
'मोदिया' के मन बसैं दम्पति हमेशवा है॥

॥ तथा ॥

देखो देखो देखो सखि, रघुकुल नन्दा। आनन्द कन्दा, चढ़े चौदन्ता गयन्दा, आनन्दकन्दा॥ सिर पै सुरंगी समला कलंगी जरिन्दा।

जुलुफ फन्दा, आकि लहलहैं फनिन्दा॥ भाल विशाल पर, केसर के बिन्दा। नयनानन्ददा करै कमलनि निन्दा॥ चारों चन्द्रिका लागि आये चारो चन्दा। कि अरविन्दा, चारो लागि चारो मलिन्दा। 'मोद' विमोहे लखि मुसकनि मन्दा। विहाय द्वन्दा चाहैं सेवन स्वच्छन्दा ॥वि०॥

(८१)

मिथिला शहरिया की चिकनी डगरिया, से धीरे-धीरे। चले आवें चारों भैयाँ से धी०॥ दुई स्यामल दुई गौर सुहैया, से धी०। नीकी अंग निकैया॥ से धी०॥ नखसिख भूषण नगन जरैया, से धी०। जागैं जगमग जोन्हैया॥ से धी०॥ लखि अलवेलिनि लेवैं बलैया से धी०। भई 'मोद' मनभैया॥ से धी०॥

(८२)

कैसा अजब दिल्दारा ऐ सियप्यारी का प्यारा। ब्याह विभूषण-बसन सँवारा, जादू भरे हैं नजारा, ऐ सि०॥ हरत सम्हारा तनमन सारा, करतहिं तनक इशारा, ए सि०॥ रूप अगारा, गुणनि अपारा 'मोद' किधौं दृग-तारा॥ ऐ सि०॥

॥ पुनः ॥ (८३)

देखो-देखो री सब, चारों सुन्दर वर, राजा दशरथ जी के लाल माई हे। चारों कुमरि योग, आनि मिलौलनि, श्री गौरीशंकर कृपालु माई हे॥१॥ सिरपै सुरंगी चीरा, तुर्रा कलंगी हीरा केसर खौर ऊँचे भाल माई हे॥२॥ अजब अनोखी आँखी, कजरा सुरेख रेखी, चितवत करत निहाल माई हे॥३॥ कुण्डल मणिन जर, उलटे कपोल पर, बुलकनि करत कमाल माई हे॥४॥ जिअरा अरुझे लखी, औरों न सूझे देखी, मुसकत मुख दै रुमाल माई हे॥५॥ अँगुरिन छल्ला छाजै, नख-सिख रूप राजै, गरवा में गेरे मणि-माल माई हे॥६॥ सौंपि सम्पति साज, राखैं विदेहराज, मिथिलैं इनहिं सब काल माई हे॥७॥ प्रेम बढ़ाय चाहे, लौन पढ़ाय चाहे लेवै बझाय यंत्र-जाल माई

हे॥८॥ 'मोद' नतो वियोग, बौरि हो बिरह-रोग, लागत जीवन जवाल माई हे॥९॥

॥ पुनः ॥ (८४)

रघुनन्दन आवहिं विलोकु सखियो,
नजरवाली नजर सँभार रखियो,
जादूवाली जदुआ सँभार रखियो,
टोनावाली टोनमाँ सँभार रखियो॥
माथे मणि मौरवा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
केसर की खौरवा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
नयननि कजरवा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
जुलमी नजरवा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
कुण्डल हलनवा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
मञ्जुनासा मनवा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
स्याम-गौर जोड़वा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥
'मोद' चितचोड़वा वि०। न०॥ जा०॥ टो०॥

॥ पुनः ॥ (८५)

घोड़वा छमकाबत आवैं साँवला पहुनमाँ। देखु सहेलिया मोरिए, मौरिया की अजब बहार ॥१॥ ऊँचेरे लिलरवा पर लटकैं लट घुघुरबा। दे०। जुलमी नयनमाँ कजरार, दे०॥२॥ चिकने कपोलवा पर करैं कुण्डल कलोलवा। दे०। ओठवा अनुठवा अरुणार। दे०॥३॥ बुलकनि की डुलकनि लखि लखि हुलसेला मोरि छतिया। दे०। मुसुकनि बनावेला बेकार। दे०॥ ४॥ 'मोद' न रुकिहौं संग रहि रैनिदिन विलाकिहौं। दे०। लोक-लाज कुल-कानि छार। देखु०॥ ५॥

॥ छवि ॥ (८६)

कैसा सलोना सँवलिया ऐ, चमेली चम्पाकलिया॥ आखैं

अघाती न देखे सँवलिया, रूप अनूप अतुलिया, ऐ।। च०।। जादू जगाय जुलुम के सँवलिया मिथिला शहर गलि-गलिया, ऐ।। च०।। नयना मिलाय जब मुसकैं सँवलिया, मोल लए लेत बिनु मोलिया, ऐ।। च०।। चाहूँ ललकि गर लागूँ सँवलिया, लाज बहा दूँ सहेलिया ऐ।। च०।। हमहीं नहीं मोहे बहीं सँवलिया, को न गई बलिबलिया, ऐ।। च०।। बगिया में मोहिगय आपो सँवलिया, लखते सुनयनी नवेलिया, ऐ।। च०।। जैसेहिं ललिया वैसिहिं सँवलिया, जोड़ी मिली भलि-भलिया, ऐ।। च०।। 'मोद' मुदित लखि सीया सँवलिया, गावै उमँगि मँगलिया, ऐ।। च०।।

।। छवि ।। (८७)

दुलहा आये दुअरिया, ए देखो देखो गोरिया। घोड़वा चढ़ल दुलहा आये दुअरिया, बाजा बाजै घनघोरिया, ए दे०।।१।। झुण्डे के झुण्ड आवैं हाथी अमरिया, जोड़ी बग्गी घोड़ा घोड़िया ए० दे०।।२।। हुम्-हुम् हुमकत आवैं कहरिया, लिये कारचोबी खड़खड़िया, ए० दे०।।३।। रोशनी से लागे रात-दिन दुपहरिया, छूटे रबाइस धराधरिया ए० दे०।।४।। परिछन करैं सजि सीया महतरिया, प्रेममगन फिरि-फिरिया, ए० दे०।।५।। दै के रुमाल दुलहा हँसे मुख मोड़िया, 'मोद' पै मारें नजरिया ए० दे०।।६।।

।। परिछन ।। (८८)

दुल्लह आये राज द्वार पै, चल परिछन चल चल।। ऐ मइया चाचि बहिनियाँ, ऐ फुआ सुआसिनि कनियाँ, पल देर नहीं भल।।दु०।। ऐ मौसी माय जेठनियाँ, ऐ 'मोद'- विनोद सुधनियाँ, स्वर धारिय मंगल ।।दु०।। ऐ फूल ऐ हीत मिलनियाँ ऐ मित्तिन चम्प कलिनियाँ, चलु लै जीवन फल।। दु०।।

।। परिछन ।। (८९)

पऊरि आय पाहुन परिछे चल री। सुनो-सुनो सूआसिनि,

दम्पति की उपासिनि, सहेलिनी खवासिनि, प्रीतम प्रेम-प्यासिनि, चलो लेवैं सबैं मिलि नयनफल री॥१॥ सम्हारि लेरी डलवा, हरदि दूर्वा दलवा, रही-दधी-सुमलवा, सिला सेदेला गलवा, चलो गाओ मंगलवा सुकंठ कल री॥२॥ उमा रमा सुभारती, सचीहिया उमगावती, दरस को तरसती, वनाय वेश नरती, हिलिमिलि के गावैं जावैं बलि बलिरी॥३॥ द्वै श्यामल गौरवा, हैं चारो चित्त चोरवा, जगत सिरमौरवा, के सोहैं सिरमौरवा, ठगौरी ठौर ठौरवा-विलोकु भल री॥४॥ परीछैं सब सासुरी, कि हुलसि हुलासुरी, हैं रोके प्रेम आसुरी, हैं होश ना हवासुरी-'मोद' प्रमोद पागी है न परै कल री॥

॥ चितवनि ॥ (९०)

अँखिअनि आँखें जमकि गइरी, चोखी चितवनि चमकि गइ॥ सियजु के सँवला दिये सिर समला, मोपै किये हमला हमकि गइरी॥चो०॥ ठामें ठमकि गइ, अँगें थमकि गइँ, रोम-रोम रौनक रमकि गइरी॥ चो०॥ बसनैं गमकि गइँ दसनें दमकि गइँ 'मोद' पै छूरी छमकि गइरी॥ चो०॥

॥ चितवनि ॥ (९१)

देखो-देखो देखो सखी साँवला पहुनमा हे। जिनका देखैत सखि मोहि जात मनमा हे॥ मिथिला की असही, दुसही, डारै ना कहिँ टोनमा है। ताते सहेली झटसे दैदे दीठोनमा हे॥ घोड़वा गुमान भरे करे फन-फनमा हे। जौंहर जड़ित जीन जेबर झन झनवा हे॥ झुकि-झुकि चुचकारैं झूलै मौरन छोरनमा हे। मानो दिव्य घन पर नाचैं विज्जुगनमा हे॥ भाल विशाल पर तीन रेखनमा हे। मनहुँ जनावैं तीनो लोक ना अइसनमा हे॥ भौंहें कमनियाँ सखिया नयना चोखे बनमा हे। मनमृग आपे आय होत कतलनमा हे॥ गोलगोल गाल पर डोलैं अलकनमा हे। मानो झुकि-झुकि पूछैं केहि मन ठेकनमा हे॥ मुसकन-मद पीके डोलैं बौरी बुलकनमा हे। बोलिया अमोलिया करैं अंग-अंग पुलकनमा हे। मलवा अलबेलवा झुकि-झुकि देवैं सिखवनमा

हे। आओ-आओ शरनियाँ इनके चाहो यदि कल्यनमाँ हे।। जन के हित करते-करते बढ्यो करकमलनमा हे। अँखिया में रहते-रहते श्याम भए रंगनमा हे।। धन-धन किसोरी मोरी जिनलगि ललनमा हे। आपहि आय बने मिथिला मेहमनमा हे।। युग-युग जीवैं सखिया दुलहिन दुलहनमा हे। 'मोद' मंगल गावैं बरषैं सुमनमा हे।।

॥ छवि ॥ (९२)

लखु ऐ सहेली लखु लाड़िली के वर हे। जेहने सलोनी सिया तेहने सुघड़ हे।। माथे मंजु मौर जगमगैं मणिजर हे। भाल-खौर केसर भृकुटि दिव्यतर हे।। बड़बड़ आँखि जहराओल जादू-भर हे। जोहितहिं जियरा करत बेखबर हे।। कहर मचाओल आँखि सकल शहर हे। स्ववश कैलक नै बाँचल नारि-नर हे।। मन्द-मन्द हँसि फाँसैं प्रेमिन के गर हे। नखसिख अनुपम 'मोद' मुदकर हे।।

॥ पद ॥ (९३)

आइ सुनयना माइ के अंगना आनन्द छायरी।
अलख अगोचर घट-घटवासी बना बनि आयरी।।
सुरन विमान चढ़ि-चढ़ि नभ आये फूल बरषायरी।
गावैं मंगल पंचम स्वर उमगायरी।।
नवरंग चुन्दरी पहिरि धाई सुन्दरी दरस पायरी।
झट भूषण वसन पट को लुटायरी।।
पारापारी परिछैं छयल छवि छाकि सुधि विसारायरी
मोद मगन सनेह मन वच कायरी।।

॥ पद ॥ (९४)

देखो प्यारो दुल्हा कहर करेला।
जुल्मी नजरिया जहर भरेला।।
मणिन मौर जगमग जरेला।
छोरन की छवि विजुरीन छरेला।।

भृकुटि मरोड़ मोरा उर गरेला।
गालन पै मोतिअन लर लरेला।।
अरुण अधर ते अमिय ढरेला।
मधुरी हँसनि 'मोद' मन हरेला।।

॥ पद ॥ (९५)

ललकि लखलोरी सखि सीयबना को- क्या जौंहर जड़े शेहरे सरवा को। नवरंग मणिन की मौर झला झलक रही है। छोरन की सु छहरान छटा छलक रही है। घूघटपटों की ओट में न पलक रही है। अवलोकते शैदा हो सारी खलक रही है-चमकीले गालों पै हलरा के अलकैं, सहेली करैं अपनो नहिं काको।।१।। परब्रह्म हैं ये, कान्ति इनके ब्रह्म कहाते, इनहीं को वेद नेति नेति नेति हैं गाते। केवल अनन्यताइ से ये हाथ हैं आते। बस रीझते हैं सिर्फ शुद्ध प्रेम के नाते। करते परस्पर विदुष जन ये बातें। श्रीसीय कृपा यह छविरस छाको।।२।। राजाधिराज राजते मसनद सहार से। आगे में लसैं चारहू सुकुमार मार से। गायक गुणी गुण गाते ग्राम स्वर सम्भार से। जनवासे सारे भर रहे जल्वा बहार से। चहुँ ओर से सुर सुमन हैं वर्षाते, मगन मुद मोद पाय मनसा को।।

धुरछक

॥ पद ॥ (९६)

छुरछक की कलसा लएके चलली सुआसिनि ऐ रसप्रीतीमाती। सजि लीनी सोरहो शृंगार ऐ र०।। पीतरंग सारी अंग सुवरण धारी ऐ०। भाल लाली सिन्दूर सँभार, ऐ० र०।। मांगलिक बाजन की गति पै पग धारैं ऐ०। गान-तान लाजैं सुरनार, ऐ०र०।। मंगल सुनाती, उमगाती, लखे आती, ऐ०। रघुवंशिन सरदार ऐ० र०।। भरि-भरि डलवा असरफी लए दीनी ऐ०। 'मोद' चली गावती जयकार ऐ०र०।।

॥ पद ॥ (९७)

कहु कहु नृपलाल, साँच साँच निज गाँवक हाल।। सब रघुवंसी में एकहिं नारि। कोनाकै भोगल गेलैन अतरज भारि।। साँचे

अवधक चतुरा नारि। खीर खाय सुत पौलन्हि चारि।। साँचे अवध के कुमरि बेसर्म। ऋषि संग रंग कैल छारि कुलधर्म।। तब कुलकन्या नृप घर नहिं गेल। सब दिन सबके बबेजी वर भेल। मनमा मोहाइत अछि अहाँ के निहारि। कोनाकै बाँचल होइती अवधक नारि।। आगम निगम कहै छथि पुकार। 'मोद' अहींछी सब लोकक सार।।

।। पद ।। (९८)

एकटा बात हमर कनै सूनि लिय। ई विधि कए आगाँ पैर दिय।। अइठामक ई विधिक प्रसिद्धि अछि माय बहिनकें नाम लिय। पितुसँ सौ गुण माय अधिक छथि अपनहुँ देखु बिचारि हिय। बिना नाम जनने जननीकें, गौती कोना गितगाइनि तिय।। 'मोद' मन्द हँसि कहलनि मधुस्वर ताकि तिरछि मुसुकाथि सिय।।

।। पद ।। (९९)

प्रियवर पाहुनजी कहिये तो ये कैसी अद्‌भुत बात। कहि नहिं जात कहे विनु न रहात प्रियवर पाहुनजी, जोहि जोहि जिया सकुचात।। राजाजी हैं गोर और रानी सब हैं गोरी प्रिय० आप कहाँ से आये श्यामलगात।। मुनि विश्वामित्रजी से, नृप कह्यो सत्य क्या प्रिय० तुम मुनि पिता न औरो इनके तात।। 'मोद' सुनि सुनि गुनि अतरज आवैं प्रिय० कोन सुभागहिं भए सियाजु से नात।।

।। पद ।। (१००)

प्रियवर पाहुन यो कहूत एकटा परम प्रेम के बात। अमित अनंग अंग-अंग लखि लजाइऐ प्रियवर०, हियरा होइऐ हेरैते बेहात।। अवध के तिया अइखन थिर कोना होइती प्रि० पा० जारैत हैतैन जियरा मन जात।। पूरण काम राम सबहि कहै छथि प्रि० पा० विरद विशद विख्यात।। बड़-बड़ शान्त तिया होय रमै छथि प्रि०पा० रहल शान्ति सँ कोन कहू तब नात।।

॥ पद ॥ (१०१)

सियवनरी के बननि विलाकु ऐ बना। श्रीचरण कमलिया पैं ललित अंगुलिया विलोकु ऐ बना, नगजरि नृपुर मंजुलिया वि०॥ छीनी सुकमरिया प कामदार सरिया वि०, कोरन मणिन मनोरिया वि०॥ कंचुकि अमोलिया पै चारु चम्पा कलिया वि० चन्द्रहार पँचलरिया॥ हँसुली हजरिया पै हैकल हुमेलिया वि० झलकैं हीरन की हरिआ वि०। बाजू तीनधरिआ बहूटा नग दरिआ वि०, पहुँची कंकण मुन्दरिया वि०॥ बिन्दुली टिकुलिया-मांग-टीका सुठि ठौरिआ वि०, 'मोद' लोचन लजोरिया॥

॥ पद ॥ (१०२)

दुलहा निरखु सुनयनी नयन भरू ना॥ जुजुफ सम्बरिआ पै मणिन मऊरिआ नयन भरू ना छहरैं मोतिन की छोरिआ नय०॥ भाल चिकनौरिआ पै, केसर की खौरिआ नय०, भौंआ धनु पंचसरिआ नय०॥ दाड़िम दतुरिआपै पान अरुणरिआ नय० मोद हँसनि मधुरिया नय०॥

॥ कन्या निरीक्षण ॥ (१०३)

आजुके आनन्द कछु कहलो न जाई हे।
दस दिसि जयति जयति जय छाई हे॥
भई भीर भारी प्यारी नृप अँगनाई हे।
कन्या निरेखन आये रघुकुलराई हे॥
संग गुरु साधु विप्र मित्र समुदाई हे।
सादर सीरध्वज सबहिं बैसाई हे॥
मोतियन चौक चारि कलस सजाई हे।
चारिहुँ बहिनि सन सविधि पुजाई हे॥
तागपाट ढोलना कलश परसाई हे।
दुलहिनि कर दिय बर के बर का भाई हे॥

सारी जरतारी शोभा कहे न सिराई हे।
गोटा-पट्टा मनोरी अँचरी चमचमाई हे।।
मगिन सिंधोरा चारि सिन्दुर भराई हे।
नथिया बुलाक बेसरि बन्दी बेंदा लाई हे।।
हँसुली हुमेल हैकल नगन जड़ाई है।
चम्पाकली देखि आँखि आवे चौंधाइ हे।।
मणिमाल मौरी माँगटीका मनभाई हे।
कर्नफूल कंठा कंकण कमर कसाई हे।।
बाजू बाँक जौसन बहूटा बिछुआई हे।
कड़ा छाड़ा नूपुर सुघंटि सुघटाई हे।।
चन्द्रिका मुन्द्रिका झलाझल झलकाई हे।
साँख-सोहगौली मणिसन सूत माई हे।।
बाजे एकबारहीं सहस सहनाई हे।
झाँझ संख तुरही नगारा घहराई हे।।
दही पान टीका दै सबहिं अछताई हे।
जै-जै कहि सुरन सुमन बरसाई हे।।
'मोद' गाय गाय गारी हँसहिं ठठाई हे।
सियाजू प्रसादे सब परानन्द पाई हे।।

।। अन्दर परिछन ।। (१०४)

रानी ऐ रामजी अएलनि पहुनमा, किछु आदरो करिऔन ना। सादर सविधि सँवारि कै प्रेमासन धरिऔन ना। शुचि जल पगतल धोय के, अंचलपद पोछिऔन ना। ललकि-ललकि मुख जोहि कै, राइलौन निहुछिऔन ना।। मेवा मधुर मँगाय कै, अतिहित अरपीऔन ना।। पुनि परम-मिष्ट स्वादिष्ट विमल, कमला जल दिऔन ना। नख-सिख भूषण साजिकै, आँखि काजर लगबिऔन ना। भाल तिलक भरपूरकै, मुख पान पबबिऔन ना। जानि पुत्र निजप्रेम सौं, परिछन कए लिऔन ना। पुलकित 'मोद' विनोद सौ, आशिष दय दिऔन ना।।

॥ अन्दर परिछन ॥ (१०५)

आनन्द-आनन्द आजु शुभे हो।
पूरण भय मनकाजु शुभे हो॥
देखु दुलह रघुनन्द शुभे हो।
सबहिन को सुखकन्द शुभे हो॥
रसिक जनन कहँ प्राण शुभे हो।
सुखमा शीलनिधान शुभे हो॥
दुर्वाक्षत न्योछारु शुभे हो।
दृष्टि सुधारि निहारु शुभे हो॥
दधि केसर दिअ भाल शुभे हो।
सुख लूटिय अलिमाल शुभे हो॥
नील दिठोना लगाउ शुभे हो।
राई लवण न्योछाउ शुभे हो॥
अंजन आँजिय आँखि शुभे हो।
चितवनि लिअ हिय राखि शुभे हो॥
बीड़ा सरस पवाउ शुभे हो।
अतर सु घ्राण कराउ शुभे हो॥
सिलवन सेदिय गाल शुभे हो।
लखि-लखि होहु निहाल शुभे हो॥
धन्य सिया सुखधाम शुभे हो।
धन्य ई मिथिलागाम शुभे हो॥
जिन प्रसाद हम वाम शुभे हो।
पाय धरहिं घनश्याम शुभे हो॥
लए चलु आँगन माँहि शुभे हो।
चारो सुघर वर काँहि शुभे हो॥
'मोद' छकी चली संग शुभे हो।
उमगति पुलकित अंग शुभे हो॥

।। अन्दर प्रवेश ।। (१०६)

रघुवर धीरे-धीरे चलिये, लली की गलिया।
लखु खिलि रहीं कामिनी, कुमुद कलिया।।
मुखचन्द की चकोरिका, चखनि अलिया।
छवि छाकने दे छीने क्यों, छएल छलिया।।
नोखे नयननि नुकीले, सुधिबुधि दलिया।
फल पाइहौ किये का लखि सिय ललिया।।
मन्द-मन्द हँसि हेरैं गुनि भाव भलिया।
'मोद' तनमन वारैं होय बलि बलिया।।

।। मंडप समीप चलवाक ।। (१०७)

रघुवंशी रसिया रसहिं रसे। चलिये मंडप सुख-रस सरसे।। धरत चरण पाँवड़े करिवर से। क्या जननी जनमाय करि से।। लालन सुनि चले डेग नम्हर से। जाय मनहुँ बाजीबर से।। चारों कुमर भए ठाढ़ अटर से। जनु गर लाय भय गिरिबर से।। मोद हारि हँसि गवने ठहर से। मुखनि रूमाल दिये कर से।।

।। अठोंगर ।। (१०८)

चितचोरवा आजु बन्हौलनि ए। सब सानगुमान गमौलनि ए।। ई चितचोरवा के सिर मणिमौरवा। छोरवा छवि छहरौलनि ए, चि०।। ई चितचोरवा के चोखी दृग कोरवा। पार करेजवा कएलनि ए, चि०।। ई चितचोरवा के लाली-लाली ठोरवा। मनमोरवा भोरबौलनि ए, चि०।। चोरवा के आठो अंग बान्हु कसि डोरबा। ऊधम अथोरवा मचौलनि ए, चि०।। सोने के ऊखरवा मणिन के मुसरवा। आठे चोटे चउरवा बनौलनि ए, चि०।। सेहे रे चउरवा बन्हाय शुभ करवा। सिय प्यारि वरवा कहौलनि ए, चि०।। चोरवा के भाग्य पर 'मोद' बलिहरवा। शुभ अठौंगरवा गाओलनि ए, चि०।।

॥ मण्डप परिक्रमा ॥ (१०९)

सुख लीजै सुख लेबैया, सुखसार आप आ गये।
मिथिलेश आँगने में ह्वै चार, आप आ गये॥
चारों के गर में चादर, लक्ष्मीनिधि धय सादर।
सत फेर फिराते ही, सर्वत्र साफ छा गये॥
जिसका है सब पसारा जो सारहुँ को सारा।
सो प्रेमवश विचारा, कर सार के बँधा गये॥
अलियाँ उमंगि गावैं-- आगे रानी रंग गिरावैं।
सुर सुमन-वृष्टि लावैं--मनभाइ 'मोद' पा गये॥

॥ कन्यादान ॥ (११०)

कन्यादानगान हित स्वासिन जूटेऊ। उमग्यो उर आनन्द आंगि बन्द टूटेऊ॥ एक ओर अवधेश सहित मुनिगन लसैं। एकटक दर्शक वृन्द छाकि रहे छविरसैं॥ जनक धोय दम्पति पद पूजन कीन्हेऊ। भूषण-वसन विविधि विधि सबहिन दीन्हेऊ॥ कनकथार महँ रंजित अक्षत-सुमणि धै। डारेउ बारि सुनयना शुभ गठजोरि कै। सिय करकंज कूश गहि तन रोमांच ह्वै। कह्यो लेहु सेविका नेह-जल नयन छ्वै॥ होतहिं पाणीग्रहण 'मोद' जय छायऊ। एहि विधि तीनहुँ सुता देइ सुख पायऊ॥

॥ गोत्राध्याय ॥
॥ वरपक्षक ॥ (१११)

मानधाता धीर, भये भक्त अम्बरीष, मुचकुन्द देवरक्षि, स्वर्ण नहुष बर्षाये हैं। पृथु पृथ्वी दूहे, हरिचन्द्र, रोहिताश्व, दानी, उत्तम दिलीप, सगर सागर खोदाये हैं॥ भगीरथ लाय गंग महापार कीने भंग, रघु के अपार यश लोक तिहुँ गाये हैं। अति उपकारी अज, ताके नृपदशरथ भए जाके राम आदि रमुक्रीड़ा 'मोद' छाये हैं॥

॥ कन्यापक्ष ॥ (११२)

निमि हेमखानि खोले, मिथि मिथिला बसाये, जनक उधारे पापी, दानी उदावशु भए। नन्दीबर्धन, सुकेतु, देवरात, वृहद्रथ, महावीर धृष्टकेतु शम्भु-सेवा अति ठए॥ हरयश्व, मरु, कृतिरथ, देवमीढ़, महिधृक, त्यों सुकृत, महारोम सुयश छए॥ हृस्वरोम गुणगण, धवल, सुकृतचन्द, ताके सीरध्वज 'मोद' यश जाके नित नए॥

॥ वरप्रतिज्ञा ॥ (११३)

प्यारी प्रण करता हूँ मैं, पलहूँ नहि तुझे बिसारूँगा। ग्रहण किया करकमल तेरा, तो कभी इसे ना छाड़ूँगा॥ तुमको तजि तिहुँलोक तियनपै कभी कुदृष्टि न डारूँगा। चाहे ध्रुव टर जाय भले, पर मैं निज प्रण नहिं टारूँगा॥ असन-वसन आसन-भूषण का भार मैं निजपर राखूँगा। सदा तुम्हारी रुख रखने की, अभिलाषा अभिलाखूँगा॥ निज सुधर्म से विचलोगी, तब ही मैहूँ मन माखूँगा। ना तो चखनि तिहारी चितवनि चारु अमी को चाखूँगा॥

॥ कन्याप्रतिज्ञा ॥ (११४)

प्रण करती हूँ आजहिं से, आज्ञा को कभी न टारूँगी। रुचि अनुकूल सदा सेवा करि, शौकत-सान बिसारूँगी॥ दुख में दुखी सुखी रहि सुख में, नयन पलक अनुहारूँगी। नाथ युगल पदकंज मंजु को कबहूँ छिनक न छाड़ूँगी॥

॥ पुनः ॥ (११५)

नाथ अनादर करैं कितौ पै, मैं आदरयुत जोऊँगी। चाहे कोटि कठोर कहैं पै, मैं कहि मधुर भिजोऊँगी॥ गुणकारी स्वादिष्ट खिलाने में आलस को खोऊँगी। जागूँगी पहले प्रभु से पर प्रथम सुलाकर सोऊँगी॥

(११६)

प्रभु आज्ञा विन और धर्म को, अधर्म ही करि जानूँगी। बड़े को पिता अनुज छोटे को, सम बय बन्धु प्रमानूँगी। सासु-ससुर औ' गृह-कुटुम्बसों नम्र भाव उर आनूँगी। चाहे वे मोहि ना मानैं मैं तन-मन-धन से मानूँगी॥

(११७)

याद रहे पर प्राणनाथ; निज अनहित करने ना दूँगी। धर्म से विचलित होते लखि, पग पीछे धरने ना दूँगी। कर्म-वीरता सत्पथ से त्यों कभी मैं टरने ना दूँगी। निज सतीत्व के बल से बल्लभ किसी से डरने ना दूँगी॥

॥ सिन्दूरदान ॥ (११८)

शुभ सियसिर सिन्दुर निहारु ए सखी।
छवि पै रति कोटि न्योछारु ए सखी॥
अति प्रीति मंगल गीत गावति दुलह-दुलहिन जोरि गँठ।
लै आइ मिली सुहागिनी सब सप्तवेदी के निकट॥
लै पाणि-पंकज अरुण रज वर लाजवस नहिं धरत झट।
रखबाइ लखि शोभा ललित अलिअन बनीं जनु चित्रपट॥
सुर करहिं प्रसून पवारु ए सखी। शुभ०॥
करि लोक वेद ब्योहारु ए सखी।
धरबाई सिन्दुर सिर चारु ए सखी॥
लखि चारु दम्पति मातु सब अति प्रेमपगि प्रभुदित भये।
उमग्यो महा आनन्द टूट्यो बन्द कंचुकि कसि गये॥
श्रीशतानन्द आदि द्विजवर शान्ति मन्त्र पढ़न लये।
जय-जयति, जय छाये सबै एकबार दुर्वाक्षत दिये॥
सुखमा नख सिख हिय धारु ए सखी।
'मोद' भामरि करावन विचारु ए सखी॥

॥ सप्तभामारि ॥

॥ दोहा ॥ (११९)

दुलहिनि आगे, वारत्रय,, चारिबार नृपनन्द।
चौथे में गठबंध कए, लूटैं अलि आनन्द॥

॥ पद ॥ (१२०)

चारो दुलहा देहिं भमरिआ ए।
संग सोहतिं दुलही नागरिआ ए॥
श्यामगोरी गौरश्यामा, चारो जोड़ा-जोड़िआ,
हरे-हरे होत चहुँ ओरिआ ए॥ चारो दु०॥
सिरनि पै सोहैं मणिन मौर मौरिया।
दामिनि की छबि छीनै, छोरिआ ए॥
रतनारी कजरारी अजब अँखरिआ।
लखितहिं करैं बेखबरिआ ए॥
अंचल चदरिआ में परी हैं गठरिया।
बाँधे हैं कि बूटी बसकरिआ ए॥
नवरंग मणिन की सुपली सोहरिआ।
लाबा छिरिआवैं भरि-भरिआ ए॥
उमगि-उमगि गावैं अलिगन गरिआ।
सुख सरसत बेसुमरिआ ए॥
जयति-जयति जय-जय होत सोरिआ।
सुर करैं सुमन की झरिआ ए॥
परैं मणि खम्भनि में दम्पति-छहरिआ।
जागैं ज्योति जगर-मगरिया ए॥
मानो रतिपति जानि पितु-महतरिया।
प्रगटि-दुरत बेरि-बेरिया ऐ॥
फूली न समाति लखि 'मोदिया' किंकरिआ।
लली-लाल लखनि लजोरिआ ए॥

॥ पद नहछू श्रीजूकी ॥ (१२१)

नहछू करत लखि नाउनी नवेली, सुरतिय तरसैं लगलनि निरखि नाउनि के सुभाग। सुर-तिय०। सियपद कंज चूमि आनन्द झूमि, हिय अति हर्षै लगलनि उमगि-उमगि अनुराग॥ लखि नाउ छीलनि सु ललित नहरनी सुरगन वर्षै लगलनि सुरतरु सुमन सुहाग॥ सरस सनेह काछि रंगिरंग रंगलनि, पदतल परसय लगलनि सिय मे निज पियलाग॥ लाड़िली सुरुख लखि मगन नउनियाँ सबकें दरसय लगलनि रोम रोम 'मोद' प्रेम पाग॥

॥ वरक नहछू ॥ (१२२)

हे यो पाहुन कृपा कएक चरण पंकज कनैक दीय।
ललित नख छीलि दुर्लभ लाभ शुभ लोचन के हम लीय॥
हमर महतीनि के कन्या परम धन्या सिया छेली।
जनिक परसादसँ अपनहुँ जुड़ा रहलौं सबहि जीय॥
धनुष के टूक कैलहुँ बात से किछु मनमें जुनि राखी।
अनायासहि ऐली उठबैत बालहिं पनसँ श्रीसीय॥
नृपत्ति छथि गोर अपने श्याम से चरचा शहर भरि मैं।
करैछथि सब कहू कोना, कहैत सकुचाइत अछि जीय॥
नहछुके नेग में सरकार एतबै दिअ दयालू है।
नाऊ संग में बसथि शान्ती ओ हम भरि 'मोद' संग पीय॥

॥ नाउनिक प्रार्थना ॥ (१२३)

एहन स्वरूप कहाँ पौलौं अलबेला, यो अवधेसी छयला, हेरिते हरैए हमर प्राण॥ यो अवधे०। काजर कएल आँखि जुलुमें करैए, यो०अ०॥ मोरै ए मदन मनमान॥ यो०अ०॥ जुलुफक फाँस मैं फसौलौं पुरवासी, यो०अ०॥ गाँसी मारि मन्द मुसुकान यो० अ०॥ स्वामिनी सिया के संग मिथिलैं निवसिऔ, यो०अ०॥ मोद उर येह अरमान यो० अ०॥

॥ लहकौरी ॥ (१२४)

साजनि कैसि सुहावनि छबिरस छावनी।
चारों दम्पति कहँ कीजिए खीर खवावनी॥
चरि थार महँ चारु सु पायसि कय।
लय आई चपलासि चपल सखि हरषि कय॥
झुण्ड-झुण्ड तेहि औसर आईं सुनारियाँ।
गौरी रमा ब्रह्मानि-सी सब सुकुमारियाँ॥
प्यारि पिया कर पाइहैं, प्रिय करसे पिया॥
अंगहिं रहिहैं दोय एक होइहैं हिया।
लाड़िलि लय रसिया कर पियहिं पवाइये।
प्यारि पवाइय लाल विलम्ब न लाइये॥
यहि पायस हित पायन पाय दुल्हेटजू।
अब जागे तब भाग खाहु भरिपेट जू॥
दम्पति सकुचि सिहरि गये सखि बरबस करी।
करवाई लहकौर 'मोद' मण्डप भरी॥

॥ मण्डप झाँकी ॥ (१२५)

चारों दुलह चारों दुलहिनि बैठे मंडप तर हे।
जगमग-जगमग ज्योति निरेखो नयन भर हे॥
मौरिआकी झालरि झलकत मुखछवि छलकत हे।
सकुचि परस्पर चितवत हुलसत पुलकत हे॥
बड़का दुलह घनश्याम, दुलहि जनु दामिनि हे।
मझिला दुलह ज्यों तमाल, कनकलता कामिनि हे॥
सँझिला दुलह तन गौर सु मनहु निशाकर हे।
दुलहिनि साँवरि रंग अधिक सुखमाभर हे॥
अति कोमल लघु दुलह, दुलहि नहिं जाति कहि हे।
कनक कदलि ढिग स्याम वेलि जनु फबि रहि हे॥

नील-पीत रंग झिलिमिलि और रंग सरसत हे।
झलकत लगाति-सगाति हरित रंग दरसत हे॥
धन्य भाग्य रघुनन्दन पायउ सियतिय हे।
धन्य किसोरि के भाग्य भयउ रघुवर पिय हे॥
हम सब धन्य-धन्यतर वर सुख लूटेउ हे।
प्राणनाथ के साथ नात भल जूटेउ हे॥
कोउ छबिलखि तृण तोरति राइ लौन वारति हे।
कोउ सखि दम्पति मूरति हिय बिच धारति हे॥
निरखि सुमन सुर बरसत हरसत तरसत हे।
'मोदलता' तनमन वारि दम्पति पद-परसत हे॥

॥ झाँकी ॥ (१२६)

कैसी बनी सुरतिआ आ, आ, देखो। रसिकन की, सम्पति चहु दम्पति, की छाई, हरित जोतिआ, आ, आ देखो॥ सिय सौभाग्य रँगे सब इक रंग, परसुख सरसतिआ, आ, आ, देखो॥ 'मोदलता' वैदेहि दुलह लखि भूलि सुगति मतिआ, आ, आ, देखो॥

॥ झाँकी ॥ (१२७)

झाँकी झाँकि लिअ, सियबल्लभ के वर बाँकी झाँ॥ नवरंग मणिक सुमौर हुनक सिर, मौरि हिनक छवि छाकी, झाँ०॥ केसर खौर उठी जगमग जगैं, इत सिन्दूर सुखमा की, झाँ०॥ अंजन अंजित नयन दम्पति के, सम्पति सन्त हिया की, झाँ०॥ लय लिअ लोचन लाभ ललकि कए, 'मोद' परारस छाकी, झाँ०॥

॥ सलोना ॥ (१२८)

कैसा साँवला सलोना है सलोनी सिय की। सिय सौगुणी बढ़ाई शोभा श्याम पिय की॥ क्या छवि शृंगार दोऊ, प्रेमिन को प्यार

दोऊ, नयननि को तारदोऊ, जीवनअधार दोऊ। क्या फल हम नारि के सुकृति किये की।।१।। लखि-लखि के गात हेऽली हिय हुलसात हेऽली, परानन्द छात हेऽली, अंगना अमात हेऽली। मनसा हुलै जाति हैं अनंगतिय की।।२।। चितवनि चितात हेऽली, चित-मन हरि जात हेऽली। चखनि चुभात हेऽली, हिअरा लुभात हेऽली। 'मोद' जनात ये जीवन जिय की।।३।।

(१२९)

कैसा बना अलबेला लखोरी, सखी कै०। सिर मणिमौर कलंगी झुकेला, छोरन छवि छहरेला, जुलुफ सिटेला, भृकुटि मटकेला, चितबत चखनि चुभेला ।।ल०।। केसर खौर भाल झलकेला, अलक कलित झुलकेला, नासामणि मंजुल हुलकेला, लखितहिं मन ललकेला।।ल०।। अधर मृदुल मुसुकनि मधुरेला, मिथिला सिथिल करेला सियाजु के नाते पाहुन भेला, 'मोद' सुमंगन नचेला।। ल०।।

।। मोदक मनोरथ ।। (१३०)

प्राण प्रीतमयुत सियाजू, हम अहाँ के देखैत रही। करि रुचिर सेवा सियाजू, हम अहाँ के देखैत रही।। मंजु मण्डप मध्य मणिमय, मौर माथ सुपीय के। मौरि सिर सिन्दूर शोभित, हम अहाँ के देखैत रहीं।।१।। फाँक सन-सन आँखि में कमनीय काजर कन्त के। दिव्य अंजनि दृगनि अंजित हम अहाँ के दे०।।२।। सुमुख सुखमासींव, पान ललाइ मधु विहसनि हुनक। मन्द हँसनि मयूष वर्षनि, हम०।।३।। अंग-अंग महँ रंग-रंग विवाह भूषण नाह के। त्यों सजित सर्वांग-सुन्दरि हम०।।४।। भामिनी-सौन्दर्य गुणनिधि देखि प्रेम विवस पिया। 'मोद' मृदु हेरनि हुनक दिसि, हम०।।५।।

॥ झाँकी ॥ (१३१)

सखीरी झाँकी सीय पियजू कि बाँकि॥ ब्याह विभूषण अंग-अंग रंग-रंग लखितहिं दृग नाहिं ललकैं काकि, झाँ०॥ प्रेमि प्रेम करैं परिपूरण, 'मोद' मंद हँसि, बंक ताकि, झाँ०॥

॥ झाँकी ॥ (१३२)

सिय रघुवर ब्याह देखन आई। गृह-गृह प्रति अति आनन्द छाई, दे०सि०॥ ब्रह्म महेन्द्र सुरेन्द्र तियान, सुनति धाई। सु उमंगे प्रेम रंगे सखि संगे गाई सि०॥ चारों कुमर ढिग चारो कुमारि छवि, समताई। लखि थकि रही जकी रही सुनिकाई, सि०॥ श्याम, श्यामा, गोरा, गोरी, चोरो जोड़ा-जोड़ी की हरित झाँई। दृग चुभे मन लुभे हिय छोभदाई, सि०। दीठि मूठि जादू टोना टारने, दिठौना दिये सियमाई। सब झाँकैं झाँकी बाँकी 'मोद' मनभाई, सि०॥

॥ झाँकी ॥ (१३३)

झाँकी लीजै अनुराग से झाँकी चारों दम्पतिकी। लोचन सफल करो मेरी सजनी, भयो संयोग सुभाग से, भक्तन की सम्पति की॥ हम सब कृतकृत्य भइ सजनी, जनकलड़ैती की लाग से, पाये पद परमपति की॥ हियमन्दिर पधराओ मेरी सजनी, रंग भरे भरी सुहाग से 'मोद' मूरति मम पति की॥

॥ झाँकी ॥ (१३४)

चारो जोड़िन की झाँकी को झाँको भली। नयनन छवि रस छाको भली॥ चरण-कमलनख ललित महावर। ललकि-ललकि तेहि ताको भली॥ कड़ा छड़ा पाजेब जड़ित नग। औंठन सुठि सुखमा को भली॥ कुसुमी धोती, सारि सुचि चादर। चोरत चित्तन काको भली। हिय में भूषण जड़ित जौहर की। जगमग ज्योति जाको भली॥ कर

पहुँची कमनीय सुकंकण। मुंदरि छल्ला छटाको भली।। श्याम गौर छवि रूप इकठ किधौं। गठजोड़ी बिज्जु घटा को भली। अरुण अधर पर बुलकनि बेसरि झुलुकि बढ़ावै अदाको भली।। कुण्डल अलक मौर मौरी पर। कोटिचन्द्र रवि थाको भली।। मन्द मुसुकि मुख पान चबावैं। नेकु नयन करि बाँको भली 'मोद' हरत मन सुधि अपनापन। आपन करत सभी को भली।।

॥ मंडप सँ कोहबर प्रस्थान ॥

॥ मार्ग में ॥ (१३५)

नयन अहाँक किए एहन पाहुन, नयन अहाँक किए एहन यो।। चैन चित्त चट चूर करइ छथि, आगाँ की कहु जेहन यो। लोक-लाज कुल-कानि अपनपौ लै लइछथि ई फेहन यो।। रोम-रोम मादक भरि दइछथि, जुड़ितहिं मद भरि मेहन यो।। कए दइछथि किछु आनक आने, ई छल छन्दक गेहन यो।। सराबोर कए विवस करै छथि सुधि ने रखैछथि देहन यो।। तेहन तिनका देखि परइछैन भाव जिनक छैन जेहन यो।। कमल कुरंग मीन खंजन के, कहिऔन कोना कि तेहन यो।। 'मोद' मदन माधुरी सदन की मैलनि सीय सनेहन यो।।

॥ द्वार छेकाई ॥ (१३६)

द्वार की छेकाई नेग लूँगी मनभाई, हाँ तब जाने दूँगी, कोहबर सदन सुहाई, हाँ तब जाने दूँगी।। सकुच विहाय दीजे, दीनी हैं जो माई, हाँ०।। चाहे सोइ मानिये, जो कहूँ समुझाई, हाँ तब०।। कीजे मेरे भैया से निज भगिनी की सगाई, हाँ तब०।। 'मोद' नहीं तो लीजे सिय शरणाई, हाँ तब जाने दूँगी।।

कोउ कहि बिनु बोले आवत नहिं सकुचाय जू।
बातिहि बात मिलावत काहे लजाय जू।।
लाल कह्यो हँसि भौंरहिं कोन बोलावहीं।
शोभा करन प्रसून आप चलि आवहीं।।
दीपकला भल जानहिं 'मोद' सुवाम हैं।
मनसों मनहिं मिलावन मेरो काम हैं।।

।। अवध की स्त्री ।। (१४०)

मैं अभी अवध से आपकी सरकार आई हूँ। मुदभरे रसीले टट के ही सन्देश लाई हूँ।। छिपके अध विमुख कमाते हैं, काहू से नाहिं जनाते हैं, वह जभी अवध ले जाते हैं, उड़ जाते हैं, उड़ जाते हैं, फूली न समाई हूँ। मैं अभी०।। जो भेद-मर्म में अटते हैं, विष को अमृत-से चटते हैं, जब सन्तसंग में डटते हैं, सब कटते हैं, सब कटते हैं, लखि देति बधाई हूँ।। मैं अ०।। तब कुशल लेन मैं आई हूँ, दुलहिन मुख-लखि सरसाई हूँ, सुषमा पै बलि-बलि जाई हूँ, हुलसाई हूँ, हुलसाई हूँ, 'मोद' रहौं सदाई हूँ।

।। कोहवर हास्य ।। (१४१)

श्रीकोहबरबा घरबा राजैं बरबा चार गुइयाँ।
हँसनि हँसावन की हो रही बहार गुइयाँ।।
कमल कली-सी चहुँदिसि नवनार गुइयाँ।
बीच में विराजैं अलवेले चारो यार गुइयाँ।
चमर चलावती छवीली छवि वार गुइयाँ।।
बिरिआ पबाबती सुगन्ध बहु डार गुइयाँ।
झूमि-झूमि झाँकैं सब झाँकी मजेदार गुइयाँ।।

हरषत सुखा सरसत बेसुमार गुइयाँ।
बोली सिद्धि प्यारी सुनो अवध व्योहार गुइयाँ।
होत रघुवंश में पुरुषों गर्भधार गुइयाँ।।
रहे 'युवनाश्व' एक राजा गुणागार गुइयाँ।
जाय 'मानधाता' सुनि परेउ हहार गुइयाँ।।
'सुद्युम्न' भये 'इला' कुमरि उदार गुइयाँ।।
कुलटा 'पुरूरवा' जनाइ करि जार गुइयाँ।
तीस दिन तिया रहैं पुरुष तीसबार गुइयाँ।।
सुनते हँसेउ सब दै-दै ठहकार गुइयाँ।।
'सुमति' सयानी इक भई छिपागदार गुइयाँ।
ब्यानी एक बारहीं पें साठ हजार गुइयाँ।।
'शान्ता' छिनारी योग धँटे ना धतार गुइयाँ।
तपसी के गर बाँधे जानत संसार गुइयाँ।।
अवध की तिया सब अतिहि खेलार गुइयाँ।
पायस से पैदा किये 'मोद' प्राणाधार गुइयाँ।।
सकल छबीली छवि छाकि भई न्योछार गुइयाँ।।
परानन्द फूली भूली अपनी पगार गुइयाँ।।

।। पाटी घराई ।। (१४२)

ऐ अलबेलो लाल, कौन सिखायो यह चाल। छोरु-छोरु प्यारे पाटी, दीजै सवारन चोटी, सिय प्यारी भाल, जेहि लखि चन्दहुँ के हिय साल।। ऐ०।। मनमाना नेग जौंलो पैहौं न तजिहौं तौंलो मिथिलानी बाल, हौं पैं सखुन हिय पाल।। ऐ०।। सुनि बैन सुखराशी, परेउ ठहाके हाँसी, ह्वै निहाल, गावन लागी अलिन उताल।। ऐ०।। सासु मनाऊहारि, सालिन मनाइ हारे, हठीले चाल, लखि सरहोज मनाई चूमि गाल।। ऐ०।। लखि हठ धार 'मोद' कीनी स्वीकार, श्री दसस्यन्दन लाल, मन्द मुसुकि किये कृपाल।। ऐ०।।

॥ भेंड़ा नथाई ॥ (१४३)

भेंड़ा नाथो लला तो बली मानैं।
हँसि कहे मख राखे खल मार।
था तरने का तेहि संसकार।
जो कहो तारा मुनि की नार।
आसिष दियेथे तेहि भरतार।
यह भेद भला हम सब जानैं॥
शंकर को धनु दीन्हें तोर।
सोतो पाके सिय की जोर।
वह तो प्रति दिन सन्ध्या-भोर।
करती थीं शिवशिवा निहोर।
रघुलाल न गौरव मन आनैं॥
सुनि हँसि दीन्हें चहु रघुचन्द।
कीन्हें डारि नाक में फन्द।
लखि-लखि सखियाँ भई आनन्द।
कहि कहु जय गड़ेरि फरजन्द।
'मोद' लखहिं छटा दृगपट तानैं॥

॥ पहिल सखी ॥ (१४४)

कहू पैदल एतेक दूर अयलौं कोना। जेहने बेदर्द छथि, आहाँक माय-बाप, तेहने बदर्द संग कयलौं कोना॥ कमलो सँ कोटि गुणा, कोमल ई हाथ सँ, ताड़का सुबाहु नसौलों कोना॥ गाधिनन्दन जी के, यज्ञपूरन कय पायर सँ पाथर उड़ौलौं कोना॥ की बुझि मारीच के, प्राण नै हरलौं, सिन्धु के पार खसौलौं कोना।वीर सबै बनिता बनि बैसलनि, शिवजी के चाँप चढ़ौलौं कोना॥ फरसा धरैया जी, अयला फनकिक, तिनको छने में छकौलौं कोना॥ जनक सुता कहँ प्राणिग्रहण कय, जनक जमाय कहौलौं कोना। 'मोदलता' मिथिलापुर वासिन, मुसुकन फाँसि फँसौलौं कोना॥

॥ दोसर सखी ॥ (१४५)

केहन सुकृति अहाँ कैलहुँ, यो पाहुन केहन सुकृति अहाँ कैलहुँ। श्रीसिय सुन्दरि पैलहुँ, यो पा०॥ केहन सुकृति अहाँ कैलहुँ॥ की अहाँ परम उग्र तप तपलहुँ, की बहु यज्ञ जगैलहुँ। की अहाँ सकल सुतीर्थ नहैलहुँ, युग-युग जलहिं समैलहुँ॥ यो० पा०॥ काशी विश्वनाथ पद सेवलहुँ, गौरि गणप गोहरैलहुँ। की दिनकर कहँ हाथ उठैलहुँ, की श्रीरंग मनैलहुँ॥ यो० पा०। श्रीनृप जनक जमाय कहैलहुँ, अलभित लाभ लहैलहुँ। दर्शक सबके मन अपनैलहुँ, मिथिला 'मोद' मचैलहुँ ॥ यो० पा०॥

॥ तेसर सखी ॥ (१४६)

ई स्वभाव कहँ पैलहुँ पाहुन, ई स्वभाव कहँ पैलहुँ। मिथिला सिथिल बनैलहुँ पाहुन॥ ई स्व०॥ वेद अजात पुरुष जतवै छथि, किये नृप जात कहैलहुँ। निराकार श्रुति कथिक रूप अछि, किय सकार दरसैलहुँ॥१॥ नाम निरंजन अति प्रसिद्ध अछि, अंजन किय लगवैलहुँ। छिअहुँ अगोचर जगत जनैऐ, इत गलि-गलि बौअयलहुँ॥२॥ गाधि नन्दनजी के पद-विपादिका, कीट बचाय चपैलहुँ। गुरु विमुखी गुनि, पित्र त्रिशंकुहि, उलटा टांग टंगैलहुँ॥३॥ भवधनु भंजि सुभुजक भव्यता, निज भरि भुवन जगैलहुँ। भृगुनन्दन सौं करि सहिष्णुता, कुलहिं कलंक लगैलहुँ॥४॥ निज महत्वता दुर्लभता तजि, निमिपुर जनहिं जुड़ैलहुँ। मैथिलि जन्म प्रसादे मिथिला 'मोद' हिं मोद मचैलहुँ॥५॥

॥ चारिम सखी ॥ (१४७)

श्यामताइ की केलौं, पाहुन, श्यामताइ की कैलौं। की कमला स्नानक फल की, गारिक डरे डेरैलौं॥ पा०॥ की तिय मख धनु कलित कौमुदिहिं, सराबोर भयगेलौं। की सिय शशिमुख कह चकोर ह्वै, चारु चन्द्रिका पैलौं॥२॥ की सिधि जूके कृपाकोर सौं, किछु सिय सदृश भेलौं। 'मोद' की मैथिलि अंग रंग पर, अपन रंग न्योछैलौं॥३॥

॥ पाँचम सखी ॥ (१४८)

स्वामिनि सियजुके शरण प्रसादे, हम सब अहाँके पौलौं यो लाल। अहाँक भाग्य भल भेल पुनीता, सीताकन्त कहौलौं यो लाल॥१॥ लाड़िलि नित गणपति गोहरैलनि, गिरि गिरीश मनैलनि यो लाल। अनुपम नेम प्रेम निबहैलनि, लखबक हेतु ललचैलनि यो लाल॥२॥ मातु पितहिं परमानन्द देलनि, अहाँके पूरण कैलनि यो लाल॥ परिजन पुरजन प्रजा पूज्य जन, सबके हीय जुरैलनि, यो लाल॥३॥ सेवा-भाव मुख्य दरसौलनि, अलिन 'मोद' सरसैलनि यो लाल। मैथिलि प्रगट होय यहि मिथिला, उज्ज्वल रस बरसैलनि यो लाल॥४॥

॥ छठम सखी ॥ (१४९)

झल झल झल झल झलकैत अछि, सरकार अहाँक छवि छलकैत अछि॥१॥ अमल कमल सम कोमल पगतल, लखन हेतु के नै ललकैत अछि॥२॥ पीताम्बर कटि जड़ित सुजामा, मणिमाला हिय हलकैत अछि॥३॥ मुसुकनि मद पी-पी नासामणि, ह्वै उन्मत तल-मलकैत अछि॥३॥ ललित ललाड़ अनोखी अँखियनि, फूलि-फैलि फल-फलकैत अछि॥४॥ सरल स्वभाव शील सुनि गुनि हिय, कुलिशहुँ के गल गलकैत अछि॥५॥ नख सिख बननि विलोकि 'मोद' दृग, प्रेम वारि ढल ढलकैत अछि॥६॥

॥ सातम सखी ॥ (१५०)

सुनिय श्रीरसिक राय रघुनन्दन आनन्द कन्द सलोना मेरे। सिथिल सबै मिथिलापुर वासिन ललि नखसिख अंग टोना भरे॥१॥ जुलमी नयन नवल वर नौशय, सबके नयननि खैंचि धरे। तव बिनु अब न चयन काहूके, पद-पिंजर मनपक्षि परे॥२॥ प्रेमिन सम्पति नित नव दम्पति, सुखविलसिय भुज-अंश अरे। लाल-लली निज हरिआली में, 'मोद' हिं राखिय हरे हरे॥३॥

॥ अष्टम सखी ॥ (१५१)

ऐ सीया-ऐ सीया-ऐ सीया-ऐ सीया॥
अहाँ पौलहुँ परम अनूप पिया॥
पदपंकज-रेणु पुनीत करन।
चरणामृत पापक पुञ्ज हरण।
ध्यावैते करैछथि शुद्ध हीया॥१॥
सुनलौं छैन्ह नाम महात्म्य महा।
अपनो सक अन्त नै जाइछैन कहा।
छथि सोहन मोहन सर्व जीया॥२॥
अभिलासिनि, गाँव में आबि गेला।
सब भामिक के मन भावि गेला।
सौभाग्ये पैला मिथिलेश धिया॥३॥
आब ई मिथिले में सदैव रहथु।
श्रीसीय कहथु श्रीसीय कहथु।
जे लतिका 'मोद' क स्वामिनिया॥४॥

॥ पहेली ॥

॥ सोरठा ॥ (१५२)

जुरि-जुरि मंजरि माल, ललकि-ललकि लखने लगीं।
बोलीं सबैं उताल, कहिये लाल पहेलियाँ॥
एक टाँग की नारि, कान चारि सिर एक है।
पाहुन कहिंय विचारि, सबको प्यारी कौन है॥
उ० लौंग।

कहु यो पाहुन अकथ कहानी।
बिना नरहिं कहाँ नारि बियानी॥
उ० अवध में खीर से।

एकटा बुझब बुझौअलि अहाँ।
पुरुष पुरुष जनमौलनि कहाँ॥
उ० अवध में युवनाश्व।

पाहुन काहु पहिल निहारि।
अभिमान मन मह [illegible] भारि॥

[illegible]

काहुओं पाहुन [illegible] [illegible]।
के छोड़ि अनंत नाम के [illegible]॥

[illegible]

आज न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
मुनिसहि [illegible] [illegible] [illegible]॥

॥ जेवनार ॥ ([illegible])

धन-धन जीवन लियोरी, रघुवर [illegible] [illegible]। [illegible] महानृप दशरथ, चारो सुललित छैल, [illegible], [illegible], [illegible] फन्दो, अँखिया लखि के बहु नेरी, [illegible] [illegible]॥ चरण पखारि बैठाय सुचित [illegible], [illegible] [illegible] है, [illegible] है, तनकारी है, झपनकारी है, [illegible] है, [illegible]॥ जो न बारात पूरी नृप पाये, [illegible] [illegible] को, हो बहिनियाँ को, पितिअइनियाँ को, फुफुअइनियों को, [illegible] उनकी जोवनियाँ को, अजपाय के [illegible]॥ [illegible] नर कुल, सल निवहन बारवारि हो, [illegible] [illegible] हो, उनकाहि दीजै दो चारी हो, [illegible] [illegible] हो, [illegible] राखलि हो लगवारी हो, [illegible]॥ [illegible] बलि-बलि जाहीं, चारो [illegible] है, [illegible] है, पुसुकनियाँ है, अति मोहित '[illegible]' [illegible] है, [illegible]॥

॥ जेवनार ॥ ([illegible])

श्री मिथिलेश सदन आजु सजनी, [illegible] [illegible] [illegible]।
जेवन आय सुमधि अवधपति, [illegible] [illegible]॥

पाहुन कहू पहेलि विचारि।
अगणित नर महँ एकै नारि।।

उ० अवधपुरी।

कहुओ पाहुन एकटा बात।
के छथि अहाँक तात के तात।।

उ० अज।

अज त कहल जाइत अछि खशी।
सुनितहिं परल ठठाकै हँसी।।

।। जेवनार ।। (१५३)

धन-धन जीवन लेखोरी, रघुवर छवि देखो। जेवन आय महानृप दसरथ, चारो सुतलिय संगरे, कि अनंगरे, चहु चन्दरे, मन फन्दरे, अँखिया लखि के भइ दंगरे, आली रूप निरेखो। ध०।।१।। चरण पखारि बैठाय सुपीढ़न, पत्तल मणिन संवारी दै, पै सुहारी दै, तरकारी दै, झसकारी दै, ता ऊपर से रसगारी दै, पकवान अलेखो।।२।। जो न बारात पूरो नृप पाये, काहे न लाज निज जनियाँ को, हाँ बहिनियाँ को, पितिअइनियाँ को, फुफुअइनियाँ को, कोउ हरत न उनकी जोबनियाँ को, अजमाय के पेखो।।३।। तिन सै साठि नारि में नर इक, सत निवहन बरभारी हाँ, कबहूँ नहिं तोहि छुटकारी हाँ, उनकहिं दीजै दो चारी हाँ, होइहौं जग सुयश तिहारी हाँ, जो न राखति हों लगवारी हाँ, सुनि लागो न तेखो।।४।। गारि गाय सखि बलि-बलि जातैं, चारो भैयन की गढ़नियाँ पै, सुमिलनियाँ पै, मुसुकनियाँ पै, अति मोदित 'मोद' तकनियाँ पै, परित्यागि निमेखो।।५।।

।। जेवनार ।। (१५४)

श्री मिथिलेश सदन आजु सजनी, छाई भीर अति भारी जू।
जेवन आय सुसमधि अवधपति, सह समाज सुत चारी जू।।१।।

द्वारहि भेंटि विदेह नेह भरि, लय शुचि कंचन झारी जू।
बरजि रहे बरजो नहिं माने, निज कर चरण पखारी जू॥२॥
बैठाये मणि जड़ित सुपीढ़न, यथाजोग अनुसारी जू।
परसन लग्यो सुआर चतुर वर, व्यञ्जन चारु अपारी जू॥३॥
पंच कवर करि जेंवत हीं सब कहहिं स्वाद बलिहारी जू।
जेंवत जानि परम प्रिय पाहुन, विनती करन लागी नारी जू॥४॥
केहि विधि स्तुति करौं नाथ जू हमसब निपट गँवारी जू।
कीन्हें कृपा दरस निज दीन्हें सकल दोष-दुखहारी जू॥५॥
अंगीकार योग नहिं जद्यपि, अर्पित नेह निहारी जू।
शील सिन्धु स्वीकार कियो निज, करुणा गुण हियधारी जू॥६॥
जेहि सुत भयो पितामह के पितु, सुता सन्त सुखकारी जू।
पुरी जासु पर पुरुष रमावनि, सरी सबै श्रमहारी जू॥७॥
नारी जासु सुर सुख सरसावनि, सारी सुयश उजिआरी जू।
तासु स्वभाव न होय कस न अस, सरस सबहिं कह प्यारी जू॥८॥
सुनि हँसि भोजन करहिं विलम्बित, छन-छन होंहिं पुछारी जू।
चारो सुघर बर सकुचहि मुसुकहिं, जगमग जगहिं उजारी जू॥९॥
तेहि अवसर अलि 'मोद' मगन मन, गाय मंजु गुण गारी जू।
लखि सुविलास लोकपति याचहिं, मिथिलैं जन्म भलारी जू॥१०॥

॥ जेवनार पाहुनक ॥ (१५५)

प्रिय पाहुन रुचि सँ जेमि लिय। छमि भूल चूक गुणि अबुधि तिय॥ अहाँक योग किछु बनल नै व्यञ्जन, से विचारि सकुचैए जिय। भावक भुखल स्वभाव प्रभुक सुनि, पुनि-पुनि अति हुलसैए हिय। जानव तखन कहब अहाँ जखनहिं, अमुक वस्तु कनै आओर दिय। किञ्चित वचन बजैत लजाइ छी, परम कृपालु कहाइ छी किय॥ जनि लजाउ निज कुलाचार पर, सन्त सुखद अति अवध धिय। 'मोद' मुदित मन विनती सुनावहिं, सिरकिन लखि-लखि सीय पिय॥

॥ तथा ॥ (१५६)

पुरुषोत्तम को गारी कैसी, बिनु गारी ज्योंनारी कैसी। सब विधि इनकी अकथ कथा हैं, तीन काल कोउ लहत न थाहैं। पितु को पितु बेटहु को बेटा, बिनु जाने जिव खात चमेटा, सब बातैं अटपट हीं ऐसी, पुरुषोत्तम को गारी कैसी॥१॥ जो बहनोई सोई बापहु, जो ही दादा सो ही आपहु। जनियाँ भई जनक की जाता, एक से एक न्यारी ही बाता। कैसो कहौंकहिं जाति न तैसी, पुरु०॥२॥ जो पितु नारि सोई सुतनारी होय न क्यों सुनि अचरज भारी। सबमें रमैं रमावैं सबको, तिनकी बात बतावैं अब को। 'मोद' सुमुद भरिगावै समैसी॥ पुरु०॥३॥

॥ पुनः ॥ (१५७)

नवयुवकों को यारी चहिये, नवल नौशे को नई गारी चहिये॥ हैं नवयुवकैं शान्ति लेवैआ। नवल नौशे हैं शान्ति देवैआ॥ युवकन नव-नव सारहिं ताके। नवल नौशे हैं सार सदा के॥ युवकन करैं सदा हँसि-हँसि बातें, नवल नौशें क्यों नहिं मुसक्याते॥ भूलि न युवक वृन्द सरमाते, नवल नौशे क्यों पाते लजाते॥ 'मोद' कहैं कछु सियाजूकी नाते। रसिक जनन उर रस सरसाते।

॥ तथा ॥ (१५८)

प्यारे रसिया राजकिशोर, ऐ प्यारे रसिया। जेमिय व्यञ्जन रुचिर हमारे, हेरि कृपा की कोर॥ ऐ०॥ हैं अनूप गुण रूप तिहारे, अचरज भरे अथोर। हौं साँचे कि तो साँची कहिए, प्रश्न के उत्तर मोर॥ ऐ०॥ लोकपती तुमको बतलावैं, चारिहु श्रुति करि शोर। रावरो बहिनि अहैं लोकहिं में तिन पति में क्या निहोर॥ ऐ०॥ जगत पिता तुमको जग जानत, मानत मैं नहिं खोर। पै ताते निज पितहू को पितु, चाल निराली तोर॥ ऐ०॥ सब जग सार तुमहिं बतलावैं, सन्तन मतो

बटोर। भरत लखन रिपुसूदन हूँ के, सार में क्या तब ओर॥ ऐ०॥ नाम पितामह को अज तेरो, आपहुँ अज यह घोर। 'मोदलता' को वेगि बतैए, सिय दुल्लह चितचोर॥ ऐ०॥

॥ तथा ॥ (१५९)

प्यारे चारो सुघर रघुलाल, लोने जेमिय जू। सुनु प्यारे जू० प्रेमिन प्रेम बढ़ाइय, प्रमुदित पाइय हम थाम्हीं रहैं कर थाल, लोने०॥१॥ सुनु प्यारे जू। पाइय मृदुल सुहारी, सरस तरकारी, न्यारी न्यारी सुस्वाद रसाल लो०॥२॥ सुनु०॥ ये वासित दधि टटका है, गाढ़ा अँवट का, अति मोटी पड़ी याकी छाल्ह॥ लो०॥३॥ सुनु०॥ पइए कोमल कुम्हरौरी अदौरी-दनौरी। तरी पापर तिलौरी सम्हार। लो०॥४॥ सुनु०॥ पइऐ बड़ी दहिबाड़ा सुसेकी सिंघारा, सकड़ौरी भरी रसजाल। लो०॥५॥ सुनु०॥ पइये पेड़ा पनतोआ घेवड़ रसमोआ। बनी खाजा जिलेबी ततकाल। लो० जे०॥६॥ सुनु०॥ जेमिय भरे अनन्दन चारेउ चन्दन। होवैं लखि 'मोद' निहाल। लो०जे०॥७॥

॥ तथा ॥ (१६०)

सुनु स्तुति परम सुहाई, यह गारि नहीं। जेमिय पाहुन मनलाई जो भावैं वही॥ तब विमला मन भावनि पावनि, सबजग जासु बड़ाई, य०॥ सो तो सदा रमावैं परपति, कहहिं सन्त समुदाई य०॥१॥ गुरुकन्या महँ केलि करैं सब, तव पुरवासि सदाई, य०। औरन कहहिं करहुँ जो ऐसो, पैहहु गति मन भाई, य०॥२॥ अवध वासि सबके सब समधी, नृपसुत सबहिं जमाई, य०। राजा नारि रखैं अनगिनती, रति विनती विललाई॥३॥ अपराजिता राज कन्या बिनु, काहुन सुख-सिधि पाई, य०। नाथ कृपा बिनु सो न लहति हैं सद्ग्रन्थन यह गाई, य०॥४॥ सरस उक्ति मुनि रस-रस जेंवहिं रसिआ चारिउ भाई, य०॥ 'मोद' मुदित निज सियपै बारति, आनन्द सिन्धु समाई॥५॥

॥ तथा ॥ (१६१)

नै हम दैछी गारी, दैहल अंग परकारी नै०॥ पसरल रहथि रमावथि सबकहँ, नामें कहैए व्यभिचारी॥१॥ शान्त स्वभाव सबके जनवैए, शान्ति थिकथि अहाँक प्यारी। नै०। प्रथमहिं रंग लगबथि, अपनहु देखु विचारी॥२॥ कुटिल केश अट-पटे बजैए, सटपट व्यवहारी। नै०। व्यापक नामकान अहाँ कैलहुँ, पाइक कैल पुकारी॥३॥ मोहन रूप कटाक्ष करैए, मोहैछथि अपन परारी। नै०। बड़-बड़ वीर बहसि बतिआइए, बहिनो कराओल उधारी। नै०। पुनि मुसुकाहिं संग तकि जेंवहिं, 'मोद' निरखि बलिहारी॥४॥

॥ तथा-कथा ॥ (१६२)

तिल भरि गारिन दैछी, सुनु कथा कहैछी॥ एकटा रहथि श्रीरघु महिपाल, भेलथिन हुनक चन्द्रवति बाल। प्रथमहिं नायिकेँ जनमैलथिन। पाछासँ सिन्दुर धरबैलथिन, साँचहि साँच कहैछी सु०॥१॥ नृप युवनास्व भेला बड़ यशी, नामें सुनैत हँसैए हँसी। हुनक उदरमें रहलैन गर्भ, मान्धाता नृप भेलथिन अर्भ। वृद्धक मुँहे सुनैछी सु०॥२॥ सगरक प्रिया सुमति कहबैलनि, केओ नहिं कैलक से ओ कैलनि, साठि हजार छनहिं जनमैलनि, जग महँ सुयश-समुद्र बहैलनि, की नहिं अहाँ जनैछी॥३॥ शान्तावती अवध में भेलनि, रोमपाद गृह पोसल गेलनि। भरि बैस भेलो नै कैलथिन व्याह, वर्षा बिनु भेल प्रजा तबाह, पाहुन किय सकुचैछी॥४॥ कथा सुनैसँ मन जनि फेरू, कृपा-दृष्टिसौं हमरा हेरू। यकर सुनाइ यतबे दीअ। 'मोद' हिं आब अपन कय लीअ, लखितहिं रहक चहैछी॥५॥

॥ तथा ॥ (१६३)

पाहुन देखु सोचि जीआ। केहन अहाँक वंश में निर्लज्ज भेलनि धीया॥ पिता के जे कष्ट देलनि से अति अधकनीआ। चमकि चढ़लि शंभुशीश, धन्य हुनक हीआ॥ सभक पाप छीनि लइछथि,

छनमें छुछुनरिआ। टाँग धरैत सुक्ख दैछथि, दुःख कै दमनीआ॥ रोमपाद सदन गेलनि, भगिनी भवदीआ। जलक वृष्टि बन्द कैलनि, ओहे कुलछनीया॥ सबसँ प्रेम तोरा दैछथि, खन होइछथि तीआ। 'मोद' हिया सोंचि देखु हेयो सिया पीया॥

॥ तथा ॥ (१६४)

पाहुन कहू कोना, गुण सुनि-सुनि मन सकुचाइऐ॥ पा०॥ अहाँक बहिनि सौं नेह करैऐ सेहे अहाँके सोहाइऐ॥ पा०॥ जकरा पर अहाँ नजरि करैछी, तकरे गर लपटाइऐ॥ पा०॥ लोक-लाज कुल कानि अपनपौ, कनैक-कनैक क खाइऐ॥ पा०॥ तब कुल कन्या परम विलक्षणि, कनिको नै सरमाइऐ॥ पा०॥ एक पुरुष संग सुख नै करैऐ, तीनू लोक बौआइऐ॥ पा०॥ नखसिख सुखमा देखि अहाँ के, काम बेकाम बुझाइऐ॥ पा०॥ 'मोद' अवध के नागरि अनतह कुलटा बनि बनि जाइऐ॥ पा०॥

॥ पद ॥ (१६५)

जनि मनहि लजाउ कनै आओर पाऊओ। बनल अनोन सनोन जेहेकिछु, जानि गँवारि क्षमा छाउओ॥ प्रेमीजन चितवन मुसुकन हित, तरसैत छथि तकि मुसुकाउओ। मिलत दहेज चाहव जे-जे से, ताइला उदासी नै मन लाउओ॥ मिललनि सीता दुहुँ कुल तारनि, हिनक आदर भाव हिय लाउओ॥ हँस-मुख पाहुन नीक कहाइ छथि, हँसैत 'मोद' हिय बसि जाउओ॥

॥ पद ॥ (१६६)

अयलौं पाहुन से खुब कैलौं। भाग्य सँ सिय सुन्दरि पैलौं॥ प्यारी पुर दिसि पैर धरैते, पाबन यश त्रिभुवन छैलौं। सतसंगे अछि सार जनैलौं, बुढ़वा बाबा के संगलैलौं। सकल अरिष्ट कटल धनु टूटत, पाय सीता सीतल भेलौं। रुख लखिकै मन-मोहनि सिय के। 'मोद' अलिन के कर धैलौं॥

॥ होली ॥

॥ दोहा ॥ (१६७)

सियसहेलि अलवेलिनी, नखसिख लखि सियकन्त।
सबहिन उर एकबारगी, आई खेलु बसन्त॥

(१६८)

श्रीसिय शक्तिनि रंचमहँ, कञ्चन विपिनि मँझार।
फागचौक सज्जित कियो, करन मारहिय मार॥

(१६९)

मचि-मचि फाग चौक आज राज होरी हैं।
उतै रघुलाल इतै लाड़िली किशोरी हैं॥
सखन संग लिए रंगभर उमंग उतै।
इतै पिचकारियाँ करधारि खड़ी गोरी हैं॥
जय किशोर जय किशोरि शोर दुहुँ दल में।
युगल चन्द पै सबहीं की दृग चकोरी हैं॥
औचक आय के पिय प्यारी के पट रंग डारी।
झटाझट प्यारिहुँ पिय पागरी रंग बोरी हैं॥
लगी रंग-जंग होन जोर-शोर दुहुँ दिसि ते।
सखा-सखि आपस में करि रहे झकझोरी हैं॥
अली लइ बाँधि सुमनमालन से लालन को।
जय किशोरि की कहवाय 'मोद' छोरी हैं॥

॥ पद ॥ (१७०)

होली खेलन छयल से सहेली चली चल्ल। लला को आज लाड़ली बनाऊँ भली भल्ल॥ वे तो निपट अनारी, पर जानैं छल

भारी, हाँ सखी मेरी आँखों में रंग डारि दीने कल्ल॥ आजू पकी लइहौं, चूनरि पहनइहौं, नचाय निज संगन दिखाय दीहौं बल्ल॥ तौलोंन काहू छोड़ो, मानौ नाहीं निहोरो, जौंलो लला परैन श्री लली की पग तल्ल॥

॥ होली ॥ (१७१)

नौशय प्यारो नवलवर खेलिय वसन्त सम्हार। श्रीमैथिली जन्मभुवि मिथिला, भइ सौभाग्य अगार। जहँ वासी सब कहहिं आपको पाहुन हमर-हमार॥ नयन ललाइन लाल भये सब, देखिय लाल विचार। या गुलाल की फीको ललाई, लीजिय नीको निहार॥ सरस उक्ति नवयुक्ति वचनमिस गाल गुलालन डार। 'मोदलता' चपला-सी चमकि चली, कहि सीयजू की जयकार॥

॥ होली ॥ (१७२)

हमसे सम्हर के होली खेलिय ऐ रघुवंशी छयल छली॥
अली टोलि में क्यों लालजू चुपके-से आते हैं।
रघुवंशी छैल होके क्यों छुपके-से आते हैं।
नवकंज के लोभी अली लुभके-से आते हैं।
बेसर्म से सखियान में सुबके-से आते हैं।
अब तो जानि परी मोहि प्यारे जैसे हो तूँ जोर बली॥१॥
है खेलना गर होली तो सीधे-सीधे खेलैं।
आँख अँगिया बचा-बचा के रंग को मेलैं।
सिय स्वामिनी को शीशना फगुआ हमें देलैं।
नातो कसर चुकाऊँगी कसम अभी ले लैं।
मैं तो धरि रघुवंशी लालन को बनाऊँगी लली।
जरतारि सारि सजके पेन्हाऊँगी मैं अभी।
सिन्दूर बेंदि भाल मैं भरवाऊँगी अभी।

गालों में सुगुल रचके हँस दलराऊँगी अभी।
सिय प्यारि की पद-कंजपै पड़वाऊँगी अभी।
तब जानि परेंगी 'मोद' सही जस मिथिला की अली॥२॥

॥ होली ॥ (१७३)

साँवला हो, समुझि रंग डारो। साँवला हो०
औचक में मत आना, अली घर लेंगी।
लाला से लली कर देंगी।
गालों में गुलाल मल देंगी।
भालों में सिन्दुर भर देंगी।
नहि जोर चलेंगे तुम्हारो, सुमझि॥१॥
साँवला हो, झुमका झमकैहैं काना, नाक नथ देंगी।
चटकीली सुचोली कसेंगी।
मुख-पान ललाई लसेंगी।
लखि शोभा सबै बिहसेंगी।
तब होवेंगी कैसो बहारो, समुझि॥२॥
साँवला हो, सजि तुमहिं गवैंहैं गाना, साज बाजेंगी।
सिय स्वामिनि की जय छाजेंगी।
सब सहचरिअन गाजेंगी।
रसरंग खूब राजेंगी। मुद लुटिहैं 'मोद' अपारो
समुझि रंग डारो॥३॥

॥ होली ॥ (१७४)

मोपै आन रंग मति डारो। मैं तो तेरे रंग रंगी हूँ नीके नयन निहारो॥ मोपै०॥ ऐ अवधेश कुमार मारमद, मारन जग उजिआरो। नयन गुलाल तिहारे सम क्या, ये गुलाल अनियारो॥ मोपै०॥ वीर वरी पै अबीर लगाना, ए क्या उचित विचारो। लतिका 'मोद' मंजु बातैं सुनि, प्रेम-मग्न पिय प्यारो॥ मोपै०॥

॥ होली ॥ (१७५)

हेलि होरी होरी हेलि होरी होरी छाई निमिपुर खोरी-खोरी। हे०॥ उमरि चली सिय संग सहेलिनि, नवरंग चून्दरि पहिरि गोरी-गोरी। हे०॥ मनहुँ उमंग अनेकन अंग धरि, धारि पिचकारी, धाई रंग घोरि घोरी॥ हे०॥ लालनाम साँची किय लाड़िलि, मलि गुलाल चटचट चोरी चोरी॥ हे०॥ प्रीतम सकुचि रंग्यो गर भुज भरि, प्यारि हँसति मुख कंज मोरी मोरी॥ हे०॥ प्रिया सुरुख लखि चतुर चुरामणि, सवहिं रंग्यो जुरि जुरि जोरी जोरी॥ तेहि औसर अलि 'मोद' मुदित अति दम्पति पै वारि तृण तोरी तोरी॥ हे०॥

॥ पद ॥ (१७६)

होली की झाँकी झाँकिये, सहेलिनि मिल करके।
क्या रंगे रंगाये राजि रहे दोउ अंसन भुज धरके॥
औचक प्रीतम कर पकड़ि लाड़ली रंगमली अरके।
चट चतुर चुरामणि हुँ रंगे नयनन नीचे ढरके॥
हो हो हो होरी हाँक पड़ी अलियाँ कलियाँ फरके।
पट परी प्रसूनन मारि वदरिया वुन्दन से झरके॥
वीणा मृदंग डफ झाँझ घुमरि घन तुम तननन तरके।
प्रेमिन चख चारु मयूरी नाचैं मंजु मौज भरके।
झक झोरिनिमें झुमकनि अलकनि कुलकनि विजुरी वरके।
नस-नस सरसाय रही, रस धार असम सरके॥
प्यारी कर वीरा दिये हारि पिय बन्धन से डरके।
अलि 'मोद' महामुद लूटैं इकटक परमानन्द परके॥

॥ होली ॥ (१७७)

आजु सिद्धि सदन में हेलि छाये लाले लाल। देखो हुलसि हुलसि होली खेलैं चहु नृप बाल॥ पाईं अलियाँ अवसर भल भल,

करतीं उमगित तलबल तलबल, लय लय झोरिन रोरिन पिचकारी झटपट सिमिटि गईं ततकाल।। पाके श्री सिधि की रुख सगरी, झटसे बोरी रंगन पगरी, इक इक लाल पै द्वै द्वै लिपटि पटापट भली गुलालन गाल।। लुकि मातनि पट अन्तर देखैं, लहि-लहि पर सुख तजी निमेषैं, रहिना तन-मन तनक सरेखैं पाई 'मोद' सु मौज रसाल।।

।। पद ।। (१७८)

आजु सजन संग होली मचाय लो। होली है होली है होली है गाय लो।। सुनो सुनो सब सखियो, पिचकारी भरि भरि रखियो, राघो रसिक को रंगों में रंगिके, सारी पेन्हाय आज नारी बनाय लो।। मानोनहिं विनय निहोरो, मत छली छयल को छोरो, आली सबै 'मोद' ताली बजाय के, संगे नचाय लो संगे नचाय लो।।

।। पद ।। (१७९)

मंडप में डंफा फनकि रहे। सब होरी मद सनकि रहे।। अनुजन युत रघुलाल उतै इत, सियबहिनिन सह दनकि रहे।। दोउ दिसिते छूटत रंग मूठनि, अंग भूषण झन झनकि रहे।। चनकि रहे कर की सब चुरिआ, उर की कंचुकि तनकि रहे।। बरबस पकरि लई सिय पियको, 'मोद' भई जो मनकि रहे।।

।। झाँकी ।। (१८०)

मंडप महँ हेऽलि होलि माच्यो। श्री सिधि की रुख लखि रंचक महँ, सखिअन फाग चौक राँच्यो।। कोटिन घट कंचन पिचकारिन, सम समान दुहु दिसि साँच्यो। ललिन ललन बिच युगल चन्द लखि, प्रेमिन चख चकोरि नाच्यो।। दुहुँ दिसि ते छूटै रंग मूठनि, बिना रंगाय कोउ न बाँच्यो। प्रीतम हारि किये कर सम्पुट, छमादान प्रमुदित जाँच्यो।।

॥ पद ॥ (१८१)

मैं मिथिला की अलबेली अलिया, मुझसे मत बोलो। ओ अवध नृपति के छोरे, हौतो अबहि उपर के थोरे, करते हो बतियाँ रस बोरे, मेरी घुघट ना खोलो॥ ना तो अभी धाय कर लूँगी, पारी कर नारी कर दूँगी, सिय स्वामिनि पग पर-वाऊँगी ना छाड़ूँगी मैं तोलो॥ खैहों सुमन छड़ी की मारी, अइहैं याद पिता महतारी, अइहैं सिख सबै तब गारि, 'मोद' रस घात में मत डोलो॥

॥ कवित्त ॥ (१८२)

नवल नृप लालको बनाय नवला नवेली, ललित लुगाई लखि-लखि लगी झूमने। कोउ कहीं लक्ष्मी निधि योग के भलो है प्यारी, कोउ कही साँवली है सोचतीन तूमने। गावती बजावती नचावती सुमनमानी, स्वामिनि सियाकी चहु ओर लगी घूमने। मोद अलि मसलि गुलाल दोउ गालन में, उमगि उमगि सब लगी मुख चूमने॥

॥ कवित्त ॥ (१८३)

श्री राघव रंगीले रंग डारिये समझ बूझ, नातो गहि आज निज मन की कराऊँगी। सारी गुलेनार की सम्वारि कुचि कंचुकि कसि, चोटी गुहि भाल बिन्दी सिन्दुर भराऊँगी। मकूका कपोल नास वेसरि अधर तिल, कंठ कस्तूरी दृग अंजन धराऊँगी॥ नचाऊँगी नचाऊँगी मचाय मजा मंजु 'मोद' स्वामिनि के पद पै बार सैंकरो पराऊँगी॥

॥ कवित्त ॥ (१८४)

होली है खेलना तो खेलिये सुसौक भरे, याद रहे खूब यहाँ सीधे-सीधे आना होगा। आना होगा अदब के साथ-साथ धीरे-धीरे

बाँधि दोउ हाथ माथ बंदगी बजाना होगा। जाना होगा खूब सजा पाके मजा फागुन की, सबहीं दिनो के 'मोद' कसर सँधाना होगा। कसर सधाना होगा दोउ कर बँधाना होगा, एकाएकी अलियों से गाल मलवाना होगा।

॥ कवित्त ॥ (१८५)

कालिह रंग घलिके विहाल किये जैसे तैसे, आपहु को आज खूब रंग घलवाना होगा। मारि पिचकारी किये कंचुकी को तार तार, तैसेही हजारों घड़ा सर पै ढलवाना होगा। अरज वरज को बिसार किये मनमाना, वैसे आज सारे सान सौकत दलवाना होगा। 'मोद' सिया स्वामिनि के सामने में अभी लाल, एकाएकी अलियों से गाल मलवाना होगा॥

॥ कवित्त ॥ (१८६)

सिय पिय समीप द्वै सखिया सयानी आय, कह्यो सचकित रूप सखा की रचाय के। आ रही है अलियों की झुण्ड लखि लीजै लाल, गावती सु फाग यंत्र विविधि बजाय के। रहैं सावधानमत छोरैं निज आनवान, सान बिसरावैं रंगजंगन मचाय के। यों कहि भुलाय गाल अविर लगाय, 'मोद' तालियाँ बजाय चली छयल को छकायके॥

॥ पद ॥ (१८७)

ऐसी बरजोरी होरी मोहि ना सुहाय रे। लपकि झपकि गाल गुलाल लगाय रे॥ नरम कलाई मोरी, मुरका दई मड़ोरी, भरि पिचकारी सारी कुंचकि भिंगाय रे॥ भुज भरि कंठ कसि, चूमि चूमि हँसि हँसि, मलि मलि गालन गुलालन लगाय रे॥ हीर हार टूटि गई, आँगी बन्द छूटि गई, सवल लंगर कियो 'मोद' मन भाय रे॥

॥ पद ॥ (१८८)

भली न लागैं लाल ऐसी लँगराई रे॥ सीय की सखी [illegible]
नवेली भोली भाली भली, छयला अलबेला [illegible]
लोने लाल लोचनै ललाई, कतलाई करैं, तीये रंग [illegible]
बलाई रे॥ 'मोद' अलि रंग थै चमक चली चपला-सी [illegible]
डारि अंगुठा झुलाई रे॥

॥ पद ॥ (१८९)

गहि प्रीतम को बरजोरी रे। [illegible]
मसलिदई दोउ गाल गुलालन, भाल पै धर दई रोरी रे॥ [illegible]
ओढ़नी औढ़ायो, काजर दइ दृग दोरी रे॥ [illegible]
अधरन सुतिल रचोरी रे॥ दई बनाय [illegible]
कसोरी रे॥ चंचलाक्षि मुख चूमि चूमि कहि, अब [illegible]
रे॥ 'मोद' मंद हँसि कहि नव नवला, अब [illegible]

॥ होली ॥ (१९०)

मंडप महँ सरस रंग छाये, मंडप महँ॥ जनु अनुराग [illegible]
दम्पति की, अन्तर भरि ऊपर आये॥ मंडप महँ॥ कीधौं [illegible]
मकरन्दनि अधिक भये उड़ि मड़राये॥ मंडप महँ॥ कीधौं [illegible]
विश्व ललिताई, लाजि सुरज ह्वै बिललाये॥ मंडप महँ॥ [illegible]
सियाजु की सुख सुहाग किधौं सबहिन को इक [illegible]॥ मंडप महँ॥

॥ घोघट ॥ (१९१)

मंडप में आये श्री महाराज, ऐ सखि देखो-देखो।
साजे घोघट के सुसाज, ऐ सखि देखो-देखो॥
चारो दुलह चारो दुलहिनि राजैं, ऐ सखि देखो-देखो॥
पूजैं गवरी-गणनाथ॥

सुवरण सारी सोहैं, मणिन किनारी, ऐ सखि दे०॥
अतहि छटीली छटा छाज॥२॥
सखिन लखायो, मुख लखि सुख पायो ऐ सखि दे०॥
पूरण भये मनकाज॥३॥
राजा ओढ़ावैं, दुलहा, सिर से सरकावैं ऐ सखि दे०॥
पितु से करेंगी क्योंकर लाज॥४॥
ऐसेहिं पाँच बार कीन्हें व्योहार ऐ सखि दे०॥
'मोद' मुदित सब समाज॥४॥

॥ आरती ॥ (१९२)

रंगीली आरती करु नीकी।

नवल वर नौशय दुलहिनि जी की॥

पगतल ललित संयुक्त महावर, रंजित नख अवलीकी॥ रं०॥ वसन वसन्ती सुकटि लसन्ती, सारी मोल घनी की॥ रंग०॥ मुख सुछवी की सींब बनी की, मुसुकनि वृष्टि अमी की॥ रं०॥ मौर मौरी की छहर छोरी की, दामिनि द्युति करैं फीकी॥ रं०॥ 'मोदअली' की सरवस हीकी, झाँकी सिय सिय पीकी॥ रं०॥

॥ पुनः ॥ (१९३)

आरति दम्पति चारु की कीजिए मन भाई।
नख-सिख छवि अवलोकिये, हियरा पधराई॥
अति लहलहित महाबरन, मृदतर बन छाई।
अंगुठन औंठा मणिन की, सुठि नगन जड़ाई॥
धोती दामिनि ज्योति-सी, रंग पीत रंगाई।
चूनरि चारु सुचटक भरी, अनुपम अरुणाई।
अधरनि मृदुल सुपान की, अति ललित ललाई।
अँखियन अजब अनोखियन, काजर सुरेखाई।

सिरनि सुमौरी मौर द्युति, दस दिसि दरसाई।
'मोद' अपनपौ बारिये, सुख-सिन्धु समाई॥

॥ विहाग ॥ (१९४)

अली लखू, कोहबर की सुबहार।
दृग अरविन्द, नींदबस अति हीं, होय रहे रतनार॥
आलस बस अब पलक अड़त नहिं, करत न मौर सम्भार।
क्यों सकुचात सुघर वर प्यारे, प्यारिहिं लेहु निहार॥
करि आरती वारि पुष्पाञ्जलि, 'मोद' चली पट डार॥

॥ जगावनी ॥ (१९५)

सूरज किरनमाँ उगि अयले भर अँगनमाँ, जागो ये जागो, मेरे सिया के सजनमाँ॥ जागो ये जागो॥ दरसन लागि ललचैं लोभी ये नयनमाँ, जागो ये जागो। नयना चयन दयनमाँ, जा०॥ कीजै दन्त मंजन ले आई दतुअनमाँ, जा०॥ अंग-अंग उवटूँ उवटनमाँ ॥ जा०। कनक कलश भरे कमला जलनमाँ, जा०॥ करवाऊँ मौज से मंजनमाँ। जा०॥ भूषण बसन साजि, आँजि दूँ अंजनमाँ, जा०॥ मेटूँ नाम निरंजनमाँ॥ जा०॥ खोलु-खोलु-खोलु प्यारे अँखिया कंजनमाँ, जा०॥ 'मोद' के प्रियवर परनमाँ॥ जा०॥

॥ जगावनी ॥ (१९६)

जागिये मेरे नौशय बबुआ जागिय जागिय जागिये। रैनि गई उषा भई लालिमा चहुँ ओर छई। खोलि नयन मौजमई प्रेमिन सुख पागिये। जा०॥ आईं जुरि पुरी नारि, कोउ सरहज कोउ सारि सजि-सजि मंगल की थारि, सिगरी बड़ भागिये॥ जा०॥ सुभगा उवटन लै खड़ी, सिला तेल सुगंध भरी, चारुशिला धोती धरी विद्यु-सी अदागिये॥ जा०॥ कमला कर-कलस लिये, विमला शुभ अंगुछीय, मंजन की चौकीय लौं, मन्द-मन्द बागिये॥ जा०॥ सासु सबैं पुलकि गात,

सिरनि सुमौरी मौर द्युति, दस दिसि दरसाई।
'मोद' अपनपौ बारिये, सुख-सिन्धु समाई।।

।। विहाग ।। (१९४)

अली लखू, कोहबर की सुबहार।
दृग अरविन्द, नींदबस अति हीं, होय रहे रतनार।।
आलस बस अब पलक अड़त नहिं, करत न मौर सम्भार।
क्यों सकुचात सुघर वर प्यारे, प्यारिहिं लेहु निहार।।
करि आरती वारि पुष्पाञ्जलि, 'मोद' चली पट डार।।

।। जगावनी ।। (१९५)

सूरज किरनमाँ उगि अयले भर अँगनमाँ, जागो ये जागो, मेरी सिया के सजनमाँ।। जागो ये जागो।। दरसन लागि ललचैं लोभी ये नयनमाँ, जागो ये जागो। नयना चयन दयनमाँ, जा०।। कीजै दन्त मंजन ले आई दतुअनमाँ, जा०।। अंग-अंग उवटूँ उवटनमाँ ।। जा०।। कनक कलश भरे कमला जलनमाँ, जा०।। करवाऊँ मौज से मंजनमाँ।। जा०।। भूषण बसन साजि, आँजि दूँ अंजनमाँ, जा०।। मेटूँ नाम निरंजनमाँ।। जा०।। खोलु-खोलु-खोलु प्यारे अँखिया कंजनमाँ, जा०।। 'मोद' के प्रियवर परनमाँ।। जा०।।

।। जगावनी ।। (१९६)

जागिये मेरे नौशाय बबुआ जागिय जागिय जागिये। रैनि गई उषा भई लालिमा चहुँ ओर छई। खोलि नयन मौजमई प्रेमिन सुख पागिये। जा०।। आईं जुरि पुरी नारि, कोउ सरहज कोउ सारि सजि-सजि मंगल की थारि, सिगरी बड़ भागिये।। जा०।। सुभगा उवटन लै खड़ी, सिला तेल सुगंध भरी, चारुशिला धोती धरी विद्यु-सी अदागिये।। जा०।। कमला कर-कलस लिये, विमला शुभ अंगुछीय, मंजन की चौकीय लौं, मन्द-मन्द बागिये।। जा०।। सासु सबैं पुलकि गात,

चूमत, पदपद्म हाथ, फूली ना उर अमात अनुपम अनुरागिये॥ जा०॥ देखन बीअहुती वेश, दौड़े आये दिनेश, आदर करि के विशेष, इनके पग लागिये॥ जा०॥ खिर खिआइ समय आइ चहल-पहल पहल छाइ, जो-जो हों मनकि भाई सो-सो आज माँगिये॥ जा०॥ सिखि जु कहैं व्यंग वानि, लाड़िली सब हैं लजानि, 'मोदिया' की विनय मानि, निन्दिया को त्यागिये॥ जा०॥

॥ झाँकी ॥ (१९७)

झाँकी नीकी बनी सिय पिय जी की। प्रेमिन बस करवा, गोरे भुज गरबारी। सुछवि छाकि बंक ताकि॥ नी०॥ दमक दिव्य दुहुँनकि दस दिसि दीपत ही पगैन काकि-'मोद' ताकि॥ नी०॥

॥ झाँकी ॥ (१९८)

गोरी किशोरी दुलहिया ये, दुलहा राघो श्याम।
देखे के पैली संयोगवा ये, बसि के यहि गाम॥
लाली लली की चुन्दरिया ये, अंग ललित ललाम।
कटि में कसे वे केसरिया ये, कोरन जड़ि काम॥
मौरी मणिन इन धरिया ये, सिन्दुर सुख धाम॥
उन सिर टेढ़ी पगरिया ये, मौर मोतिन दाम॥
दोऊ कि दोऊ नजरिया ये, हिय करै कतलाम।
को न इन्हैं लखि सखिया ये, बिकिहैं बिनु दाम॥
प्रेमी जनों के पिअरवा ये, सन्तन विश्राम।
'मोद' बसा लो हियरवा ये, मुख दम्पति नाम॥

॥ झाँकी ॥ (१९९)

सखिह हे झाँकू त कनैक हिनक झाँकी।
सखि हे रूप अनूप दृगनि बाँकी॥

सखि हे नयन किये येते पागैत अछि।
सखि हे जन्म-भू गुनि अनुरागैत अछि॥
सखि हे गौर सँ श्याम घेरायल छथि।
सखि हे श्यामों में गोरि समायल छथि॥
सखि हे अरुण सुरेख समूचक छैन।
सखि हे साफहिं खूनिक सूचक छैन॥
सखि हे अंजन किये अँजवौने छथि।
सखि हे माहुर जनु मँजवौने छथि॥
सखि हे गोलक दोउ किय भीजल छैन।
सखि हे प्रेमक बून्द पसीजल छैन॥
सखि हे चित चाहैऐ सदा लखितैं रही।
सखि हे 'मोद' सुछवि-अमि चखितैं रही॥

॥ झाँकी ॥ (२००)

दोउ चन्द्रानन की चारु अमी, चख लेवैं जिनका जी चाहे।
झाँकी जीवों के जीवन की, झँक लेवैं जिनका जी चाहे॥
ये परम प्रेम की प्यासी हैं, वे सुखमा सरस उपासी हैं।
दोउ शिव शंकर उर-वासी हैं, लखलेवैं जिनका जी चाहे॥
ऐ सुरति सुहागिनि सिखवन सिख, ऐ चख चकोरिका चितवन चिख।
ऐ 'मोद' उरन्तर दोउ नख सिख, रखलेवैं जिनका जी चाहे॥

॥ झाँकी ॥ (२०१)

साँवली सुरति पै सरकार, मैं न्योछावर ह्वै गई॥ मिथिला-सरकंज सीय, प्रेमी भ्रमर पीय, सुबश बसैं भरे प्यार॥ मैं०॥ पिय जू सजल घन, सियजू तड़ित सन, मुसुकनि वर्षावैं चितवन धार॥ मैं०॥ राजैं भुज अंसधारे, नेहिन होवैं सुखारे॥ 'मोद' निरखैं छवि एकतार॥ मैं०॥

॥ झाँकी ॥ (२०२)

अँखिया मदन-मद से छाके नवल वर। सोहैं सरस रस वर्षै नेहिन पर॥ भौहैं कमान-वान प्राण हरिलेत आलि, विहसत चन्दमुख पर अलकन धर॥ अधरन की रस मानो सुधा विन्दु, पीवर जनु आय श्याम फणी निकर॥ मन्द हँसनि भूज अंजनि लसनि देखि, ह्वै रही न्योछावरि 'मोद' सुमुद भर॥

॥ झाँकी ॥ (२०३)

रौरी झाँकी बनी बर बाँकी पिय। झाँकन को ललकै न काकी जिय॥ जैसेहि सुखमा सींव सलौने, तैसिहिं सुखद, सलोनी सिय। उन सम आप, आप सम हैं वे, समता योग न, और बिय॥ झाँ०॥ आपस में मुखचन्द चन्द्रिका, चाखिय चखनि चकोर किय। रसिकन-प्राण-सजीवन जीवन, उमगि युगल गलबाँह दिय॥ झाँ०। पेम-तत्त्व सब भाँतिन एकै, नेहिन हित द्वै देह लिय॥ ललित लड़ैती लाल बिलसिये, मन्द सुमुसुकत 'मोद' हिय॥

॥ झाँकी ॥ (२०४)

कैसी जोड़ी बनी लाल-प्यारी प्रिया श्याम श्यामा की॥
क्या मुखचन्द चारु चमकि रही चम चम चम,
बसन तन नील-पीत दमकि रही दम दम दम,
भूषण अंग-अंग में झमकि रही झम झम झम,
रतनारी दृगनि कजरारी॥१॥ प्रिया०॥

लखैं निमिपुर नर-नारि नजर गरि गरि गरि,
भूरि भागिनी अनेक भाव भरि भरि भरि,
दुरि कानि मान सान भान करि करि करि,
भइ कतल हँसनि असि मारी॥ २॥ प्रिया०॥
परस्पर ह्वै रहे वलिहारि युगल लखि लखि लखि,

चारु माधुरि अपार चखनि चखि चखि चखि,
'मोद' मगन महा झाँकि आँखि रखि रखि रखि,
मन-बुधि चित अहमिति हारी॥३॥ प्रिया०॥

॥ झाँकी ॥ (२०५)

चारो दम्पति रंग भरे आज मंडप राजि रहे॥ रामसीय
तड़ित बरन तन, मांगलिक सजे साज, छवि रस छाजि रहे॥
भरत माण्डवि रंग, जनु तमाल संग, कनक लता द्युति भ्राज,
साजि रहे॥२॥ लखन उर्मिला चन्द्र निर्मला, श्यामलि छवि
रतिपति लाजि रहे॥३॥ रिपुहन श्रुतिकीरति, नव रवि जनु,
प्रभा युत भ्राज, लखि 'मोद' गाजि रहे॥४॥

॥ झाँकी ॥ (२०६)

ललि लालन ललिताई, अलि ललकित ह्वै लखरी।
की चान्दनी, चा चकोरिन कै चखरी॥ भुज अंसन दिय सोहैं,
कीने तिर छोहैं। सब भावुक जन जोहैं, कै लोचन वै पंखरी॥
की अंग-अंगनि, मणि भूषण नवरंगनि, भरे मादक मन्द मुसुकनि
दोननि भखरी॥ नक-वेसरि अरु बुलकनि, कल अलकनि की झुलकनि,
झुकि झूमक की झुलकनि उर अन्तर विच रखरी॥ श्री दशरथ नृप
लाले श्री मिथिलाधिप बाले, 'मोदअलि' तूँ निरखाले दोउन की
नख-सिखरी॥

॥ झाँकी ॥ (२०७)

एक बार कृपाकरि हेरिये, अनिआरे आँखिनि ते। काहे को
करत अनाकनी अपनी अभिलाषिनि ते॥ यह मैथिलि जू की मिथिला
हैं, सौभाग्य भाजनी सुथला हैं, आपहिं के प्रेम में सिथिला हैं,
आयेजा छनि ते॥ है नाम निराला जैसे ही, फिर रूप भी आला वैसे
ही, चितचोरक हैं फिर तैसे ही, तिरछी दृग ताकनि ते॥ यह

यों ही बनी रहैं, दम्पति सहज सुख सती रहैं, 'मोद' प्रीति दिनो दिन दुनी रहैं, तब झ्ाुकी झाँकनि ते॥

॥ झाँकी ॥ (२०८)

नव दुलहिनि वर झाँकि, सखि झाँकुल झमकि कैं। अतिशय छैन्ह आनन्द अंगअंग सँ उमकि कैं॥ सिन्दूर पौरि हिनकर, केसर सुमौर हुनकर, चकचौंधि लगादइऐ चख चमाचम चमकि कैं॥ झुकि बीरझुमक अइ दिसि, कुण्डल ओ अलक ओइ दिसि, दाहिनहुँ दमा दइअय, द्युति दमादम दमकि कैं॥ अंजित सुनयन सिय के, काजर हुँ कयल पिय के, दरसकन दृग गड़इअय, अति रमा रम रमकि कैं॥ मुसुकैत मुख छबीलिक, बिहसैत वदन छैलक, छकि 'मोद' मग्न होइअय, छवि छमाछम छमकि कैं॥

॥ झाँकी ॥ (२०९)

सखि झमकि झूमि झाँकू, ई झमकदार झाँकी। दम कइऐ केहन दम-दम, ई दमकदार झाँकी॥ नव रंग मणि सिंहासन, जग-जगमगैं प्रकाशन, तामध्य दिव्य दम्पति, सुख सम्पति रसिका की॥ पहली सखी, युगल दिसि, छथि भेलि प्रेम पागलि, सियपिय मुख अरविन्दनि, मकरन्द बुन्द छाकी॥ भुज अंस दै सोहैछथि, टक एक कय जोहै-छथि, दृग में गड़ाय दैछथि अलि 'मोद' दृगनि बाँकी॥

॥ झाँकी ॥ (२१०)

देखिऔन देखिऔन पाहुनक अंग रंग अनमन जेहने तिसी सुमन। श्यामल छला हरित भय गेला, सीय भेलथिन बाम जखन॥ कटि में केहन सोहै छैन सजनी, कसल केसरिआ पीत पटा। झुझुकि छायल छैन छैल पर, सीय छवीलिक छविक छटा॥ रोम-रोम पर काम कोटिसत, मोहै छथि लखि हिनक बननि। सेहो मोहैला सहजे

सुनिते, अपन सिया के नुपुरक धुनि॥ 'मोद' लाडिली समान आ
छथि, लाल सँ सब विधि विश्वा बीस। पायनो हेलसौम कि
कलंगी, झुकल स्वामिनिक चरणक शीस॥

॥ पद ॥

दम्पति की झाँकी झाँकिये, सखि झूप झूमके। कर कर मि
दोउ राजि रहे, रस जूम जूम के॥ नव रंग सजि भूषण बसन औ
दोउ नख सिख धारि रहे। प्यारी पर प्रीतम प्रीतम पर, प्यारी जू वा
रहे॥ हुलसनि पुलकनि उसकनि मुसकनि, रसिकन मन हरि र
अलकनि डुलकनि बुलकनि हुलकनि, हिय पै बैठारि रहे। तिल
बने केसर कस्तुरी, कूमकूम के॥ दम्प०॥ सियजू को पिय लिन्हे ल
सिय, भुज अंस धरे हँस के। मानो भजि जइहैं हैं पकड़ि रहे, दोउ
दोउ गस-गस के। हैं उड़ि रहे दोउ रोम-रोम, धारायें रस रस के। स
मत्त हुईं सब बाल रूप, जालों में फँस-फँस के। अलि 'मोद' मुदि
युग चन्द, चान्दनी चूम चूम के॥ दम्प०॥

॥ झाँकी ॥ (२१२)

आब हम ओआरि देलौंयो, आब हम ओआरि देलौंयो। प्रियव
अहाँक सुरति पर, हम ओआरि देलौंयो। बाँकी झाँकिहिं झँकाय,
मनचित लेलौं अपनाय, सुधि बुधि और अपनपौं सब हारि देलौंयो॥
चोखी चखनि चुभाय, कैलौं विवस बनाय, मन्द मधुरी हँसनि अलि
मारि देलौंयो॥ नोखे नवल सिकारि नवलनि मारि मारि, रघुवंशक
विरद बिगारि देलौंयों॥ सुनु सुनु सियकन्त, 'मोद' दायक, अनन्त,
आब हम अपना के अहाँपर न्योछारि देलौंयो॥

॥ झाँकी ॥ (२१३)

आब हम तारि गलौं यो, आब हम तारि गलौं यो, अहाँ

मोहक व्यापार के व्यापारि भेलौंयो॥ धारि परम वैराग, तप कैला सब त्याग, ताइ स्वायम्भुव के रूपक भिखारि कैलौं यो॥ ज्ञान-निधि मिथिलेश, के दिखाय दिव्यवेश, निज पद कंज मंजुक पुजारि कैलौंयों। बहु मुनिनके झारि, सेव चाहलनि ह्वै नारि, वरदान दय दय सबहिं सुखारि केलौंयो॥ मणिमहँ छवि शिम्व, लखि निज प्रतिबिम्ब, अहाँ अपना पर अपने न्योछारि देलौंयो॥ 'मोद' स्वामिनि शृंगार, लखि भेल पूजी पार, सन्ध्यावन्दनों के सुरति बिसारि देलौंयो॥

॥ पद ॥ (२१४)

सिय दुलहे से नयन जब जूटी। लोकलाज कुल की मर्यादा ताग तड़ातर टूटी। काल कर्म भ्रम प्रबल कालिमा, छवि छाकतहीं छूटी॥ निज निज रुचि अनुरूप महासुख, लूटैं चतुर बधूटी॥ 'मोद' अली के प्राण जिवन धन, श्याम सजीवन बूटी॥

॥ पद ॥ (२१५)

देखिऔन देखिऔन ऐ बहिना। हरिओ हरिअर भेला होइते वैदेही दहिना। जिनकर सुषमा शेष शारदा कल्पहुँ लौं कहिना॥ पार पबैछथि से सिया सम्मुख जुगनु ज्योति जहिना॥ पिय प्यारे निवसै छथि पलहूँ प्यारी बिनु रहिना। पिय मुख चन्द चकोरी भोरी सियगोरी तहिना॥ परम भाग्यसौं भेल समागम होइत रहौ यहिना। धन मिथिला धन 'मोद' मैथिली धन हम सबहीना॥

॥ पद ॥ (२१६)

जाहि परे नयननि में नयना। तिल तिल निसरि जात अहमिति मग, ऋणहूँतू निजकोसो गनैना॥ जल में थल में सब जीवनि में, श्याम गोरि तजि और लखैना॥ युगल चन्द की चारु माधुरी, 'मोद' चखनि चखि और चखैना॥

॥ सहचरी गण श्री सरकार सँ ॥

॥ झाँकी ॥ (२१७)

प्रीतम-प्यारी अहाँक अनन्या। रोम रोम श्यामें रंग रंगलनि त्यागि सकल रंग अन्या॥ श्याम बसन तन श्याम कंचुकी श्याम बरांक लसन्या। अंजन पलक पूतरी श्यामहिं श्याम विन्दु अधरन्या॥ श्याम मिलन हित सादर पुजलनि गणपति गिरिपति सरन्या॥ पल पल प्रेम प्राण पन ठनलनि सहज सुशील कन्या॥ कंचन विपिन में कोरि मँगौलनि सहित प्रमोद रमन्या॥ 'मोद' प्रेम पथ में श्री मैथिलि अहाँ सँ सौगुण धन्या॥

॥ झाँकी ॥ (२१८)

प्रीतम अहाँक धर्म अछि येहे। सदा एकाग्र होय अति सादर सेवी सुता विदेहे॥ नखसिख स्वकर शृंगार सम्वारी नित नव नव छवि गेहे। अनुछन लखिते रहिरुख रखिते चाहथि जेहे सेहे॥ परम भाग्य सँ पौलहुँ प्यारी पुण्य पुराकृत केहे। प्रमुदित वस 'मोद' मन्दिर में उमगित सहज सनेहे॥

॥ सहचरीगण श्री लाड़िली जू सँ ॥

॥ पद ॥ (२१९)

प्रीतम बड़ प्रेमी छथि प्यारी। तब अनुराग रंग नयननि में, छैन छायल अरुणारी। पीत रंग कटि वसन रुछै छैन, पीत उपरना धारी॥ पीत यज्ञ उपवीत विलोकिऔन, पीतहिं खौर सम्हारी॥ सी सुनिते सम्भ्रम दोड़ै छथि ता ततछण सबछारी। सीता जापक जनपर होइछथि, बार बार बलिहारी॥ अधरहिं धैने सदा रहैछथि, रसिक-राज रसकारी। रहिऔन अहूँ सदा रुख रखिते, रुख राखनि सुकुमारी। ईछी अहाँकी ओहे, अहाँछी, ई अगम्य गति न्यारी पगल प्रमोद 'मोद' मन्दिरमें, निवसू सदा सुखारी॥

॥ पद ॥ (२२०)

श्रीसियप्यारी ये, परम मंजु अछि अहाँक कंज दृग कोर। प्रीतम टकाटकी लगौनहि रहै छथि, श्रीसियप्यारी ये०। जनि मुख-चन्द्रक चकोर। कर पर चादर चरण धरि सादर; श्रीसियप्यारी ये०॥ चित्रित करैछथि चितचोर॥ परम सौभाग्य गुनि आनन्द झुमैछथि, श्रीसियप्यारी ये०॥ चुमैछथि प्रेम विभोर॥ मकृका कपोल कंठ केसर कस्तुरी श्रीसिय०। ठगैछथि तिल दै सुठोर॥ उमगि-उमगि अंगराग रंगैछथि, श्रीसिय०। रंगि अनंग रस बोर॥ ततसुख सुखी रूख रखिते रहैछथि, श्रीसिय०॥ नैनहि भरने निहोर॥ नख सिख साजही में हाजिर रहैछथि, श्रीसिय०। 'मोद' रसिक सिर-मौर॥

॥ पद ॥ (२२१)

प्यारी जू प्रीतम अहाँक प्रेमवस, कहु की की नै करैछथि ये। अनुछन छटा छकैत रहै छथि, एकटक पल न टरैछथि ये॥ छथि अव्यक्त, व्यक्त बनि चरण, अलक्त भरैछथि ये। अति आशक्त जकाँ, उन्मत्त जकाँ, मस्तको धरैछथि ये॥ पाटी-सिटैछथि, चोटी गुहैछथि, टुटक डरैछथि ये। अपना जुलुफ सँ सौगुण कोमल, गुणि मन लाज मरैछथि ये॥ लीलहुँ कृपाकोर मोरिते, पद पद्म परैछथि ये। सीता जापक जनके ऊपर, अतिसय 'मोद' ढरैछथि ये॥

॥ श्री युगल झाँकी ॥ (२२२)

हैं परम प्रेम रस प्यासी ये। त्यों सुखमा सरस उपासी ये॥ इनकी सुखदानि यही रसखानि यही। पिय याते परा सुख रासी ये॥ दय मादक पान मुसुकनि उन्मत्त करैं। त्यों श्री हिय कंज विकासी ये। ये छिन छिन प्राण न्योछार पबावति ये। पट लै श्रम सींकर नासी ये॥ प्रेमिन प्रभुपद परसावनि ये। करैं। त्यों खुलि-खुलि करत खबासी ये॥ त्यों 'मोद' संत विश्वासी ये॥

॥ पद चैत ॥ (२२३)

एकटक हेरैं, प्यारिहुँ पलक न फेरैं हो रामा॥
चारिहु चख चखि चारु माधुरी, ह्वै रहे चरणन चेरैं॥
मति गति थकित भये दोउन के, अंसन भुज गर गेरैं॥
श्री चन्द्रकला श्री चारुशिला अरु, हेमलता अलि घेरैं॥
'मोद' मगन श्री माधुर्य्य लतिका, वारति इतर फुहेरैं॥

॥ पद ॥ (२२४)

दोउ दोऊन पै न्योछाय रहैं। हुलसाय रहैं पुलकाय रहैं॥ छ
छाकि पिया टक लाय रहैं। लखि रूप प्रिया उमगाय रहैं॥ दोउ फू
नाहिं समाय रहैं॥ हु०॥ पिय पान पवाय के पाय रहैं॥ प्यारी फि
इतर सुँघाय रहैं॥ लखतेहु दोऊ ललचाय रहैं॥ हु०॥ गसि के भु
अंस हँसाय रहैं। रस नेहिन हीय रसाय रहैं॥ अलि 'मोद' परान
पाय रहैं॥

॥ पद ॥ (२२५)

रसलम्पट दृग पट चूमत हैं। भरि मंजु मजे जनि जूमत हैं॥
तन दोउ के एकहिं होय रहे, मन दोउ के एकहिं होय रहे, छवि
चाखि चखनि झुकि झूमत हैं॥ रस०॥ प्यारी मधुरी मुसुक्यान करैं,
प्रीतम अधराधर पान करैं, युगकंजन कंजनि घूमत हैं॥ रस०॥ पिय
पीक कपोलनि पोंछत हैं, प्यारी अधरांजन मोचत हैं, रस सिन्धु
'मोद' दोउ डूमत हैं॥ रस०॥

॥ पद ॥ (२२६)

सखि ये उनको, उनहूँ इनको, भरि अंक वंक दृग हेरि रहे।
श्री चन्द्रकला अरु चारुशिला, खिलि खिली युगल मुख गेरि रहे॥
अंग अरस परस, सुखपाय सरस, ह्वै रहे एक एकन के बस, रस

उमरि रहे दोउन नस-नस, पल एकहु होन न बिलग चहे।। मन बुधि चित अहमिति एक भई, दोउन अंग अंग अनंग छई, श्रीइन्दुकला पट ओट दई, लतिका 'सुमोद' लखि सुमुद लहे।।

॥ पद चैत ॥ (२२७)

प्यारी पियरवा विलसत कमला किनरवा हो रामा। श्री चन्द्रकला श्री चारुशिलादिक साजे सुमन श्रृंगरवा, हो रा०।। चातक कीर चकोर कोकिला मोर खड़े चहुँ ओरवा, हो० रा०। प्रीतम विरच्यो प्रिया चन्द्रिका, प्यारी मुकुट निज करवा, हो रा०।। सजि नख सिख दोउ दुहुँन निहारैं, बारैं रति मदन कड़ोरवा, हो० रा०।। छवि छकि छकि अति विथकित भय पिय, नयननि करत निहोरवा, हो० रा०।। 'मोद' निरखि शशिकला रुख-सिय, भइ प्रीतम गर हरवा, हो० रा०।।

॥ पद ॥ (२२८)

अच्छे अच्छे ये सिये, हमरा हरौलहुँ जितौलहुँ पिये।। हम अलसाइत लखि देलिऐन पान, ओ कैलनि कपोल पिकदान।। हमरो मन भेल देमक रंग, दय दृग सयन कैल अहाँ भंग।। हम सोझ कैलिअइन काजरक रेख, ओ धयलेलनि पट दय केस।। हम बजलौं छोरु छोरु एह एह, मन्द मुसुकि बिसरौलनि देह।। बदला एकर लेबैन गुण सात, 'मोद' नै मानत अहाँक बात।।

॥ पद विरह प्रकरण ॥ (२२९)

पिया जु सँ अवसर पाबिक हमरो द, कनै कहवैन ये सियजू। सहलौं सियजू। कपा कोर ला, कलपैतहिं की रहवैन ये सियजू। हुवै निशंक भरि विषम वियोग से सहलौं आव नै सहवैन ये सियजू।। हुवै निशंक भरि अंक युगल पद गहवैन ये सियजू। लतिका, 'मोद' अहैंक दयासँ हुनको लहवैन ये सियजू।।

॥ पद ॥ (२३३)

आज हम हिय मैं मुनका मारलहुँ। मनमति सुधीन नेह अधीन, आशा हिय सँ टारलहुँ॥ श्रीगुरुजनसों मुलय सरस सुनि सह, अभिलाष पसारलहुँ, तरसैत तरसैत तिनपन बीतल, परम निठुर सम सारलहुँ॥ पाटलिपुत्र औ' चित्रकूट मैं, कूटनीति हिय धारलहुँ। लोचन लाल लखाय ललितता, सुधि हरि माहि मै पारलहुँ॥ झलक ललक ललक हिये में, महा अलक बिस्तारलहुँ। पुनि मनमोल बिसारी न बिसरल, बहुतो यतन बिसारलहुँ॥ हृदय हारि श्री सिय स्वामिनि सौ, करि विनय अनुसारलहुँ। 'मोद' स्वामिनी कृपा भरोसे, सैसे अपन सब गारलहुँ॥

॥ चौठारी ॥ (२३४)

ब्याह चतुर्थी आजु आनन्द लहिय सखी।
चारो दम्पति मुखचन्द्र चन्द्रिका चाख चखी॥
राज-महल की चहल-पहल न परै कही।
कंकण-छोरा छोरि आजु होइहैं सही॥
सीय सहेलिनि आनन्द उर न अमाति हैं।
नौशै नेह रंगी रंग प्रगट लखाति हैं॥
गानकला कुशला सब गावन लागेऊ।
पूरण प्रेम पियूष परा रस पागेऊ॥
जोड़-जोड़ कहहिं सुआसिनि व्यंग रहस भरी।
चारो दम्पति सोइ-सोइ करहिं परवस परी॥
इक-इक आसन द्वै-द्वै दिव्य सुहात हैं।
श्याम गौर अरु गोरे श्याम लखात हैं॥
पंच सखी अंग उबटेउ चारो दम्पती।
प्रेमि जनन कहँ प्राण सन्तन की सम्पती॥
कलशन महँ कमला जल ब्याह की रीति की।
धरी रही कोहबर मँह भरि मृगनयनि की।

॥ पद ॥ (२३३)

आब हम हिय में मुक्का मारलहुँ। मनभरि दर्शन देव अहाँसे, आशा हिय सँ टारलहुँ॥ श्रीगुरुबरसौ सुलभ सरल सुनि बहु अभिलाष पसारलहुँ, तरसैत तरसैत तिनपन बीतल, परम निठुर तम तारलहुँ॥ पाटलिपुत्र औ' चित्रकूट में, कूटनीति हिय धारलहुँ। लोचन बाग लखाय ललितता, सुधि हरि महि पै पारलहुँ॥ झलक फलक दरसाय हिये में, महा अलक विस्तारलहुँ। गुनि मनभेल बिसारी न बिसरल, बहुतो यतन बिसारलहुँ॥ हृदय हारि श्री सिय स्वामिनि सौं, कानि विनय अनुसारलहुँ। 'मोद' स्वामिनी कृपा भरोसे, बैस अपन सब गारलहुँ॥

॥ चौठारी ॥ (२३४)

ब्याह चतुर्थी आजु आनन्द लहिय सखी।
चारो दम्पति मुखचन्द चन्द्रिका चख चखी॥
राज-महल की चहल-पहल न परै कही।
कंकण-छोरा छोरि आजु होइहैं सही॥
सीय सहेलिनि आनन्द उर न अमाति हैं।
नौशै नेह रंगी रंग प्रगट लखाति हैं॥
गानकला कुशला सब गावन लागेऊ।
पूरण प्रेम पियूष परा रस पागेऊ॥
जोइ-जोइ कहहिं सुआसिनि व्यंग रहस भरी।
चारो दम्पति सोइ-सोइ करहिं परबस परी॥
इक-इक आसन द्वै-द्वै दिव्य सुहात हैं।
श्याम गौर अरु गोरे श्याम लखात हैं॥
पंच सखी अंग उबटेउ चारो दम्पती।
प्रेमि जनन कहँ प्राण सन्तन की सम्पती॥
कलशन महँ कमला जल ब्याह की रैनि की।
धरी रही कोहबर मँह भरि मृगनयनि की।

पाणि पालो पर मञ्जि वसन भूषण सजी।
नखसिख सुखमा देखि आपसुखमों लजी॥
प्रथम ललन कर कंकण ललिन खोलायऊ।
चारो बहिनि सिर नाय बन्द छिटकायऊ॥
सिद्धि कही प्रिय कंकण प्यारेजु छोड़िये।
जो न छुटै सिय सम्मुख ह्वै कर जोड़िये॥
चन्द्रकला कहि यह न चन्द्रधर धनु लला।
चारुशिला कहि यह न यज्ञ योगवन कला॥
जौंलो न प्यारि को पाणि चतुर वर जोरेंगे।
तौं लो कोटिहु यत्न न कंकण तोरेंगे॥
अलि कराइ कर सम्पुट छाई बहार हैं।
'लतिकामोद' लली जु कि बोली जैकार हैं॥
खोले दुलह चहुँ कंकण छवि छहरेयो सही।
सीयकृपा रसमंजु अली अवली लही॥

॥ वधू प्रवेश ॥
॥ मंगल ॥ (२३५)

मिथिलापुर से अवधपुर आय ब्याहि चारो भाई हे।
छायउ परमानन्द प्रभापूरण पाई हे॥
मंगल सगुन बितान तनेउ, न बनै गाई हे।
जनु तनु धारि उछाह छकित ह्वै रहेउ छाई हे॥
उमगित पुलकित मातनि परिछहिं बलिजाई हे।
चारो दुलहि छवि लखि लखि सुधिबुधि बिसराई हे॥
आरति करि मणि बारहि पुनि पुनि हुलसाई हे॥
गावहिं मंगल 'मोद' सबहिं कोहवर लाई हे॥

॥ तथा ॥ (२३६)

आये ब्याहि चारो भाइ ये, देखो-देखो सखिया।
चारो दुलहि संग आइ ये, देखो-देखो सखिया॥

मंगल कलश सजाइ ये, देखो-देखो सखिया।
चौमुख दीप बराइ ये, देखो-देखो सखिया।
परिछन साज सजाइ ये, देखो-देखो सखिया।
बाजन विविधि बजाइ ये, देखो-देखो सखिया।
संग सखिन समुदाइ ये, देखो-देखो सखिया।
चली कौशल्यादि माइ ये, देखो-देखो सखिया।
गावति गीत सुहाइ ये, देखो-देखो सखिया।
सुनि कलकंठ लजाइ ये, देखो-देखो सखिया।
श्री सरयू पुजवाइ ये, देखो-देखो सखिया।
बहु विधि दान कराइ ये, देखो-देखो सखिया।
लखि दुलहिन बलिजाइ ये, देखो-देखो सखिया।
सुधि बुधि सब बिसराइ ये, देखो-देखो सखिया।
सादर चली लिवाइ ये, देखो-देखो सखिया।
चौके चारु चुमाइ ये, देखो-देखो सखिया।
परमानन्द पुर छाइ ये, देखो-देखो सखिया।
भयो 'मोद' मन भाइ ये, देखो-देखो सखिया।

॥ कवित्त ॥ (२३७)

कमलन की, कुन्दन की, कपूरन कलानिधि की, कामहूँ सबाम कमनीयता पै क्म्पति हैं। चपला ओ चञ्चला की चमकनि ओ दमकनि, अलक झूमक की झलकनिपै झूमि झूमि झम्पति हैं। शेष की, गणेश की, महेश की, गिरा की गिरा, वर्णन करिवे में हिचकी बुद्धि चित्त चम्पति हैं। प्रेमी बुधिवन्तन की, सरस हिय सन्तन की, सम्पति 'मोदलता' की येई दिव्य दम्पति हैं॥

॥ पुनः ॥ (२३८)

प्यारी तकि प्रीतम जू मन्द मुसुक्यान किये, दिव्य दसनन की दमक दमक्यो दमाक से। चन्द्रमासे, चपलासे, चमेली चञ्चला से

चारु, युगल मुखचन्द चमक चमक्यो चमाक से। अंसन भुज धा
कह्यो प्यारी हहाँ प्राण प्यारे, मुख वास गमकि गयो गमगम गमाक
परस्पर मोड़ि मुख मुसुकनि करत 'मोद', कुण्डल ओ झूमक झमा
गो झमाक से।

॥ पद ॥ (२३९)

येरी सखि मेरी, देखु श्याम गोरी युगल जोरी, सुठिताके ठी
जीव जीवन यह ठीके हैं। ठीके हैं मनचित बुधि, अहमित हरण हा
इनको निहारी कहो, को-को नहिं बीके हैं। बीके हैं दुलहिन क
बननि विलोकि वर, जासु रोम-रोम पै करोड़ों रति फीके हैं। फीके
हैं स्याम, रैनि उज्ज्वल इंजोरी बिन, 'मोद' त्यों किशोरी मुख, प्रीतम
ते नीके हैं।।

॥ पुनः ॥ (२४०)

येहो प्राणप्यारे प्राणप्यारीजू के संग सदा, प्रेम रंग रंगिके
अभंग सुख पाते रहैं। पाते रहैं पान प्राणनीजू को पवाय प्रथम, लखि
प्रफुल्ल बदना को, फूले ना समाते रहैं। माते रहैं नेह की नसा में
अहनिसा दोउ, नेही निज जनके चख चखनि चुभाते रहें। भाते रहैं
भावती के संग उमगाते रहैं, 'मोद' हिय मन्दिर में मन्द मुसकाते रहैं

॥ पुनः ॥ (२४१)

स्वामिनी गुणागरि ये किंकरी की हाथनि को, दीजिये धराय
निज प्रीतम के हाथे से। जौलौं नहिं दयादृष्टि दयालुनी तिहारी होति,
तौलौं कोठ कैसो होय फिरैं बिललाते से।। प्रीतम सुजान तिन्हैं
प्राणसम जानैं भली, भाँति सम्मानै तेरी तनक रुख पाते से। माफ
कीजै 'मोद' खता, चरण से न कीजै, जुदा, नेह नजर हेरो सदा नेहर
के नाते से।।

॥ कवित्त ॥ (२४२)

उनके ये प्राण, तैसे इन्हूँ के वे हैं प्राण, सुन्दरि सुजान जान एकैं देह दोहैं री। उनको पीताम्बर त्यों, इनको भावैं नीलाम्बर, वे हैं मनमोहन ये मोहनो को मोहैं री॥ दीने गलबाँह भरे चाह सिय-सियनाह, चहुँ दिसि सहचारिनि टकाटकी बाँधे सौहैं री। 'मोद' वर्षावैं परानन्द सरसावैं जब पीय प्यारी प्रेमपगि परस्पर जोहैं री॥

॥ कवित्त ॥ (२४३)

लालजू के मुकुट में अँटकजा ऐ मेरे मन, लली जूकी चन्द्रिका चिताओ तो तूँ प्रेम से। लाल-भाल केसर, लली की भाल चन्द-विन्दु, लालजू तमाल तरु लली लता हेम से॥ लालजू लुभावें मन मोल विन हेली सुनौं, इनहू के मन को लुभावैं लली छेम से। लालजू के ललीजू के संग की सहेलीजू के रूप ध्यावो गुण गाओ नाम जपो नेम से॥

॥ कवित्त ॥ (२४४)

वार्‍यो स्वायम्भुव निज सुतहित वरदान याच्यो, वार्‍यो अवधबासी देखि स्याम गौर जोट हैं। मिथिला नर-नारि सारे तन मन धन वारि डारे, वारे परसु धारे जो सिधारे वन ओट हैं। औरन को गिनति गिनाऊँ कहाँ देखत, रजनीचरहुँ वारे जोकि रहे खल खोट हैं। श्रीदसरथजू के ढोटो को चितवनि के चोट लागे, 'मोद' ऐसो कौन जो न होत लोटपोट हैं॥

॥ कवित्त ॥ (२४५)

ये उनपै उनहूँ इनपै बलिह्वै बलिह्वै मुद में पगते हैं। ये उनके रुख राखैं सदा हेलि ओउन राखन में खगते हैं। पै मिथिलेश

किशोरि छटा अवलोकि लला अति हीं ठगते हैं। 'मोद' जो पौ
कहों छवि में तो लली से लला लघु ही लगते हैं।

॥ कवित्त ॥ (२४६)

येही हो हीय हूँ हुजूरी में विदेहजा की, चाखति चख चाँद
चकोरिका-सी नेही हो। नेही हो निहारि रहे नाह गलबाँह दिये, प्या
हूँ हेरैं तन मन एके ही हो। एके ही होवैं दृढ़ निश्चै हूँ किशोर जू के
नाम की रटनि उर टेक टेकही हो। टेकेहीं होवै न टूटैं पल में
'मोद', शायद कहैं तेरी साँस आखरी न येही हो॥

परिशिष्ट

कीर्त्तन-प्रेमी यदि चाहें तो इन पदों को भी अवसरानुकूल गाकर प्रेमानन्द प्राप्त कर सकते हैं-

॥ मटकोर के पश्चात् हास्य पद ॥ (२४७)

रानी कौशल्या अवितथि जखनहिं, रानी कैकेयी अवतथि
जन्म लेमक फल पवितथि जखनहिं, रानी सुमित्रा अवितथि॥ जनक-महल
महँ डेरा करितथि, कोमल पलंग ओछवितथि। तोशक तकेआ ललित
सजवितथि, विविध सुगन्ध सिंचवितथि॥ जखनहिं॥ षटरस व्यञ्जन
रुचिर बनवितथि, थार कटोरि धरवितथि। सादर सीरध्वजहिं पववितथि
विहँसैत बिअनि डोलवितथि॥ जखनहिं॥ कमला-जल आचमन
करवितथि अंचल सौं अँगुछवितथि। प्रीति-सहित मुख पान खोअवितथि
बसननि अतर लगवितथि॥ जखनहिं॥ सुरंग दोसाल ओढ़ा-ओढ़ि
सुतितथि सरस प्रेम दरसवितथि। धैकर कर कंजनि परसवितथि
'मोद' सुमुद सरसवितथि॥ जखनहिं॥

॥ झाँकी ॥ (२४८)

मनमोहनि सिय के मोहना मोहनी डारे हो राम।
हँसि-हँसि मारे नजरा कजरा धारे हो राम॥

चित्रपूतरी सी करैं, करते इशारे हो राम॥
छवि छहराय छोड़ावैं, अपनो परारे हो राम।
'मोद' बनापै को ना तनमन वारे हो राम॥

॥ शुभ-सिद्धान्त ॥ (२४९)

सिय प्यारी रघुलाल के ललित पगतल पल न भूलरी न भूलरी न भूलरी। छिन-छिन छीजत है आयु ज्यों अंजुलि जल। मृत्यु मुँह बाइ खाइ चाहति भम्होरि भल॥ भोग रोग सोग ज्वाल, तू तूलरी तू तूलरी तू तूलरी॥ धारू नमताई, छमताई शुचि समताई, हरदम हिय मुख रहु नाम रट लाई 'मोद' शिवमत यह सुख मूलरी सुख मूलरी सुख मूलरी॥

॥ पद ॥ (२५०)

दमकैछैन केहन अति दिव्य दमक सखि देखिऔन अखिऔनये। सतकोटि शशिहुँसौं रम्य रमक सखि देखिऔन देखिऔनये॥ छन छन छहरैछैन नव्य छटा, सौदामिनि श्रावण स्यामघटा, कुलकानि घटा मन मान हटा, हियहोइऐ लखी दृगकै अपटा, पटरचलविरंचि सुबुद्धिकमक॥ सखि०॥ ऊहिनका लखि ईहुनका लखि, न्योछावर होइछथि चितवन चखि, भुज अंसन रखि, भुज अंसनि रखि, दोउ लटपट प्रेम में ज्यों मधुमखि, उपमा नै भेटैऐ कहूकी समक॥ सखि॥ पबवैछथि पान सु प्राणनिके, कर प्रीतमहूँ सिया स्वामिनिके, दय इत्र पवित्र सुमाननिके, ई सुँघिलैछथि शेष सुभाननिके, उन्मादक मुग्ध करैऐ गमक॥ सखि०॥ ई हुनकर सुख ऊ हिनकर सुख, सदैव रहैछथि रखितसिंरुख, लखितो नै मेटैछैन लखवाक भुख, अतएव रहैछथि संगसन्मुख, अलि 'मोद' ठगायल रहैछथि ठमक॥ सखि०॥

॥ तिर्हुत पद ॥ (२५१)

आजुक सपन सखिहे कहू हमकी, माधुरि सीये सीये पी, कहक युगल कैने एक्के हीयेजी॥ चित्रितचारु चामीकरक पर्यंक,

चंचल ललित सुलंक, कोक कलाकल कुशल निशंक॥ [illegible]
क्वणन करैं कटि कींकिणिक नाद, जगावैं मदन आह्लाद, [illegible]
लहिप्रीति रसस्वाद॥ नखरद छत अंजन पानक पुनीक, [illegible]
ललित सु लीक, सुखमा बढ़ावै सौगुण रमण रमणी के॥ [illegible]
छायल 'मोद' रोम रोम रंग, पति गति अति पेल दंग, [illegible]
खुलि कैल सुख भंग॥

॥ बरहमासा ॥ (२५२)

अब छारि ससुरार, कहाँ जैहौं सरकार, पिया रहि [illegible] मिथिला नगरिया में। आव आएल पूस मास, हिय [illegible] हुलास, सब साजु सुख रास ससुररिया में॥ माघ शिशिर सुहाइ, लइहौं [illegible] रजाइ, जाड़ा लगने न दूँगी वेअरिया में। फागुन फगुआ खेलायब, [illegible] घोरिक लेआयब, रंग धरि-धरि रँगिहौं, पिचकरिया में॥ चैत मास रितुराज, फूले कुसुम दराज, गजरा गूँथि-गूँथि, गँथिहौं सुगरिया में॥ माह आयउ वैशाख, तन तलफन लाग, छयला [illegible] छतरिया में॥ जेठ तपतलि वात, घाम सहलो न जात, पिया चलने न दूँगी डगरिया में॥ माह आयट अषाढ़, बुन्द बरिसैं अपार, छटा-छट के लखइहौं कोठरिया में॥ आई श्रावण की बहार, करिहौं झूला के तैयार, झूला झूलइहौं मैं, लली फुलवरिया में॥ भादव भरे नदी नाल, नौका रचिहौं सँवार, झुमि-झुमि झिझरी खेलैहौं कमला [illegible] में। आसिन सरद वहार चन्द चाँदनी झलकार, रास रचैहौं मैं [illegible] मझरिया में॥ कातिक दुतिया मनायब, [illegible] बोलायब, [illegible] मोदक पवैहौं मणिथरियामें॥ अगहन उत्सव रचायब, गारी दे दे के जेमायब, मुद अस कहाँ जस ससुररियामें॥

◆◆◆

॥ श्री गुरवे नमः ॥

॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्रीचन्द्रकलायै नमः ॥

॥ पद ॥

जय गणेश श्रद्धा उपदेशक, जय जय उमा उमेश हमारे। जय श्री रमण श्याम नव घन तन, जयति जयति जय जयति तमारे॥ जय मिथिला जय अवध सन्त'जन, जय सियराम जापकन सारे। जय कमला विमला कंचन वन, जय प्रमोद सरयू अघ हारे॥ जय वरसाने जय व्रज यमुना, जय नटनागरि नागर प्यारे। जयप्रभु नित्यानन्द गौरहरि, नाभा तुका जो नाम प्रचारे॥ जय श्री कागगिरा गंगा जय, तुलसी सूर सुयश विस्तारे। जय शुक व्यास सबरि जय मीरा, जय नारद वीणा झंकारे॥ जय प्रह्लाद सुतिक्षण जय ध्रुव, जाको तिहुँपुर वजत नगारे, सव मिलिदेहु 'मोद मंजुलवर, प्रभु पद तजि पल होउ न न्यारे।

॥ पद ॥ (२)

मन तू भला तव जब वृथा संकल्प सबको छोड़दो। चित चतुरता तेरी विषय अंकुर निकरते तोड़ दो॥ बुधि है बड़ाई तबहि जब सर्वेश ही की ओरदो। है 'मोद' तेरी तब जो निजको प्रेम में सर बोरदो॥

॥ पद ॥ (३)

जबलौं नहीं जन जाहुरीकी, संग सादर करहुगे।
श्रद्धा सहित उपदेश उनके, सुनि उरन्तर धरहुगे॥

वहु दौड़ने वाली विषय की, ओर से मन अरहुगे।
तौंलो नहीं तू 'मोद' परमानन्द सुख में परहुगे॥

॥ पद ॥ (४)

सत्ता सर्वत्र समान उन्हींकी, छाया छाय रही है अग जग में। सबको अपने में रमा रहे, रम रहे आप सब रग रग में॥ अस सर्वेश्वर का भजन करें, सिद्धान्त यही सब मग मग में। जो पक्का होके पकड़ लिये, परमानन्द तिनके पग पग में॥

॥ पद ॥ (५)

सहनकरि भृगु चरण विष्णु, सहिष्णुताइसिखादिये। कौ रिक्ष कपियों से मिलन, श्रीराम मेल दिखादिये॥ उपकार सार कपोत गृद्ध दधिचि लिखा दिये। धन धन सनातनधर्म क्या, सुख शान्ति सुधा चिखादिये।

॥ पद ॥ (६)

सहि भृगु चरण जनौलनि सह तूं, सह के उल्टा हसते रह लपकि चरण गहि लमें सिखौलनि, लमें उलट के वसते रह॥ दया चहैतो दयाके उल्टा, नाम कसौटी कसते रह। करुणा-निधि के गुण गण, गुनि गुनि 'मोद' अली तू मस्ते रह॥

॥ पद ॥ (७)

जगमें सबसँ हमहीं काबिल, कहबञ्त केओ की करतो। वारंडी अंडा बिस्कुट तू चहब त केओ की करतो। पाखण्डी बनि हविमुख भजनसँ, रहब त केओ की करतो। अपने सँ अपना के लाहेब, करब त केओ की करतो।

॥ पद ॥ (८)

टसकि मसकि नहीं सकः, सिकस्ती मेसे सुधि बुधि बिसरौआ। रह आन भय गेल आन, छल हंस हाय भेलह कौआ। इत जोरैछ तों हौशला महल, उत कौर करैछो कालहौआ। लौये पोये में लय लेतौ।, ई मृत्यु अचानक हौ चौआ॥

॥ पद ॥ (९)

कीर्त्तनमें अविते सिरनावी बनै त परिकऽकरी प्रणाम। झाँकी में झट आँखि लगावी, गावी उच्च स्वर सौं नाम॥ श्रद्धासँ सूनी सत मानी, ये हे कर्म भूमि के काम। जाइत समय भूलि नहिं पहिरि, अनकर खरपा जुता खड़ाम॥

॥ पद ॥ (१०)

अयला वहुत सभ्य जन सादर, प्रभुसौ प्रेम लड़ावन ला। वहुतो अयला राम रटा रटि, और स रटन करावन ला॥ केओ-केओ अयला झाँकी झाँक, अन्तर छटा गड़ावन ला। भगवन् भूलि न आवथि दुर्जन, खरपा जुता खड़ावन ला॥

॥ पद ॥ (११)

अब तू मत भ्रममें भटके, मनरे। रंगे रहो सिय राम रंगमें, सियाराम रट रट के॥ पल-पल परखत रहो चित्तको, वकवादन से हट के। बुद्धि विचारो तेरो जीवन, काल जात गटके॥ लगेरहो सेवा सुमिरन में, उर मन्दिर में, डटके। सहज भाव लखि अवसि रीझिहैं, वासी घट घटके॥ यह शिव मतहै सुखमय मारग, आजाओ बेखटके। 'मोद' अगर परमानन्द चाहै पल पल पर टटके॥

॥ पद ॥ (१२)

बन रसिया सियबर रसके, मनरे। युगनि गयो जनमत जोनिन में, बसह्वै इन्द्रिन दसके। छुटन चहै तो सतसंगति की, करोहिये चसके॥ काल व्याल तोहि निगल रहा है, गालों में गस गस के। ऐ मेढ़क तू विषय चींटियाँ, पटकत हँस हँस के॥ भला चहो सतगुरू चरण पर, त्राहि कहो खस खस के। युगल रूप में ललक बढ़ाकर नाम रटो कसके॥ सावधान अति रहो चित्त पर, अनत नहीं कहिं घसके। रहैं तरसती श्रवण पपीहा, स्वाती युगल यश के॥ भ्रमहुँ अनत मत 'मोद' के मनुआँ उर मन्दिर रहुवसके। युगल छटा टकटकी लगाये, पलहू ना टसके॥

॥ पद ॥ (१३)

जौं चाहैं परमानन्दे, मनरे। तौं रटु नाम ध्यान करु अन्तर, सीतापति सुखकन्दे॥ गुणगण गुनि गुनि प्रमुदित पुनि पुनि, गाउ सुकीरति छन्दे। संत संग रंग सदा रंगे रहु, छारु संग गन्दे॥ पर उपकार प्यार भरि भरि करु, तनदे मनदे धनदे। सबमें प्रभु गुनि सबहिं आदरु, त्यागु द्वेष द्वन्दे॥ नाम रटन बिनु कटैन कबहू, कठिन मोह भ्रम फन्दे। औरन को को कहैं त्रिदेवा बने राम बन्दे॥ 'मोद' दयामयि जनकनन्दिनी, दसस्यन्दन फरजन्दे। उर मन्दिर में नेह सेजसजि, सेउ युगल चन्दे।

॥ पद ॥ (१४)

मन सियाराम के रंग में, आव रंगैबे कहिआरे। तजि सब कुतर्क सुमिरणमें, समय बितैवे कहिआरे॥ तू रहे महा दुर्गन्ध अँधेरी, में उल्टा टंगिके। ऊ महा कष्टके कौल विचारि, लजैवे कहिआरे। हो विषय वासना बस कैले बहु, जगमें फन्द फरेव। तजिके कुसंग अब

संत संग में, अयवे कहिआरे।। धन धाम वाम आराम में जीवन, देलें बिता तमाम। श्रीराम भक्त में अपना नाम, लिखैवे कहिआरे।। श्रद्धा समेत रटि 'मोद' नाम, लहि युगल चन्द अभिराम। निज चख चकोरि के, चान्दनि चारु चखैवे कहिआरे।।

।। पद ।। (१५)

राम भजन कर झटपट अरे मन, चलदेवें तू चटपट।। निर्मल ईश्वर अंश रहे पर, आप लगौले लटपट। इन्द्री जीभ के बस भेलासे, भैगेलौ सब गटपट।। रामभजन सब गटपट काटैं, ओ मेटैं सब अटपट। अबहु चेतन बिता सुऔसर, छन-छन पल-पल रट-रट।। जकरा सुखके खातिर कैले जग में सबसे खटपट। सेहे कहतौ घर भरि आइअ, लैजैतौ मरघट चट।। जे दिन गेलौ जायदे अबहू, तजदे मनके कटमट। 'मोद' अगर तू मुद चाहैतो ओठ सदा कर पटपट।।

।। पद ।। (१६)

उठल जाइत छौ पेठिआ अरे मन, झटपट सौदा गेठिआ।। जरैत रहे तू मातु पेट में, जैसे काचके भठिआ। बाहर होइते धारण कैले टारमटोर अँगैठिआ।। जोर जुलुम कै वित्त बटोरले, लै लै सबसे लठिआ, छन भर में सब सम्पति छुटतौ छोरे पड़तौ मठिआ।। हहा हींहीं में मौज मानले अरे नीच मन सठिआ। जमगन बाँधि छोरौतौ ठेमस, ठोकतौ ठोठिआ ठोठिआ।। राम भजनमें सुरति अचलकर, छोर कुमति मन हठिआ। 'मोद' अन्त केयो घुरियो न तकतौ, भगतौ दै पचकठिआ।।

।। पद ।। (१७)

अरेमन रट रट सियराम रटिआ। रटबिन सबही मटिया।। रटे कहि अयले कौल भुलैले, ठठले औरहि ठटिया। शण्डा मर्क पाठशाला

के, चावसे बनले चटिया। दया दान उपकार भुलैले, प्रीतमपुरवे बटिआ। रैन दिवस हिय शौक बढ़ैले, लेडिआ चोटिआ खटिया। अपनाके कबहू नहिं मानले, ककरोसे कनि घटिआ।। सन्तन देखि मजाक उड़ैले, बाद बढ़ैले डटिआ। 'मोद' द्रव्यहित सर्व बिसार ले, केतक उजारले टटिआ। अंतमें तोरा नामपर टंगतौ पिपर डार कुश कटिआ।

॥ पद ॥ (१८)

जिअरा औचक में चलिजैवे, कुछ जगत्योति जगाले रे।। प्यारे सियाराम प्रेमिन पद, परि परिप्रेम पगालेरे।। समताई से हिया सजाले नमता ला लेरे। रसना नाम में सदा चलाले यही सुख की आलेरे।। याद जमाले वाद भुलाले, चल मत खाले रे। अपनाहित अनहित अजमाले, प्रभुमें लगन लगालेरे। गुण गण गाले, हिय उमगाले, नेह नहाले रे। भ्रमवस भटके बहुत बेहाले, अब प्रभुभक्त कहाले रे।। श्रीसियलाले, अहैंनिराले, जनप्रतिपाले रे। 'मोद' निरन्तर नाम को गाले अन्तर रूप बसाले रे।।

॥ पद ॥ (१९)

सियपियपद प्रेम बढाउ ये सखी। आउ आउ आउये सखी।। प्रीतम प्रभुसौं संगफुट भेल, एकसौ बारह युग बितिगेल, परिते विषय वासना झेल, सबटा उसरि गेल सुख खेल,-से मन सुमरि सुमरि क, सरमाउ ये सखी।। जौंहो होमक भवसौं पार गुरुसौं लिअ पंच संस्कार, श्रद्धा छमा दया रुचि धार, झटपट त्यागु कपट व्यवहार,-तृष्णा अहमिति तिल तिल नसाउये सखी।। जौं आब चाही वेगि दिदार, सुमिरण करिते रहु एकतार, हियमन्दिर में आसन डार, पूजन करु षोड़श उपचार-नखसिख सुखमा में सुरति जमाउ ये सखी।। प्रभु छथि

सबविधि पूरण कामी, करुणानिधि उर अन्तरजामी, लखता नामनेह शुचिस्वामी, औता दौड़ल अपने नामी-'मोद' ललकि ललकि लाड़ लराउ ये सखी।।

।। पद ।। (२०)

छन-छन सुमिरण करिते रहुरी। सीताराम चरण चिन्तनतजि, रंचहुँ औरन चहुरी।। गुण गण गुनि गुनि प्रमुदित पुनि पुनि, युगल नाममुख कहुरी। सुखप्रभु कृपा दुःख दोपक फल, ई विचार दृढ़गहुरी।। तृष्णा विषय प्रबल धारामें, भूलिहुँ के मति बहुरी। सतसुरेश वैभव सुख सहजे, सन्तोषहि में लहुरी।। सदा सजाती संत संग करि, भरि भरि भाव भजहुरी। 'मोद' सदा मानस मन्दिर तजि अनत न जाहु कतहुरी।।

।। पद ।। (२१)

सुमिरन करिते रह छने छन, रह पयव हइये न। कफ पित वात कंठ घेरतो कुछ, कह पयव इहये न।। प्यार कर परिवार के केतो, तोहर होयतो हइये न।। उत्तर मुड़कर जादिन सोयव, कोइ संग सोतो हइये न। भाइ भतीजा कुटुम कवीला, साथे जयतो हइये न। धयल धरोहर चानी मोहर कामें अयतो इहये न।। सहनशीलता समता नमता, तूँ हिय लयव हइये न। 'मोद' युगल सुमिरन बिनु कबहूँ, तूँ मुद पयव हइये न।।

।। पद ।। (२२)

अगर अपन कल्याण चाही त, करिते रहु सियवर सुमिरन। सबविधि सुख सम्मान चाही त, करिते रहु सियवर सुमिरन।। जौं

ज्ञानिहुँके ज्ञान चाही त करि देखन सुखमा खान चाही त क०॥ मन्दमधुर मुसुकान चाही त क० अलक झुमक झुलकान चाही त क०॥ दोउन दृगनि मिलान चाही त क० दम्पति दयामहान चाही त क०॥ 'मोद' जानकीजान चाही त क० परम प्रेम रस पान चाही त क०॥

॥ पद ॥ (२३)

भरतखण्ड में जनुजदेह धय, धर्म नै मानल तौं धिक धिक। शिव शंकर कोन जाप जपै छथि, सेहो नै जानल तौं धिक धिक॥ मातु–पिताके जी न जुड़ौल, औ कलपौल तौं धिक धिक। पर के दोष नै देखि दुरौल, सहन नै कैल तौं धिक धिक॥ बड़ जनके लखि सिर न नवौल, अदब नै कैल तौं धिक धिक॥ वृथा लाप में चाव बढ़ौल, समय गमौल तौं धिक धिक॥ सद्गुरु खोजि शरण नहिं अयल, भ्रम वश भेल तौं धिक धिक। रामचरित मानस नहि गयल, 'मोद' न पैल तौं धिक धिक॥

॥ पद ॥ (२४)

सिय रघुवीर लगनियाँ ये, चाहै सो लगाले। औसर सेत जात नहिं चेतत, डसिरहि काल नगिनियाँ ये॥ हम हम तुम तुम पाठ पढ़ाके, ठगिरहि माया ठगिनियाँ ये॥ औचक आय झपटि झट लीहै, निठुरी मौत बधिनियाँ ये॥ 'मोद' चहै मुद तौं निर्भर ह्वै, नाम रटो प्रेम मगनियाँ ये॥

॥ पद ॥ (२५)

भेटें भगवन्त जब सन्त सँगपागैरे। संत संग पागैं बिनु रंगनाहिं

लागैं रे॥ दोषदुःख दूरिकरितारत अछत तन, पदरज परसत भव भय भागैरे॥ अकरन करन करन करैं अकरन, प्रबल प्रभाव युग युग जग जागैरे॥ वेदसिन्धु मन्दर विचार मुनि वृन्द मथि, सतसंग अमि पाय रहैं अनुरागेरे॥ सियाराम रसिक सुसन्तन के सदा साथ, जोरि हाथ नाय माथ 'मोद' अलि माँगै रे॥

॥ पद ॥ (२६)

सुमिरण करु गुण प्रेमसे, सियवल्लभजू की।
सुर दुर्लभ तनु पायके चलिये नहिं चूकी॥
सोचु अजामिल की कथा, प्रह्लाद ओ ध्रूकी॥
भिल्लिनि औ गज गृद्धकी, अरु पाण्डु वधूकी।
पाप पुञ्ज गणिको तरी, जो पढ़ायेउ शूकी।
तू न पढ़ै कस प्रेम से, मन तोहि कहूकी॥
सेन यवन अरु सादना नहि कर्म कछूकी।
लावत कंठ लिखाद को नहिं ने कहु मूकी॥
पाय सुगति मुनि नारिहूँ, रजपाय प्रभूकी।
'मोद' तुहूँ मुद पाय हौ शरणागत दूकी॥

॥ पद ॥ (२७)

हरदम सियाराम बोलये, सरकारी मयना।
जीवन होरहि गोलये, सरकारी मयना॥
तन पिञ्जरमें क्या सुख माने, काल वाज रहि डोल ये॥ सरकारी०॥ सोवतहीं बहुतो दिन बीते, अबहू अँखिआ खोलये॥ सर०॥ चमक दमक सबही भुलि जइहैं, खुलि जइहैं सबपोलये॥ सर०॥ 'मोद' चहै मुद तो पीआकर, नाम अमी रस घोलये॥ सर०॥

॥ पद ॥ (२८)

सियराम रटले ऐ तोता। उड़जाना होगा तज खोंता॥ काल वाज तोहि निगल रहाहै, तबहू तू निरभय सोता॥ ओचकहीं अपने

वस करिहैं, मृत्यु मंजारी दै गोंता।। विषय बाग विहरत सुखमाने, अबपिञ्जरपरि क्या रोता।। जन्म जन्म की प्रबल कालिमा, क्योन नाप जल से घोता।। 'मोद' सहज सुख भागी होता जौं भजि फसरी निजफोता।।

।। पद ।। (२९)

सियाराम, सियाराम, सियाराम, सियाराम, सियाराम, सियाराम, सियाराम। हरदम हियमुख रटते रहिये, जोपै चहिये विश्राम।। नामहिं सुमिरन सर्वोपरि हैं कहैं अथर्व ऋग् यजु साम। सद्गुरु से ले सादर भजिये, तजिये नानामत वाम। उर मन्दिर सुन्दर आसन सजि, निबसा दम्पति अभिराम। युग चन्द चन्द्रिका चखा करैं, करि चख चकोरि वशुयाम। ऐ 'मोद' शम्भुमत मारग ये, पहुँचावत अविच्चल धाम। जो चली चलैं यो भली भलैं, हैं आदि मध्य परिणाम।

।। पद ।। (३०)

यहाँ ऐश आराम में दिन गये सब। वहाँ के लिये कुछ करोगे कहो कब।। जो एक बूँद पानी से ऐसा सजाया। तिन्हें नाम लेते हिलाते न तू लब।। जो संसारी भोगों को सौभाग्य जाना। सो दो दिन में होवेंगे आपहिं निरस नव।। भजो सीयवल्लभ जो चाहौ भलाई। अरी 'मोद' जौं ना भरमना चहैं भव।।

।। पद ।। (३१)

सियाराम में रमजा ऐ मन, सियाराम में रमजा ऐ। किया नहीं क्या क्या तू कामना, अबहू तो कुछ कमजा ऐ।। जिआचहै जोहन रंगत तो, सतसंगतमें जमजा ऐ। हिआ हमेंसे हरि सुमिरण करि, चरण कमल पैलमजा ऐ।। पिआ स्वभाव सील सुनिके चित, चंचलता तजि घमजा ऐ। लिया चहै जो परमानन्द तो 'मोद' मानजा थमजा ऐ।।

॥ पद ॥ (३२)

जो कोई लौ लावे ऐसो, जोकोई लौलावे॥ क्यों न, 'मोद' मुद पावै, ऐसो जो कोई लौलावे॥ बहुत दिवस दुखदियो वासना, याते मनहिं घिनावै। सम सन्तोष दया विवेक हित, हियमें शौक बढ़ावै॥ शुभ कामना धारि सद्गुरुसौं, भजन भावना पावै। होरहि गर्जन युगल नाम की, तामें चित्त रमावै। ज्यों ज्यों चित पीवैं नामामृत, त्यों त्यों अचलइ आवैं। भक्त वत्सल भगवान छटा तब, पटअन्तर दरसावै॥ मन वच क्रम सो धारि नम्रता, सन्तप्रयाग नहावै। 'मोद' महामुद पाय उरन्तर, तन रहते तरजावै॥

॥ पद ॥ (३३)

अब त-सियाराम सियाराम सियाराम सियाराम सियाराम कहवै। अपना रामजीके चरण शरण में रहवै॥

श्रुतिचारिहुँ के अछि सार येहे॥
सबप्रमिन प्राण अधार येहे।
कसिके उर अन्तर में गहवै॥ अब त॥
शुभ आयु छनै छनै जा रहलय।
अरुमृत्यु दनादन आ रहलय।
सर हित सदा चित्त सौं चहवै॥ अब त॥
विमुखी कतनो उपहास करथु।
आपत्ति सबै किन आयपरथु।
सम्पत्ति विपत्ति सबै सहवै॥ अब त॥
अब निर्भर ह्वै सियराम रटव।
सत संगति में नित जाय डटव।
अलि 'मोद' उरन्तर मुद लहवै॥ अब त॥

॥ पद ॥ (३४)

श्रीराम नाम के जापरे सर्वापरे सर्वापरे॥ व्याधोके ब्रह्म बनयलनि,

कागोके पंडित कैलनि-जग जानै यह परतापरे।। सर्वापरे।। यवनो के धाम पठयलनि, यम गण के अकिल शठयलनि-छथि नामें नामी आपरे।। सर्वापरे।। यवनो के धाम, पठयलनि, यम गण के अकिल शठयलनि-छथि नामें नामी आपरे।। सर्वापरे।। विषअमी अमीविष कैलनि, चटपटे समुद्र सुखैलनि, यहिसौं हर हरैं सन्तापरे।। सर्वापरे।। छथि अर्ध ऊर्ध औ भूपर, नामेंसब वर्णक ऊपर, 'मोद' अन्त येहे सत थापरे।। सर्वापरे।।

।। पद ।। (३५)

सियाराम सियाराम सियाराम सियाराम सियाराम सियाराम रामये। बिनु सियाराम के, जीवन कौन कामये।। चारिहुँ श्रुतिके सार केवल, सियाराम सियाराम रामये। प्रेमिन प्राण अधार केवल, सियाराम सियाराम रामये।। परम ब्रह्म परमेश्वर केवल, सियाराम० सर्वोपर सर्वेश्वर केवल, सियाराम०।। सतचित आनन्द रूप केवल, सियाराम०। तारक अमल अनूप केवल सियाराम०।। 'मोद' के परमाराध्य केवल, सियाराम० सुचिसनेह सौं साध्यकेवल, सियाराम०।।

।। पद ।। (३६)

दीन बीतल जाइछौ भजन कब करब। भजन बिना फेर फेर भव परब।। आइत बुझाइछोकि हमरा सन कोइ नहै, पल भरमें आँहि आँहि उँह उँह कहरब।। जेकराके मोह में तू आन्हर बहीर हत, साथीन होतो जौं नाको दररब।। जे जीवके खाइ छहू सान रान्ह तर तर के बदला सधैतो त छटपटक मरब।। 'मोद' मुद चाहत, शीव सिखवन सिख, राम रंग भरब जौं राम राम रटब।।

।। पद ।। (३७)

अयब त आब आब आबहे सुगना। सियाराम सियाराम सियाराम रट लाबहे सुगना।। सियवर नखसिख चिताब हे सुगना।

बितलो से बितलो बिताब न हे सुगना।। पेटके सकेती में तूँ कयल करार इहमाँ अवैते तू भेलह फिरार।। आ०।। उँहमा अन्हारी में रहल तबाह।। इहमाँ बुझाइछो हमहींछी शाहंशाह।। आ०।। पेटमें बनल रह परम विचारी। बाहर ढुढ़इछ एक नमरा नारी।। उहमाँतू दुखपाय भेलरह सर्द। इहमाँ मछर पर बनैत हत मर्द।। आ०।। मृत्यु मंजारी तकैछौ मुँह बाय। मारतो झपट्टा जैब केंकिआय।। उहमाँ तू दुखपाय रहल अवाक।। इहमा चाहैत हत चौल ओ मजाक।। 'मोद' मुद चाह रटह छन छन, टूटिजैतो जगवाके नटन खटन।। आ०।।

।। पद ।। (३८)

सियाराम सियाराम सियाराम, सियाराम सियाराम सियाराम गयवइ हो। राजी के चरण शरण से न जयवइहो।। सतसंग गंग में उमंग से नहैवइ हो, कृपा वजरंगजी के राम रंग रंगैवइ हो।। सुमिरन आब त न भूलिक भुलयवइ हो, दरसन लागि पल पल ललचैवै हो।। गुरुदेव दया से गुमान के गमैवइ हो। कतनो बिगारो कोइ हम गम खैवइ हो।। अपना जनैतमें न और के दुखैवइ हो। चाहे कोई कुछ कहो हम न रुलैवइ हो।। करुणा निधानजीमें सुरति जमैवइ हो। 'मोद' जमें देतन त जिअरा जुरैवइ हो।।

।। पद ।। (३९)

रट सियाराम राम नहींत जमलुटतो।। खाइछ पिअइछ ढकरैछ अकरैछ, सब मौज बाजी छनहिं में छुटतो।। अनका पकाव सिझाव तराव में, सुख समझौ, तेहिना तोरो कुटतो। चोरी-डकैती बैमानीस लाला के, जकरा पोसैछ, तकरो स नाता टुटतो।। छक्क छक्क जरव जबहिं जमपुर में, यारनी इयरवा कोई न उहाँ जुटतो।। सान ओ गुमानसे चलैछ सिरतान के, 'मोद' आखिर खोपडी लुकाठी से फुटतो।।

॥ पद ॥ (४०)

हरिजन होअ होअ हो भाइ, हरिजन होअ होअ। वृथा जन्म जनि खोअ हो भाइ०॥ के छ कहाँसे अयल कहँमा, जयब से जिअ जोअ। जाइत बेर केके संग जैतो, सेहोत टकटोअ॥ प्रगट कर मति अनकर अवगुण, बनौ जहाँ तक गोअ। युग युग सौं सिर पापगठरिआ, ढोयल अब मत ढोअ॥ सीताराम नाम निर्मल जल, मलि मलि हिय मल धोअ। युगल स्वभाव शील गुणगण मणि, सुमति सूत में पोअ॥ कुमति कुतर्क विमुखता तजिके, प्रभु सन्मुख ह्वै रोअ। 'मोद' महामुद पायनिरन्तर, अपना सुखस सोअ॥

॥ पद ॥ (४१)

येरे मेरे भैया भजन कर सीताराम को॥ लख चौरासी जन्मि जन्मि के, तब मानुष तनु पाइया। सातो छन छन छीण होत हैं, तू हौ चैन चहैआ बिसराके सुमिरन श्याम को। जो जेहि खाता सो तेहि खाता मनुस्मृति बतैया। रिधुर वीर्य से मांस बनत हैं, तासे तून घि नइया-धिक धिक है तेरेकाम को॥ यथा सर्प के मुख में मेढ़क अध निगला नकिअइया। निकट आय चींटिहि चटकरता, त्यों तू भोग करैया जातेहू यमके धामको॥ 'मोद' धार हिय सहनशीलता समतैया नमतैया॥ सदगुरु शरण होय सियवर भजु, शिवमत येहे सुहइया आओ पाओ विश्राम को॥

॥ पद ॥ (४२)

राम राम राम सिया राम राम राम राम।

राम राम राम सिया राम राम राम राम॥

अइये अइये भइये सतसंग रंग भीजिये। राघव स्वभाव सुनि सहजे पसीजिये। पोथिनको पढ़ि हिये पाथर न कीजिये। तजि बकवाद स्वाद नामामृत पीजिये-अन्त राम नाम तजि आबत न कछु काम॥ राम

राम०।। मौज मानि मानि करैं प्यार से तू पापरे।। नामसुमिरण बिनु सहेतीनो तापरे। सुखपाये लेशहूँ सुरेश बनै आपरे। दुख-पाये रोवत करत हाय बापरे-जैहैं जिय जरनि जपन करो आठोयाम।। रामराम।। रटत रटत, दुखदाई मन लटिहैं। हटत हटत चितकी कुटेव हटिहैं। घटत घटत हिय भेद-भ्रम घटिहैं। कटत कटत सब कर्म-बंध कटिहैं-नामहीं की रटनि दिखावत हैं सुखधाम।। रामराम।। सद्गुरु चरण शरण जब आओगे। सतसुमिरण में तू सुरति जमाओगे। सबसे समेटि मन नाम में समाओगे। अपनेहिं माह आप परानन्द पाओगे-'मोद' तब पाइहौं तूं सहजहिं सुविश्राम।। रामराम०।।

।। पद ।। (४३)

सियाराम सुखधाम नामको, सुमिरन छिनोन छोरतू।। पियप्यारी पंकज पायनमें, नेह नजरिया जोरतू। सतसंगति हरिसुयश रंगमें, सुमतिकि सरिआ बोरतू। गुणगण गहना अंग अंगा सजि, राह देखिरख गोरतू।। जिनके संग से सुमिरण भूले, तिनसे नाता तोड़तू। बादकरैं जो विमुख पने की, उनसे मुखड़ा मोरतू।। एक एक श्वास अमोल जातहैं, सम्बल नाम बटोरतू। 'मोद' अगर चाहै जाना, महबूब महलकी ओरतू।।

।। पद ।। (४४)

बिनुइश्क मिलेना राम रे तू, देखो ढूंढ़ तमाम। जबतक मनुआँ फँसा रहेगा, तियातनय धन धाम। तब तक तू कबहूँ न लहेगा सपनोमें विश्राम।। रे तूं।। राममिलनजो चाहै जिअरा मन इन्द्रिन को थाम। भजन भावना लेइ गुरु से, सुमिरौ आठो याम।। रे तूं।। संतसंगकरि बनो विवेकी, तजदे अब बदकाम।। सरल स्वभाव सन्तोष धारले, छार विमुख को ठाम।। रे तूं।। इश्क हाट में आयडटेगा, सुरट रटेगा नाम। 'मोद' घटे में छटा लखेगा, सुन्दर श्यामा श्याम।। रे तूं।।

॥ पद ॥ (४५)

आउ आउ सुनु सुनु भैया हिन्दू। सकल वर्णपर राजि रहल छथि, ऊर्ध रेफ औ विन्दु॥ आओर नाम तारागण समछथि, राम अहाँक छथि इन्दू। प्रणबहुँके माथापर देखिऔन, सोहै छथि ज्यों सिन्दू॥ ब्रह्म रेफ बिनु बम्ह बनैछथि, कृष्णहुँ कष्ण कहिन्दू। श्रीराधा आधाह्वै जाइछथि, र बिनु अजो अजिन्दू॥ ही सँ नसाबथि दुराचरणके, हिन्दू ताहि कहिन्दू। 'मोद' अगर अहाँचाही महामुद, रटु भरि भावअछिन्दू॥

॥ पद ॥ (४६)

भज सियाराम नत जम जिआ जारतो। कुछ बज बहूत मुँह-मुँह मारतो॥ ठाँव ओ कुठाँव ऊ एक्कोनविचारतो। महा घिनौनी नरक में डारतो॥ मुड़ उचकैबहूत बज्रप्रहारतो। याद करा 'मोद' कसर बहारतो॥

॥ पद ॥ (४७)

मन थेथरा रे तोरा लाजे नहीं।

ब्रह्म-विष्णु महेश रटैछथि, सदा राम के नाम। ताहि नाम में तर्क करेतूं, सकटा नमकहराम-राम से काजे नहीं॥ मन०॥ बालमीक प्रह्लाद अजामिल, यवन कथा सुनिकान। सत्य न मानै बाद बढ़ावै, लम्पट विमुखी वाम-भजै सरताजै नहीं॥ मन०॥ ऊपर से खुब सीटेसाटे भीतर कंटक काम। बातन से तो ब्रह्म बने हैं चाभै हड्डी चाम-हिय मल माजै नहीं॥ मन०॥ हाँ हाँ हीं ही में ही खोये, मौलिक आठो याम। 'मोद' औचक में जाना होगा जमराज के धाम-सम्बल क्यों साजै नहीं॥ मन०॥

॥ पद ॥ (४८)

भजो रामसिया रामसिया येरे जिया, भजो रामसिया रामसिया रामसिया।। लिजै मानि भला जानि ना विलम्ब किजैजू। और कर्मकलि असाध्य ना कदम्ब दिजैजू।। सिये रघुबर के नाम को अवलम्ब लिजैजू। सब सन्तन मिलि ये मत निर्धारि किया।। भजो०।। कहैं चार छौ नौ आठ ओ दस पाठ येहीजू। जो रटि लीजिये करि प्रेम तो परे जानि सहीजू। सो परिपाइहैं प्रमोद येमत 'मोद' गहीजू। सतकोटि मेंसे शम्भू ये निकारि के लिया।। भ०।।

।। पद ।। (४९)

गौन लगिचानी श्रृंगार करले गोरिया।

श्रद्धा फुलेल सियाराम कथा उबटन लय, मैल अभिमानन को करडारो दुरिआ।। गौ०।। मनन सुनीर अन्हवाय अंगुछाय दया, सजले सर्वांगन में नम्रताइ सरिआ।। गौन।। आभरन नाम हरि साधुसेवा कर्णफूल, करिले सतसंगन की अंजन तम हरिआ।। गौन०।। सत्यप्रेम सिन्दुर से सजले सुभागि भाल, गेरिलीजै गरवामें गुणगण की गुरिआ।। गौन०।। चाहन की चोली से कसले कलेजे को, जाहि-देखि 'मोद' पिया भरिहैं अँकोरिआ।।

।। पद ।। (५०)

भजले सियाराम श्याम सुन्दर रघुनन्दन।

जनमनरंजन भवभय भंजन अघगन गंजन ध्यावैं जेहि सज्जन-हरे हरे जय जय रसिक चकोरन को चन्दन।। भ०।। झाँकी है जैसी कहीं झाँकी न वैसी, मुसकनियाँ है जैसी कहे वनिआंन तैसी-हरेहरे जयजय-नयननि फसावन को फन्दन।। भ०।। अरेमन जागजा, मेरो कहे लागजा, अभ्रू अनुरागजा प्रभु प्रेम पागजा-हरेहरे जय जय-'मोद'

तभीतो अनन्दन॥ भ०॥

॥ पद ॥ (५१)

जयजय रघुनन्दन जय जयति जनक नन्दिनी। रसिकन को सम्पति जय दम्पति मुद कन्दिनी॥ जयति भूमि भार हरण हारण दुख द्वन्दिनी। जयति चरित पावन मनभावन हर फन्दिनी॥ जयति नाम तारक जयकारक स्वच्छन्दिनी। जयति सुछवि धारक रति मारक मद मन्दिनी॥ जय हरिहर वन्दित चतुराननादि बन्दिनी। जयति भक्तभावन सरसावन आनन्दिनी॥ जय जय जय जयति जयति युगलचन्द चन्दिनी। 'मोद' अली उरसि निवसु बिहँसत मन्द मन्दिनी॥

॥ पद ॥ (५२)

प्रणतपाल तुहीं दीन को दयालु तुहीं॥

प्राणप्यारे हमारे अधारे जियाके, सियाके हियाके सुमाल तुहीं॥ जोनिन महँ जन्म लेत, जीवन दुखि देखि देत, नरतन भवतरन हित कृपालु तुहीं। अस करुणा जलजल घर भवभयहर अघछयकर निर्भयकर सुखदयकर दुखघाल तुहीं॥ प्र०॥ बाल एक नाम गह्यो पिता ताहि हतना चह्यो, खम्भफारि कीन्हो उत्फाल तुहीं। जनदुख सुनै जबते कल-अवतेनहिं तबते खलदल को दलमलै ह्वै विकराल तुहीं॥ प्र०॥ साथी सब त्यागि दीन्ह, हाथी तब शरण लीन्ह, कीन्ह अभय उछलिकै उताल तुहीं। अपावनते अपावनहूँ आवैं परै पावन, करै पावन ते पावन निहाल तुहीं॥ जाको लंगोटी में बीसन थे गाँठी, तेहि नंगे को कीन्हें भूपाल तुहीं। रजकन को गिरिगन सों, गिरिगन को रजकन सो करै। अकरन धन धन धन गुणशाल तुहीं॥ नारी करि नंगे खल धारे चहैं जंघे किये चीरन को चारोदिसि टाल तुहीं। तजि फन्दन छल छन्दन जो टेरैं जगवन्दन तेहि टारै दुखद्वन्दन हर हाल तुहीं॥ प्र०॥ जाके तनछाँह परे पाप अशुभ होत बड़े ताकोलिये गोद ललकि डाल तुहीं। हतयुद्धै बेसुद्धे लखि नयननि जलरूद्धे परसिद्ध

गृद्ध श्राद्ध करनवाल तुहीं।। प्र०।। नाम रूप धाम लीला चारो अभिराम तेरे सम दसरथनृप लाल तुहीं। स्वभावनि सुसीलनि सुबोलनि सुहासनि मोदलिमनमृग फासनको जाल तुहीं।। प्र०।।

।। पद ।। (५३)

श्रीरघुनन्दन आनन्दकन्दन कौशलचन्दन की जयहो। सुरमुनिवन्दन दुष्टनिकन्दन रसिकअनन्दन की जय हो।। श्रीरघुनन्द, अनन्द को कन्द, श्रीकौशलचन्द निकन्दन द्वन्द। भजैं न सो मन्द, भजैं जगवन्द कि नाम गाओ, रूप ध्याओ। धामजाओ-नित्य सत्य लीला हरफन्दन की जय हो।। जय जनरंजन, भयभवभंजन, भव्य गुणाञ्जन, सेव्यसुसज्जन। ज्ञानमुनिञ्जन, जानरसिकजन-उरमें अइये, नाम रटइये। सुगुण गुणैये, रस सरसइये-'मोद' मोद कर गति स्वच्छन्दन की जय हो।।

।। पद ।। (५४)

बिकैहैं को न हेलि सील सुनि सुनि के। सियापिया के गुणगण गुनि-गुनि के।। अव्यक्त कहबावैं, वेद नेति नेति गाबैं, तिन्हे अंचल दै प्यावैं मैया मुनि मुनि के।। सिद्ध समाधि लावैं, तीनो देवतो न पावैं, निमिपुर बिहरावैं बाल पुनि पुनि के।। सेवैं रमाब्रह्मानी चाव कै सची भवानी, तिन्हें देवैं मिथिलानी गारी चुनि चुनि के।। सच्चिदानन्द जानौ, सदग्रन्थन प्रमानो, गृद्ध गोद लै सो कानो, सिर धुनि धुनि के।। यज्ञ पूर्ण कहे जाते, जूठ भिलनी को खाते, कोन जानै यह बाते, सारी दुनि दुनि के।। कैसेहु नीच आवैं, उठि कंठहिं लगावैं, 'मोद' मोदित बसावैं, दोष लुनि लुनि के।।

।। पद ।। (५५)

दया की दृष्टि दीजिये मेरी सिय स्वामिनि ए। चरणों की चेरी कीजिये मेरी प्रभु भामिनी ए।। मनबुधि चित अहमिति में भूली,

करती हूँ मैं फूली फूली। बिनु कृपा न होगी अनुकूली-तेरी अधिकाधि ए।। तू हीं शुभदा सब देही को, सुखदा पिय सद्गुण गेही को। दीजै सतसंग सनेही को मोदहिं दिन जामिनि ये।। तेरी करुणा दृग पड़ती है, तब बिगरी सबै सुधरती है। उर अन्तर छटा छहरती है-परमानन्दधामिनि ए।।

।। पद ।। (५६)

कब साजिहो तू श्रृंगार तेरी जवानी बीती जाय। कब सोओगी सुखसेज पै, पियहद पंकज हिय लाय।। कब अपनी होश सम्हारोगी, इतउत भटकन को छाड़ोगी। नैहर की नात बिसारोगी, छन छन तन छीजी जाय।। खलसंगत मैलापन तजके, सतसंगत सरिता में मजके। नमताई सरिआ को सजके, सुमिरण सिन्दुर सिरलाय।। पिय गुण गणा गहना अंगनला, चाहन की चोलीबन्द लगा। प्रभु नामनकी झुमका झमका, पिय 'मोद' मिलोगी धाय।।

।। पद ।। (५७)

हे युगल सरकार हमें नाम नेह दीजिये। कृपादृष्टि कीजिये प्रभु कृपादृष्टि कीजिये।। सरलताइ हृदय भरिय, कुटिलताइ दूर करिय। दयके सन्तोष नाथ शरणन में लीजिये।। सुमिरण अभ्यास देइ दरसन को प्यास देइ। कंजपद प्रकाश देइ-'मोद' पै पसीझिये।।

।। पद ।। (५८)

राम भज जमलोक जाना, जो नहीं मंजूर हो। गर्भ में उल्टा टँगाना, जो नहीं मंजूर हो।। जेर होना जमगणों के जुल्मतर बरजोर से। मूशलों से सर भँगाना जो नहीं मंजूर हो।। दहसतों से दम न लेना दौड़ते दुखराह में। मुद्गरों से मुख रंगाना जो०।। ओ सड़ीली पीव दह रौरब की पीना रोरोके। असिपत्र तरु से तन पँगाना जो०।। ओ

दहकती लोह की, वह महा दारुण देह में। 'मोद' देह जो निज दहाना जो नहीं मंजूर हो॥

॥ पद ॥ (५९)

बात तुमने क्या कहा था, याद है कि न याद है। गर्भ में रोता रहा था, याद है कि न याद है॥ जेर था जब जलन से, जठराग्नि की मा जठर में, जैसे तब सोता रहा था याद०॥ मूत्र औ पूरीष में जब, माथ दै दुखमग्न थे। पल कलप खोता रहा था याद है०॥ ख्याल कर सौ जन्म की, करतव लजित थे ऐ निलज। लाज में गोता रहा था याद०॥ 'मोद' री तू जानकीजीवनजु को भजने बिना, नाकदम होता रहा था याद०॥

॥ पद ॥ (६०)

जय सियाराम जय जय सियाराम, जयजय सियाराम जयजय सियाराम। मणि मंडप बिच मंजु सिंहासन, जगमग ज्योति जगैं वशुयाम। तामधि राजैं सिय रघुनन्दन, नखसिख साजे ललित ललाम॥ रुचि लखि सखि सेवा लावैं, छकि छकि दम्पति छवि अभिराम। वारैं रोम रोम पर अगणित, पूर्ण चन्द्र दामिनि रतिकाम॥ ब्रह्मादिक वर्षावैं सुमन, गुण गावैं अथर्व ऋग्यजुसाम। निर्भर 'मोद' मगन बजरंगी, नृत्य करैं कहि पावन नाम॥

॥ पद ॥ (६१)

भजतहिं रह श्रीसीयवर अरेमन नहिंतौं होतौ गरबर। कोना कोना क जमा करैछे, जकरालए रे बाबर। प्राण निकलिते ओहे निकालतौ, घरसँ हब्बर हब्बर॥ धनबल गुण पा आइ गुमाने खूब बनलछे गब्बर। अन्त समय में आँख से पानी, ढरतौ ढब्बर ढब्बर॥ जब जमगन जंजीर जकरतौ, दूट जेतौ सब सब्बर। पुछतौ पेटके किए

बनौले, जिवा जन्तु के कब्बर।। 'मोद' याद रख छन छन पल पल, काल गाल बर जब्बर। सुमिरण सुरति सम्हारिते रह तू, होके सबसे नब्बर।।

॥ पद ॥ (६२)

सब अटपट काटैं नामरटन। छुटि जावैं जगत की, नटन खटन।। बालक एक नामरट लायो, झटपट ही भय खम्भ फटन।। उलटि पलटि व्याधो रटलायो, भये ब्रह्मसम अघट घटन।। अनजाने कहे यवन अजामिल, भागेउ जिबलय यमहुँ भटन।। संयम सहित 'मोद' जो सुमिरय क्यों नहीं पावैं अमीचटन।।

॥ पद ॥ (६३)

भगवन्त भक्तहित क्या न किये। देखिय सोचि विचारि हिये।। भृगु मुनि औचक चरण प्रहारे, चिन्ह अजहुँ लौ धारि लिये। पाण्डव यज्ञ में पतल उठाये, जूठखाय सबरी के दिये।। झूठे बने निकट बृन्दा के वालि कि गालिन लाय जिये। माधवदास के अंग अंग चाँपे, पटह्वै झाँपे पाण्डुतिये।। निःकिञ्चन से आप लुटाये सदना बधना पानिपिये। 'मोद' सन्त गावैं विरदावलि, जयति रामप्रभु जयति सिये।।

॥ पद ॥ (६४)

न दीनो पै दया करते, दयामय आप कैसे हैं। अधीनों का न कर धरते, दयामय आप कैसे हैं। महादीना मलीना पापपीना भाग्यहीना हूँ। बिरह दब की है दम धरते।। दया०।। सुनी प्रह्लाद की गज की पंचाली की मंजारी की, ढरनि अपनी न अब ढरते।। दया०।। है राखी खास नरसीं की, छवाई छानि नाभा की। हैं आना कानि अब करते।। दया०।। धरे तन से न हितजन के त्यों चाकर भय तिलोचन के, न आ झट 'मोद' मुद भरते।। दया०।।

॥ पद ॥ (६५)

यो सियवर चमकदार चितवनि, दरसायब कहिआधरि।
मृदु मुसुकनि मन्द मयूष बुन्द वर्षायब कहिआधरि॥
दृगनासामणिअँक मन्द डुलनि, डुलकायब कहिआधरि।
उरमन्दिर सुन्दर झाँकि झँका, पुलकायब कहिआधरि॥
अरविन्द मुखक मकरन्द हेतु, तरसायब कहिआधरि।
अन्तर कएकएकें सियाकन्त, कलपायब कहिआधरि॥
यो रसिकेश्वर उज्वल गुणगण गनबायव कहिआधरि।
करुणा करबामें करुणाकर अतरायब कहिआधरि॥
निज पदतमाल पर 'मोद' लतहिं लतरायब कहिआधरि।

॥ पद ॥ (६६)

ऐ दीनबन्धु दयासिन्धु, तनक इधर तकिये। जबते पद् छुट्यो नाथ, जाने बिनु रह्यो अनाथ, गुरुह्वै गहि लियो हाथ अब नहीं झिझकिये। ध्रुव ओ प्रह्लाद घिमर, गुह खग कपि रजनीचर, पाहि कहे आपहि कहो, आपन केहि न किये। वासना झकोर जोर, प्रेम सुपट फाटिमोर, कोशल्याकिसोर कृपा, टांकनिते टेंकिये॥ करिये मम हृदय शुद्धि, हरिये भ्रम भेद बुद्धि-जाते सिया सहित आप, सुख से निवसि सकिये॥ टेरत है खड़ी द्वार, हेरिये करुणा उदार। जसतस है आपहीं कि मोदिया सेवकिये॥

॥ पद ॥ (६७)

परम कठिन रौरी हिआरा राघबये, जानै न विरहिनि पीर ये रामा। रामा॥ जुलुफ जन्जीरन बाँधि विवश किये, नाजुक मोर शरीर रामा। पुनि तापर भौंआँ सन्धानि नयनसर, मारत तकि तकि तीर रामा। करि घायल मुसुकनि की तेग चलावत, मनचित कीन्हेउ झीर रामा॥ अब अन्तर की नमक घनश्याम बेदरदी, दरसायो गुण वीर रामा॥

लगावत, कैसे धरूँ जिय धीर रामा। जाऊँ कहाँ तजि काग जहाज की, और नलिनी के कीर रामा।। कासे कहूँ कौन दुख मेटें, कौन को चिर थीर रामा।। प्राणनाथ अब आय नहैये 'मोद' नयन की नीर रामा।।

।। पद ।। (६८)

राजाधिराज रौरी जय हो-जय जय हो रघुराज। कैसेहुँ अधम चलि आवे, सकृत सिर नावे, पाहि गोहरावै ताको सारै सब काज।। लेवैं जो नाम की ओटैं, कैसेहु खल खोटैं, पाप की कोटैं। ताको तारैं तरताज।। सुनिके स्वगुण सकुचावैं भक्त गुण भावैं, नयन झरि लावैं-गावै सन्तसमाज।। हेरैं तनक जेहिओरैं, कृपा की कोरैं, करैं सिर मौरैं ऐसो सुयश दराज।। मुसुकन अजब बसकारी, गजब करैं भारी, करन मतवारी मनहारी छविछाज।। रीतैं सबै अतिपावन, 'मोद' मन भावन सुमुद सरसावन उर वसैं सजे साज।।

।। पद ।। (६९)

राजैं राजैं रघुराज, सीय सहित शुभ साजैं।। चारो चरण मनरञ्जन, कंजमदगंजन, भीर भवभंजन, नख ललित विराज।। सी०।। धोती पीत छविधारी, नील रंग सारी, सोहैं जरतारी। पग कड़ा छाड़ा छाज।। सीय०।। कटि में लसैं कल किंकिंणि, बलयकर कंकणि, जड़ित नवरंगमणि क्वण ननननन बाज।। सीय०।। अंग में लसैं जड़िजामा, कंचुकि मणिदामा, ललित सुललामा बनमाला भलि भ्राज।। सी०।। मोहैं मधुर मुसुकनियाँ, विसर नासामणियाँ, चारु चितवनियाँ। भौआँ धनुसर साज।। सीय०।। नयना कहर करैं भारी, जुलुमि कजरारी, लेत हियहारी चन्द्रिका सिरताज।। सीय०।। झाँकी युगल सुखरासी, निरखि भइ दासी, फँसी प्रेम फाँसी 'मोद' तजि लोकलाज।। सीय०।।

॥ पद ॥ (७०)

झाँकि लीजै सबै मिलि युगल झाँकी। प्रेमन के चश्मा को चश्मों में लायके, वारि दिजे तनमन तनक ताकी॥ झा०॥ नख से औ सिखलौं छन छन चितैये, सहजे चितचंचल जैहें थाकी॥ झा०॥ स्वरूपे हैं जैसी, स्वभावों है वैसी हैं लीला हूँ तैसी करन पाकी॥ झा०॥ 'मोद' अली बली होइहौं बौरहिआ, सियपिय की मुसुकनि सुमद छाकी॥ झा०॥

॥ पद ॥ (७१)

तेरे गुणगान को गइहौं, तोको नयननि में लइहौं। तो पै बलिबलि ह्वै जैहों सँवलिया जान॥ ही से और को न चहिहौं, शीश चरणन में नइहौं, सब दिन शरण न में रहिहौं सँवलिआ जान॥ हे भगवान्, कृपानिधान, छवि के खान-रस के खान॥ मोद अलि के जीवन प्राण॥

॥ पद ॥ (७२)

बाँकी चितवनियाँ से चिताइये-सिय प्रीतम प्यारे॥ ऐ कारे जुल्फनवारे, ऐ प्यारे अलकनवारे, ऐ पैनी पल्कनवारे, ऐ लोनी झलकनवारे मुसुकन अमी को वर्षाइये॥ सवरी को कैसे तारे, कुबरी को कैसे तारे, सदना को कैसे तारे, सुघना को कैसे तारे, सोई दया को दरसाइये॥ नि:किञ्चन घर क्या कीनो, तीलोचन तर क्या कीनो, बिदुरानी घर क्या कीनो, पंडवानी अरे क्या कीनो, अपनी बिरद को याद लाइये॥ जेहि कर से करि-अरि भंज्यो, जेहि कर से सुर-अरि भंज्यो, जेहि कर से हर-धनु भंज्यो, जेहि कर से खर-तनु भंज्यो, 'मोद' को कर धर सोइ अपनाइये॥

॥ पद ॥ (७३)

क्या चमचम चमचम, चमकैं चौतनियाँ रघुकुलचन्द की॥

क्या जुलुफ युवति चितहारी, क्या तिलक पटल भृतिकारी, क्या भृकुटि कुटिल गति न्यारी, नयना नयननि वशकारी। क्या दमदम दमदम दमकैं, दसनमाँ दसरथनन्द की।। क्या अधर मधुर अरुणारे, सुठिकंठ सुकंठाधारे, क्या मणिनहार हियहारे, क्या कटिपट पीतसम्बारे, क्या झमझम झमझम, झमकैं किंकिंणियाँ आनन्दकन्द की।। क्या मंजुकंज पग सोहैं, तरवा लाली मन मोहैं, ये युगल चरण जिन जोहैं, धन धन्य ताहि सम कोहैं मन रमरम रमरम, 'मोद' महामुद करन स्वच्छन्द की।।

।। पद ।। (७४)

क्या रंगवाला मेरा सनम ओ, अहा अहा हा ओहो ओहो हो।। पाँओ भी लालैं, नौहों भी लालैं, लजैलाल लालैं, चालैं मरालैं, प्रणतों को पालैं, पापों को घालैं, इन्हीं चरण से गंगा जनम भो।। कटि पीत पट हैं, किंकणि पुरट हैं, नग जामाजट हैं, हरबा सुघट हैं, कंठासुकंठ हैं, मुखबास मठ हैं, मुसुकन मयूषन कि रसिकन धनम सो।। नक मोती हलकैं, कुण्डल अलके, क्या पैनी पलकैं, हीहारैं चलकैं, क्या तिल्क झलकैं, लखि नैन ललकैं, मुसुकनि फसाय लीन्हें 'मोद' मनम को।।

।। पद ।। (७५)

क्या खुशमिजाजी मेरा सनमओ, अहा अहा हा अहो अहो हो। भृगु लात मारे, विनतीनुसारे, बलिपै सकारे, रहैं ठाढ़ द्वारे, गरुड़ो को छारे, पैदल पधारे, जब सिन्धु में भै गज नाकदम को।। छिल्का बिदुरकी, पटमोट त्रिपुरकी, सदनापै झुलकी, सुदामा तन्दुल की, सेवा कबूल की, रामदास कुल की, नामों छतायुध तबते आरम्भो।। द्रौपदी हित अम्बर, निधि हित पैगम्बर, सेवक सुतनधर, तीलोकन के तर, निःकिञ्चन के डर भूषण दिये घर-हीहारैं बसकारैं मोद मनम सो।।

॥ पद ॥ (७६)

दोउ मूरत में सूरत लगाले, नयना बसाले भले। गुण गण को गाले तनमन उमगाले, जीवन को फल भल पा ले॥ दोउ०॥ झाँकहु कल झाँकी, रघुनन्दन भुमि जाकी बर बाँकी अँखिआकी सुख कारि। जाकी यश पाकी पति गावैं गिरिजाके, प्रभुता की नेति भाखी श्रुति चारि। मनहारि, चितहारि। बुधिहारि। वसकारि॥ दोउ०॥ नयननको सयनन-हरैं चयनन को चयनन मारैं मयनन को मयननकी गाँसि। सुखमाको अयनन असउपमा को हैनन, मन्द मुसुकन वनितनको जनु फाँसि। भइदासि, मोदखासि, अभिलाषि, रहुँपासि॥ दो०॥

॥ पद ॥ (७७)

श्रवण सुयश सुनि साँची साँची मन गुनि आयो तब शरण तिहारे सियप्यारेजू। मोहि तोहि नात बहु-ताते नाय माथ कहूँ करिये न चरणन न्यारे सियप्यारेजू॥ धरिये कृपालु ताहि हाथनिते मेरी हाथ जाहि हाथ हाथिहि उबारे सियप्यारेजू। ताहि हित हेरनिते हेरिये हिताकरजू, जाहि-हित मिथिला निहारे सिय०॥ जाहि पदकंजनिके मंजुल सुरजनिते, पापपुञ्ज मुनितिय तारे सिय०॥ ताहिरज रंजिये सिरसि मेरो दयानिधे; भंजिये अकथ्य भीति भारे सिय०॥ जाहि मृदु हासनिकी अजब अनूठी फाँसी, निमिपुरवासी गर डारे सियप्यारेजू। ताहिमृदु हाँसिनकी रसी अंग अंग गसि, हमहूँको राखू निज द्वारे सिय०॥ रसिक सनेही संत रावरे स्वभाव देखि धर्‌यो तव नाम रिझवारे सिय०॥ रीझिये रिझैया रीझिबेकी निजवानि हीते, कीजै वर विरद सम्भारे सिय०॥ और कहूँ ठौर ना दिखात याते सत्य कहूँ शरण से टरिहौं न टारे सिय०॥ मिथिला की नात जानि कीजैजू सनाथनाथ, 'मोद' अलि तब बलिहारे सिय०॥

॥ पद ॥ (७८)

तनको तनक विचारो 'मोद' रि' तनको तिनक विचारो। वेरा

होगा पारो।। मोदरि।। सिखासिखावन देत सर्वपर, उर्धरेफ निर्धारो। केशकहैं कायहिं मेंएश हैं, ह्वै गुरु शरण निहारो।। मो०।। कहैं कपार कर्म करि पार हो, नातो है भौधारो। लखो आँख वह कान दिये तोहि, क्या न किये उपकारो।। नाक कहै कर उच्च कर्म तो सीधे नाक सिधारो।। जौं निर्वासिक करोतो मोक्षहि ठौर बने सुखसारो।। मुख कहैं मुख्य काम रट नामहिं, दोउ दिसि दसन सुधारो। ना तो कालगाल दाढ़िहि में, अपनो जन्म गुजारो।। कंठ कहै धारण कर कंठी, गर्दन गर्जन प्यारो। हृदय रूप चिन्तन करके तूं पहुँचो ओ दरबारो।। बाँह न भूलो वाह वाह में केहुनि अपनी यारो। हाथ न अइहैं निज निज अंगुरिहूँ नख नैखे कोउ थारो।। पीठ कहै जो पीठहिं दीहौ परिहौ मलआगारो। डाँर बाँन्ह सबही विधि सहिहौ, परि इन्द्रिन व्यवहारो।। जाँघ कहै जाना घर हो तो छावा छलबल छारो। एरी तू तर बनो सबनते, पियपद पल न बिसारो।। मो०।।

।। पद ।। (७९)

शुभशिव मतमें विवाद करै सकटा। श्रुति कहैं संत कहैं अति मतिवन्त कहैं, गहैं नहिं नेकहूँ फुरावैं बात फकटा।। आप दोष दुःख भरे, औरन विमुख करैं, एक से अनेक होन चाहै नीच नकटा।। सज्जन को देखि जरैं, दुर्जनसों प्रेम करैं अधम सुअन्न तजि बटोरत अँकटा।। ज्ञान गयो ध्यान गयो पूजन विधान गयो रहि गयो 'मोद' सियाराम रट एकटा।।

।। पद ।। (८०)

नाथ नाहिं आयो प्राणनाथ नाहिं आयोरे। प्राणाधार एकही दिवस रहि पायोरे।। तात मात अनुज, सचिव प्रिय परिजन, विषम वियोग दानि मैहीं जग जायोरे।। हाय भक्तवत्सला सुकोमला सुलीला सीय, दीनहीन की सुधीन आपहूँ करायोरे।। लाड़िले लखन लाल

प्यारे भूरि भागि लोने, चरन चाँपतहूँ न चरचा चलायोरे॥ 'मोद' साधु मारुतीहुँ सुरति बिसारयो मोहि, विधि विपरीत होत दाँयो भयो बायोरे॥

॥ पद ॥ (८१) वैष्णव के बीस लक्षण॥

अहौं नीच नहिं किया कछू कोउन दुख पावै॥ सहनसील सरलापन गुरु सेई शुचिता लावै॥ निष्ठा दृढ़ प्रभु में थिर इन्द्रिन संयम करना॥ निरहंकारी भयसंसृत जरठापन डरना॥ भोजन शुद्ध कुटुम्ब छनक तिनमें सामान्य मति॥ सदा एकरस प्रभु आश्रय एकान्त आत्मरति॥ ये बीसों अरु भक्ति नव उर अन्तर जिनके रहैं॥ 'मोद' महा मंगल करन धन्य सोइ वैष्णव अहैं॥

॥ पद ॥ (८२)

हे नाथ सिवा आपके कुछ चाह नहीं है। भोगूँ करोड़ों कष्ट पै परवाह नहीं है॥ हम तो जनम जनम से करती आई हैं बदकाम। दुख भोगते अतएव हतोत्साह नहीं हैं॥ इससे भी बढ़के लाखहूँ चहिये नसीहतें। कैसे कहूँ कि आपकी निगाह नहीं है॥ अब भवमें बहूँगी तो होगी आपकी हँसी। अपने लिये अब 'मोद' हिये दाह नहीं है॥

॥ पद ॥ (८३)

कि आहे मन साजनिहे, एहन समैया फेरु नहिं पायब रे की। यहि जग जबसे अइली, औरेके और भइली, कि आ० कौन जतन में प्रभुपद पायबरे की। कइली विषय के कामना, पहली चौरासी भ्रमना कि आ० अब ना अनत मन लगायब रे की॥ आबिके भारतखण्ड बीचे, सुरसरि के नगीचे कि आ० गुरुमुख ह्वै सूरति जमायब रे की॥ निजपिया सुख के रासी, साकेतपुर के वासी कि आ० 'मोद' मन्दिर में लाड़ लरायब रे की॥

॥ पद ॥ (८४)

कोन जतन प्रभुपद पायब हे साजनि, निरखब नयन [illegible] जगत-जंजाल में काल गमौलौं, अब कछु कहलो न जाय॥ [illegible] कुटुम्ब मीत स्वारथ के, कोऊ न हीत लखाय। रहि रहि के हिय [illegible] हूक भर, घर अँगना न सोहाय॥ पापी प्राण पिण्ड नहिं छोड़ए, [illegible] पल नयन ललाय। भूषण वसन असन विहसन सब लागत [illegible] बलाय॥ करुणानिधि कहवैछी प्रभुजी, 'मोद' न मन पतिआय॥ [illegible] आब शीघ्र दरस नहिं भेटत मरब जहर विष खाय॥

॥ पद ॥ (८५)

कवन कुकृति हम कइली हो, पुरविल अघभार। [illegible] लायक नहिं भइली हो, अति अधम गमार॥ केतनो उद्यम हम कइलीं हो, नहिं कोउ पतिआर। सबनी के जीउ से जोगइली हो, तउ [illegible] फटकार॥ मुठीभीर केहूके न देली हो, नहिं कैली उपकार। सतसंग-[illegible] न नहैली हो गेल जन्म बेकार॥ कबहू जे प्रभुजी के पैती हो [illegible] लोचन दीदार। चरणन पै लोटि जैती हो, 'मोद' सुरति बिसार॥

॥ पद ॥ (८६) श्रीशिवयश॥

भोला दानी की जै, शूलपानी की जै, जयजय गिरिजा भवानी की जय जय जय॥ लक्ष्मी जब गई पताला, सुर असुर सिन्धु मथ डाला, निकसा विष परम कराला, करि पान सबै प्रतिपाला-भजो नीलकंठ दयाखनी की जय॥ जय भयो त्रिपुर संतापी, कियो धर्म लोप वह पापी, एक ही बान तेही दापी-सुरनरमुनि जन संस्थापीकिवे तीनों लोक दुख हानी की जय॥ गुणनिधि चह्यो घंट चुरायो, लघुतन है पकरि न पायो, मठसूने जबहि चितायो, लिंगहि चढ़ि खोलि चुरायो दय 'मोद' सुवर सम्मानी की जय।

॥ पद ॥ (८७)

आगे मैया गे मैया, नारदके दरद नदारद दइया॥ अपन उमाके देखि चन्द्र मलीन। ई बुड़थुथुराके फाटल कोपीन॥ उमाक दमक देखि दामिनि दुराय। ई खक मुरहा नै कनिको सोहाय॥ अपन उमा छथि छविक आगार। ई गलसटका के निकलल हार॥ जौं धरि पबितहुँ नारदक हाथ। घैलगोबर घोरि फोरितहुँ माथ॥ जौं भल होथि हिमाचल राय। उमता करथु दुर मुका मुकिआय॥ मोद कि बैसल छथि मैना झमाय। ई वर बइलावथु कबाछु लगाय॥

॥ पद ॥ (८८)

जय महेश जय महेश शंकर त्रिपुरारी। जय जय वामांग गौरि गंगभंगधारी॥ सौहैं बालेन्दु भाल, जटा नाग अति कराल, पंचवक्त्र तीनि नयन मदन कदनकारी॥ रुण्डन कुण्डलन कान, भव्य भुजा अभय दान, तरल तर त्रिशूल डमरु, डिमकि नाद भारी॥ कंबु कंठ गरलधार, राजैं उर मुण्डहार, दीननको करैं निहाल, दुख दरिद्र दारी॥ नन्दीश्वर पर सवार, ज्ञानयोग गुणागार, दीजै रामभक्ति सार-मोदलि वलिहारी॥

॥ पद ॥ (८९)

औढरदानी सरदार, सुनो अरजी हमार-देवा आयो दीन रावरे शरणियाँ में। मुण्ड मंडित सुमाल, रुण्ड कुण्डलनि गाल-भाल बालचन्द गरल गरदनियाँ में॥ आप भांग विष खात, औरों देत ना अघात, किधौं ढरकेहैं ढरनि ढरनियाँ में॥ कीजे कुमतिहि भंग, दीजे सुमति सुसंग, जासे लागैं मन राम रटनियाँ में॥ जनपावैं मनकाम, सुत आयु धन धाम मोद माँगैं प्रेम प्रीतम चरणियाँ में॥

॥ पद ॥ (९०)

भोले बाबा हो, राउर महिमा अगम अपार॥ जरत सुरासुर

सीतल कीने, भोले बाबा हो गरल गले बीच धार। त्रिपुर तिहुँपुर अति दुख दीने भो० तेहि हति भये त्रिपुरार। चारि चारि चाउर लेइ चारो फल देवै भो० विरद विदित संसार।। द्विज-गुणनिधि पग, धरि भय सिध भो० ऐसो कौन दूसरो उदार।। सिय सियपिय झाँकी झाँकूं बाँकी बाँकी भो० कीजै मोदहिं सुखार।।

॥ पद ॥ (९१)

हिन्दू हिन्दुस्तान निवसि कएँ, हिन्दूपन मति छारू यो। पूर्वज केहन रहथि हम केहन, कखनो कनैक विचारू यो। देशक असन वसन अरु भेष, न भूलि बिसारूयो। सतमत धर्म सनातन कारन, तनमन धन दय डारू यो।। नमता सहनसीलता समता, दृढ़ कय धारूयो। जाप जपै छथि जेहे शिवाशिव, सेहे जप अनुसारूयो।। 'मोद' मन्दिर में छटा निहारू, पलकन टारूयो। अपने तन अछैत तरि जाउ, अनेकन पुरखन तारू यो।।

॥ पद ॥ (९२)

जुल्मी दुनियाँ जुलुम कहल नहिं जाय। चौल ओ मजाक दिन रात अति भावै, जुल्मी० राम रटा न रटाय।। मेल ओ मिलाप मटियामेट में मिलाये जुल्मी ० अनकर भला न केहूके सुहाय।। करम धरम सब धूर में धसाये जुल्मी० जानि बूझि के मुर्गी अण्डा खाय।। तेल में झमेल कै फुलेल भाव पावै जुल्मी० वसन विहीन विललाय।। घींचा घींची ताना तानी तिल तिल छाये जुल्मी० सत-मत केहू न सुहाय।। मोदमुद पाओ प्रभु शरण में आओ जुल्मी० पलपल परानन्द छाय।।

॥ पद ॥ (९३)

भुलल जग जालिम सिंह के नाच। जम जालिम के खौफ भुला जे, खींचत चमड़ा काँच।। शिवगुरु कहलनि राम भजन सत, ई

संसार असाँच। गुरू वचन त्यागी गुनि जमगण मारत खींचि तमाच॥ छिन छिन जरल जाइत अछि आयू, कठिन कालके आँच। हरि सुमिरण बिनु पल ने बिताऊ कहलनि पंच ई पाँच॥ मोद मौज चाही भजिते रहु, विमुख संगसौं बाँच। नै मानव तौं अपने सीखब-होयत ओतए जब जाँच॥

-अन्नकूट-

॥ पद ॥ (९४)

आली लखो आनन्द आज अन्नकूट है। घर घर में सियावरको पवाने की छूट है॥ प्रेमी समूह झूमते हैं झाँकि झाँकि के, नव दम्पति की दिव्य छटा छाकि छाकि के, टक एक हेरि पा रहे आनन्द अटूट हैं॥ भोजन सुभक्ति से हैं बने भाँति भाँति के, हैं एकके अनेक बने जाति जाति के। पाते प्रिया प्रीतम विलोकु सुख की लूट है॥ कहने को चार छौ हैं औ छप्पनहिं प्रकारें, पर देखिये अनेको कटोरों की कतारें, खुशियालि गालि गानेवालियों की जूट हैं॥ यह झाँकि झाँकने में जो न मोद प्यार हैं, बेकार हैं भूभार हैं सौ सौ धिक्कार है, इनकी ही लगन ज्ञान और ज़ान झूठ है॥

॥ पद ॥ श्री हनुमान जयन्ती ॥ (९५)

आली महा आनन्द आज मातु अंजना। जायो सुवन सलोनो सुजन शोकभंजना॥ दसहूँ दिसा दरसा रहे हैं मांगलिक साज। सुरतरु प्रसून वर्षते हैं सुरसमूह आज॥ तपपुञ्जहीं प्रगट हैं आकि हैं प्रभंजना॥ आ०॥ अद्‌भुत प्रकाशयुक्त ये अनुपम हिं बाल हैं। हैं नयन पीत पीत अंग लाल लाल हैं। किधौं ये हैं महा कराल कामभंजना॥ आ०॥ आनन्द मग्न केसरी मणिगण लुटा रहे। लागै न दीठि मूठि दूभिदल खुटा रहे। अलिमोद मुदित जानि सियारामरंजना॥

॥ पद ॥ ह० ज० (९६)

आज बाजैं बधैया अंजनि अंगना। देखो देवन समूह बने

मंगना॥ कोई झाँझ मदंग बजावैं, कोइ सोहिलो सोहिलो गावैं, कोई भूषण वसन न्योछावैं, जो पावैं सोऊ लै लुटावैं-ताताथेइ ताताथेइ नृत्यत आवैं, गति दरसावैं विविधि ढ़ंग ना॥ आ०॥ कोइ देवी देव मनावैं, कोइ आशीर्वाद सुनावैं, कोइ राई लवण न्योछावैं, कोइ नील दिठोना लगावैं, मोद लाल छवि छाकि छवीली, लेवैं छमकि छीनि उछंगना॥ आ०॥

॥ पद ॥ (९७) ह० ज० सोहर॥

आजु अंजना माइके आंगन आनन्द छायउरी। ललना जगगुरु शंकर आप सुवनि बनि आयउरी॥ सुर किन्नर गन्धर्व मंगल सजि धायउरी॥ ल०॥ उमगि सुसोहिलो गाय सुमन बरिसायउरी॥ अजर अमर यह होई हैं सबही सुनायउ री॥ ल०॥ सुनि अंजना उमंगी न फूलि समायउ री॥ 'मोद' अंजनाजी के कोखि पै बलि बलि गायउ री॥ ल०॥ त्रिभुवन धनी की धनी सुवन धन पायउ री॥

॥ पद ॥ (९८)

आरती मारुतनन्दन की।
प्रणत जन दुःख निकन्दन की॥

शीशपर मुकुट पुरट दमकैं, भाल पर तिलक चारु चमकैं, गले में सुमन माल गमकैं। भृकुटि विकटीलो, नयन उनमीले, लसैं पीले पीले, चकोरन रघुकुलचन्दन की॥ आ०॥ दिये बरदान रामरनियाँ, ऋणी ह्वै गै त्रिभुवनधनियाँ, दिढाये नाम फोरि मणियाँ। सदा उर्धरेता, भक्तजननेता, कृपालु अहेता विभञ्जन दनुजन वृन्दन की॥ दया हम दीनन पर कीजै, बाँह गहि अपनो कर लीजै, सियाबर चरण 'मोद' दीजै, छाड़ि छलछद्म, नमो पदपद्म, सकल सुखसद्म, बिनासक भय भ्रम फन्दनकी॥

॥ श्रीरामजयन्ती ॥

॥ पद ॥ (९९)

आली महा आनन्द आजु मातु कौशला। पायो सुवन सलोना भयो पूर्ण हौसला॥ दिनमणि भुला रहे हैं देखि मांगलीक साज, सुरतरु प्रसून वर्षते सुर प्रगट हो हो आज, उमगा रही है भूमि हिय परम तोषला॥ अति ज्योति से जगमगित ये अद्‌भुत सुबाल हैं, नव कंजसे मुख नयन करन चरण लाल हैं-सर्वस लुटा रही है प्रजा प्रेम रोषला॥ दसस्यन्द जू आनन्द न फूले समाते हैं। लखपाते हैं जोई जोई सोई लुटाते हैं। अलि 'मोद' भक्ति-रत्न लूटि गावैं जोशला॥

॥ पद ॥ (१००)

श्री महाराज कौशल नरेन्द्र घर आनन्द आनन्द छाई हो, बधैया देन सब धाई॥ हो बधैया०॥ श्री अवध सहर गलि गलियाँ, चलि सोहिलो गावति अलियाँ, नृपछोना छवि दृग छाकि छाकि तनमन सुधि बुधि बिसराई हो बधैया॥ कोइ देवैं नील दिठोना, कोई वारैं भूषण सोना-सुरतरु प्रसून सुर वर्षि वर्षि जयजयति 'मोद' ध्वनिछाई॥ हो बधैया॥

॥ फुलबँगला ॥

॥ पद ॥ (१०१)

फूलों के आज बँगले में युगल सरकार बैठे हैं। किये शृंगार फूलों के, क्या छवि शृंगार बैठे हैं। हैं प्यारी पद्‌मपद पायल, बनी कलहार की अनुपम। पियासिर सुमन की कलंगी किये न्योछार बैठे हैं॥ सुभग रंग अरुण फूलों की लसैं सारी सियातन में। पिया धरि विविधि फूलों के कुण्डल गरहार बैठे हैं। लसैं कंचुकि गुलाबों की नवल अंग लाड़िलीजू के। जामापटुका प्रसूनों की, पहिरि सुखसार बैठे हैं॥ सजासजि दोउ फूलों से, हैं फूले मंजु फूलों पर। लखैं सब 'मोद' लतिका की सुप्राणाधार बैठे हैं॥

॥ पद ॥ (१०२)

ललित लड़ैती लाल लसैं फुलबंगला-ऐ नवेली लखु-सजि रहे सुमन शृंगार ऐ नवेली लखु॥ नखसिख सुखमा कहे न वनि आवै॥ ऐ०। लाजत अमित रति-मार॥ ऐ०॥ प्रेमिन के मन बिनु मोलही मोलावैं॥ ऐ०॥ मुसकै जबहि भुजडार॥ ऐ०॥ ललकि दोउन दोऊ अलकैं संवारैं॥ ऐ०॥ सुख सरसत बेसुमार॥ ऐ०॥ हुलसि परस्पर पान पवावैं॥ ऐ०॥ इतर सुँधावैं भरि प्यार॥ ऐ०॥ येहे सियाराम छथि सब सुखधाम॥ ऐ०॥ 'मोद' सदा सेबू ह्वै न्योछार॥ ऐ०॥

॥ पद ॥ (१०३)

लखुऐ सहेली लखु शोभाक बहार ए। नव फुल बंगला वनल मनहार ए॥ खिरकी खुलल चारु चहुदिसि द्वार ए। सुमनक छावनी छावाओल छविकार ए॥ सुमन सुखासन ऊपर प्यारी प्यार ऐ। सुछवि शृंगार आकी मंजु रतिमार ए॥ हिलिमिलि सजलनि सुमन शृंगार ए॥ सुखमा अपार कहि पावैं कौन पार ए॥ सेवैं चहुँ ओर सखि सौज कर धार ए। चमर व्यजन छत्र इतर फुहार ए॥ बिरिया पवावैं कोउ सुगन्ध न डार ए॥ कोउ छवि छाकी बहैं दृग जलधार ए॥ निज सियस्वामिनिपै 'मोद' बलिहार ए। करुणानिधानसँ करौलनि सरोकार ए॥

॥ पद ॥ (१०४)

लखोरी लखि श्याम सजन संग सिआ।

अनेक रंगों के सुमनों से बना है बंगला।
विचित्र मांगलिक वितानो तना है बंगला।
मदनहूँ मुग्ध कर सुगंध सना है बंगला।
लाखो त्रिभुवन धनी धनीहिं का बना बंगला।

बसा लो यह सुखमा सहेलि बिच हिया॥

दृगनि छाकिके ये छवि जो न्योछार हुए।

वे भूभार नराकार ही बेकार हुए।
विषय वासना के व्यर्थ वे शिकार हुए।
दिव्य दम्पती के जो न आशिकार हुए।
'मोद' त्यागि असी विष पिया।

॥ पद ॥ (१०५)

अजब अहाँक फुलबंगला पाहुन, अजब अहाँक फुलबंगला यो॥ छिति छत दर दीवार फुलहिंके वनल अनेकन रंगलायो॥ बेली जूही चारु चमेलि क लागल चहुदिसि जंगला यो। सुमन सिंहासन सियपुत लखि भए, कोटि काम रति कंगला यो। अलिगण कलरव माधुरि गावैं, यंत्रणि में बहु ढंगला यो। अरस परस लखि वलि वलि जावैं उरनि अनेक उमंगला यो॥ यद्यपि छी अहाँ चतुर चुरामणि, चित चोरय में चंगला यो। तद्यपि पूरण काम बनै छी, 'मोद' स्वामिनिहिं संगला यो॥

॥ पद ॥ (१०६)

सजि सुमन श्रृंगार, दोउ सोहैं भरे प्यार-छाई शोभा की बहार फुलबंगला में। दोउ गर भुज डार, देखैं दृगपट टार-प्रेमीजन बलिहार फुलबंगला में। मन्द मुसुकैं निहार, करैं हिया आरपार-रसवर्षै अपार फुलबंगला में॥ झाँकी झाँकी मजेदार, गावैं गुणी यंत्रधार- होत सुमन न्योछार फुलबंगला में॥ धन्य स्वामिनि हमार, धन्य राधो सरकार-'मोद' माचैं जयजयकार फुलबंगला में॥

॥ पद ॥ (१०७)

सोहैं दोऊ सुमन की बंगला। क्या मौज में हैं मदनरति संगला॥ छिति छत दर दीवार सुमन की, छाउनि सुमन सुमन की जंगला॥ सुमन मिले लसैं सुमन सेज पर, भूषण सुमन सुमन अंग अंग

ला॥ पगे परस्पर पान पवाबैं, इतर सुँधाय सुधैं सुउमंगला॥ इकटक हेरि देत नेहिन सुख 'मोद' अलिन लखि लखि भइ दंगला॥

॥ पद ॥ झूला (१०८)

चलु ऐ प्रियाजू चलु झूलन, श्रावण शुदि आइ तीज॥ लागल हिड़ोला मणिगिरिपर, स्वकर रचल जनु मनसीज॥ पियजु सुखासन सम्वारलनि, अहाँक सुहित मति रीझ॥ रुचि भरि झूलि झुलायव, गायब सुपावसक चीज॥ अतिशय सुख सरसायब, सहचरिअन कहुँ नीज॥ धरि गरबाँहि तपनिबुझायब 'मोद' मंजुल रस भीज॥

॥ पद ॥ (१०९)

हेयो प्राण प्यारेजू एना किये झुलबैतछी। कहू की अहाँ के हम अहाँ सन, अहैं त छी॥ उझकि कै झँकैत छी, झोंकैत छी झुमैत छी। डाँर लचकि जायत यो येते किये लमैतछी॥ कतेंक हम कहैछी एको काने नै करैत छी। हाथ कचकि जाएत यो एते किए झोरैत छी। स्वामिनि क संकोच सँ, अहाँक सब सहैत छी॥ तैं अहाँ निशंक ह्वै करै छी जे चहैत छी। प्रियवर घनश्याम कि घाम सँ घमवैत छी। 'मोद' झुलाउ रसहि रसहि सीस हम नमैत छी॥

॥ पद ॥ (११०)

प्यारे प्यारी को झुलावैं गावै। रस भरि तान। अलिगण करैं यन्त्रणि लय, गति उघटान॥ मन्द मन्द मुसुकाय कछु कहैं लगि कान। मानो भृंग कंज लय मरन्द करैं गुण गान॥ अति प्रेम सो पवावैं प्राणप्यारी जु को पान। मानो अमी हित अहि पूजैं चाव कय कय चान॥ प्यारी पालने बिठा आप ठाढ़े सुख खान। मानो निज रति को झुलावैं मैनतजि मान॥ छवि छाकि छाकि सखिगण भूली तन भान। कहैं जयति जयति जय जय, 'मोद' मुद दान॥

॥ पद ॥ (१११)

दोउन दृग दोउ झूलैं-लखिसखि अँखिअन फूलैं॥ वनप्रमोद बिच सजी सजावन, जोहत जिय मनसिज उपजावन, बनि हिड़ोल तामें तड़ित लजावन-तापै दम्पति समतूलैं॥ सहचरिअन जन्त्रादि बजावैं, मृदु माधुरि मलार भरि गावैं, बरवस मन रस लय करवावैं सरसि रही सुख मूलैं॥ दोउ अंसन भुज गहे परस्पर, मुख मयंक रस रसे सरस तर, एकहिं से दोउ लसैं सुरसभर-'मोद' अपनपौ भूलैं॥

॥ पद ॥ (११२)

लखु सखि सरयू पुलिन सियपियवा, झूलि रहे संग सियवाके। कदम्ब डार महँ लागी हिरोलना, नव रंग मणि कमनीयवा के॥ मध्य प्रिया प्रीतम छवि निदरै, अगणित मदन रतियवाके। श्रीचन्द्रकला लाड़िलि दिसि ठाढ़ी, चारुशिला दिसि पियवाके॥ लंक वंक करि मारत मचकी, हलरत भूषण हियवाके॥ परसि परस्पर सुख सरसावैं, अमि वर्षावैं अँखियवाके॥ पारा पारिन झूलि झुलावैं, आस पुरावैं सब तियवाके। एकटक पीवत 'मोद' माधुरी, जरनि जुरावत जियवाके॥

॥ पद ॥ (११३)

प्यारीको परम प्रेमसे। प्रियतम झुलाइये। रहिचे हवास में, न होश को भुलाइये॥ कलहारों की कलिकाहु से कोमल हैं श्रीलली। अति प्रेम में विभोरहो, न डगमग डुलाइये॥ जुरि आइहैं, चहुँओर ते, अलियाँ सु झुण्ड झुण्ड, प्रमदा गणों की प्रबलता गुणि, भय जु लाइये॥ मुसकाके झुकके झूमके, कुछ कहके लगके कान। निज श्यामता को सीयकी धवलीसे धुलाइये॥ भुज अंस दै कर कंज धय, हिलमिल के युगल चन्द। प्रेमिन चखन चकोरि को पलकैं खुलाइये॥ है 'मोद' अगर तौलना, तजबिज की तुला पै। सियस्वामिनी की छाँह में निजको तुलाइये॥

॥ गजल ॥ (११४)

यों ही झूलन की सदा झाँकि झँकाया करिये।
छवीली छविपै छपाकर को छकाया करिये॥
रितु पावस है रहना होगा, प्रमदाहीं के बस बस।
पलपल प्यारिको निज ओर तकाया करिये॥
आईं बनठनके हैं सहेलियाँ, स्वामिनि सियकी।
कसर सधायेंगी ये, इन सबसे सकाया करिये।
झोंका दीजिये प्यारेजू, पर रखिये अन्दाज।
नहीं तो 'मोद' सुमनचोट को खाया करिये॥

॥ गजल ॥ (११५)

झुलिये रसिक राज ये, पावस रसों की रासी है। मत शरमाइये इत सबहीं, खास दासी है॥ रखिये खुब ख्याल सदा, लाड़िली रुख रखना है। जो अति कोमल है अमल, कंजकी कलिका-सी है॥ आई मिथिलानियाँ सब, झूलने अरमान भर भर। सबै मुग्धा हैं तदीया हैं, औ अभिलाषी हैं॥ पुरैये 'मोद' की ये, आसरा ऐ रसिकेश्वर। चूँकि आज रश्म है सावन है पूर्णमासी है॥

॥ पद ॥ (११६)

पावसऋतु रस लूटैं श्रीसूर्यू किनारे हो रामा। गम् गम् गमकैं झम झम झमकैं, झहरैं फुहारे हो रामा॥ ललित हिरोला हिलमिलि ललना लगाई कदम्ब के डारे हो रामा। छन छन नव नव ज्योति सुजागैं, जगमगारे हो रामा॥ परम प्रमोद भरे, प्यारी अंक धरे, झुलैं पिय प्यारे हो रामा॥ लखि लखि ललना नवेलिनि तन मनबारे हो रामा॥ यन्त्रणि बजावैं, गूढ़गति दरसावैं, गावैं सुमलारे हो रामा॥ दम्पति रीझि रीझि रसवर्षें दृगनि इशारे हो रामा॥ झुलतहिं रसिआ, बिताई सारी निसिआ, ह्वैगैं सकारे हो रामा, 'मोद' पलहूँ न चाहैं होन न्यारे हो रामा॥

॥ पद ॥ (११७)

रामरसिआसुजान रसे रसे झूला झुलि रहे। श्रीसिय प्यारिके, सुखमा निहारिके, निजसुभाग पर फूलि रहे॥ सील विचारि, स्वभाव विचारिके आपहिं आप अतूलिरहे॥ भूषण सुधारिके, वसन सम्बारिके, मृदुकरकंज टटॅूलिरहे॥ वीरीपवाइके, इत्र सुँधाइके, इकटक ह्वै तन भूलि रहे॥ युगल टकाटकी, दृगन टिका यदि, 'मोद' तो दृग में धूलि रहे॥

॥ पद ॥ (११८)

सखि झाँको झुलन झाँकी, दोउ झूलते झमकसे। क्या पेंगे है बढ़ाते, प्रीतम प्रिया रमकसे॥ साजे सजाये दोऊ, नवसावनी पुशाकैं। दीपैं दिसान दसहूँ दम्पतिकी दमक से॥ पिय मकुट हैं पुरटके, नवरंगमणीन जटके। चख चौंधती बेखटके, सिय चन्द्रिका चमक से॥ जुरि आई सकल ललना, अबतो इन्हैं है कल ना, पड़ती हैं काहु पलना, ठगि ठगि रही ठमक से॥ तकि बंक करै बतिआ, लहरावैं प्रेम छतिया, भ्रमि आवैं भ्रमर पतिआ, मुख दोउ के गमक से॥ लहि प्यारि अंग परसैं, बहुरंग छटा दरसैं। प्रेमिन प्रसून वर्षै, भरि 'मोद' छम छमकसे॥

॥ कवित्त ॥ (११९)

पावस में अकेली भूलि जइयो ना प्रमोद मोद, धरि धरि मोद गोद पिय हीय हीकसावैं हैं॥ नाहीं को अर्थ वे लगावत हहाँहीं दई, मैन मद माँत माँत दाँत खिकसावैं हैं॥ अधर मदिरापी चाब कैकै चाँपी चाँपी अजू वापी ते न भूलि हूँ मकर निकसावैं है॥ अरज भुलावै, निज गरजनको लावै, कर कंजनि ते हीयकंजकलिका विकसावै हैं॥

॥ पद ॥ (१२०)

कब लखिहैं ललकि के हमार आँखैं॥ प्रभु-दरसन अति

सरस हेत तू, तरसे न कबहू गमार आँखैं। चाम चमकहीं में सचाव रहे, चंचल नीच चमार आँखैं।। बिज्जुघटा-सी छटा में अँटकिहैं हाँझै तबहिं सुखार आँखैं।। श्याम पूतरीहीं से सूझैं मोद न बूझैं बेकार आँखैं।।

॥ पद ॥ (१२१)

श्रीसीतारामनाम महराज हृदय में घर कीजिये।। करहु सदाशुभ काम सुमति ऐसो दीजिये। बीतेउ जुगनि भ्रमत जोनिनमें, करत सदा मनोराज-कुमति ऐसी छीजिये।। तब सुमिरण छूटै नहि छिनहू, 'मोद' हीं दया दराज आपन करि लीजिये।।

॥ पद ॥ (१२२)

परब्रह्म परमेश्वर अपरम्पार हैं श्रीसीताराम।
सर्वोपरि सर्वेश्वर सबका सार हैं श्रीसीताराम।
अखिल विश्व का एकमात्र आधार हैं श्रीसीताराम।
शरणागत का सच्चा साहूकार हैं श्रीसीताराम।
नरसीं के हुण्डी कोसकरनहार हैं श्रीसीताराम।
केवल शुद्धप्रेम सेही लाचार हैं श्रीसीताराम।
सदना बधना पानी अँचवनहार हैं श्रीसीताराम।
अमित मदन रति मद मर्दन छविभार हैं श्रीसीताराम।
प्राणों से बढ़कर प्रेमिनको प्यार हैं श्रीसीताराम।
नेही जन की नेह नयन की सार श्रीसीताराम।
'मोद' अली की भला भली सरकार श्रीसीताराम।

॥ पद ॥ श्रीसीयाजू की जयन्ती (१२३)

जनकपुरी आजु आनन्द आनन्द छायउरी।
ललना रानी सुनयना गुणखानि सुता शुभ पायउरी।।
जासु दरसहित शम्भु समाधि लगायउरी।।

ललना सोइ भक्तन सुखदैन आप प्रगटायउरी।।
उमारमाब्रह्मानि रूपतजि धायउरी। ललना।
निरखिलली मुखचन्द सबहिं अरूझायउरी।।
सुर करि जय जय सोर सुमन बरिसायउरी।
ललना, लखि लखि पद मुख 'मोद' सु सोहिलो गायउरी।।

॥ पद ॥ (१२४)

घर घर बजत बधाइ सखी, सियजन्म सुहाई।। वेद भेद नहिं पावत गावत, ताहि बेदन बिनु पाई सखी, सिय जन्म सुहाई।। हरदि दुब दधि कनक थार भरि, झुण्ड झुण्ड मिलि आई सखी सिय०।। गाय सुमंगल ललकि ललकि सब हेरहिं पलक भुलाइ सखीसि०।। भूषण वसन सुधा सन वासन जाचक पाइ अघाइ सखी सिय०।। नित नव नव आनन्द जनकपुर अधिक अधिक अधिकाइ सखी सिय०।। 'मोद' सहज सुख सद्म सियापद पद्मन आस लगाइ सखी सिय०।।

॥ पद ॥ (१२५)

ए सियवर करुणाकोर की, एक बार नजर करना। मेरी अँखिया इन्तजार में तड़पके चाहे मरना।। बिन झाँके तेरे झाँकिको, झहराती मानो झरना। हैं जिग्र विरह की ज्वालसे, जरती ज्यों सूखी जरना।। जो करियेगा मेरे कर्मकी, अनुसारहीं अनुसारना।। कोइ कैसे कहिहैं आपको, प्रभुजी हैं औढर ढरना।। आपस में भरे उमंगसे दोउ, अंसन भुजको भरना। लखती रहै अँखिया मोदकी, सर साती रहि नित शरणा।।

॥ पद ॥ (१२६)

आइ जसोदा माइके अंगना आनन्द छायरी। अति सुखरासी प्रभु गोलोकवासी सुत बनि आयरी।। सुर किन्नर गन्धर्व गण गाय, दूब दधि फूल बरसायरी। स्वर सोहिलो दसहु दिसि सरसायरी।।

रोचन कनकथार भरि, गुञ्जरिन धायरी। लखि लखि नन्दनन्दन लेहैं बलायरी॥ महरि तुं गोरी गौर महर सुवन श्याम कहाँ पायरी। गावैं मंगल सुगारि मोद सरसायरी॥

॥ पद ॥ (१२७)

देखू देखू देखू सजनी सोभाके बहार हे। आनन्द बधैया बाजै नन्द जी के द्वार हे॥ आय लिये गोप गोपी, मांगलिक थार हे॥ ढोलक मंजीरा झाँझ, डंफ कठतार हे॥ नाचि नाचि गावैं सब करिके जुहार हे। सुमनि बरसि सुर, बोलैं जय जय कार हे॥ भूषण बसन बहु, असन भण्डार हे। महर लुटावैं लूटैं, देव ह्वै भिखार हे॥ महरि लुटावैं सारी चोली बूटेदार हे। छोना छवि छाकि छाकि मोद भइ न्योछार हे॥

॥ पद ॥ सोहर ॥ (१२८)

नन्दमहर घर आनन्द नौवत बाजतरे। ललना चलु चलु देखन जाउँ महरि सुत छाजतरे॥ करि करि सोरहो श्रृंगार थार सजि ग्वालिनिरे॥ ल०॥ गावती मधुस्वर गीत चली, गज चालिनिरे॥ झुण्ड झुण्ड मिलि आवहिं सदन समावहिरे॥ ल०॥ नन्दनन्दन मुखचन्द चकोरि ह्वै चितावहिरे॥ महर महरि गोर गोरि कान्ह काहे कारिहिरे। ल०। उमगि उमगि उर 'मोद' देत सब गारिहिरे॥

॥ पद ॥ (१२९)

श्याम गौर दोउ वांके हरे, यह कौन कहाँ के। चोरत चित्त चलाय चखन को, चंचल चतुर चलाके हरे। यह कोन कहाँके॥ देखतहूँ अनदेख सी लागत पागत नयन नकाके हरे॥ सीतहिं जोग अहैं बर साँबर रानिहिं कहा सब जाके हरे॥ यह०॥ प्रण परित्यागि विवाहहिं सीतहि कन्तहि कहँहि बुझाके हरे। नातरु होइहैं दाह उरन्तर अन्तर होत ललाके हरे॥ यह०॥ ये अवधेश किशोर अहैं सखि

मुनिवर लाय बुलाके हरे। 'मोद' दियो मुनिको मखराखिके तारेउ नारि सिलाके हरे।। यह०।।

।। पद ।। (१३०)

निरखु सखी, ऐ किसोरी के कन्त।। जासु अंग रंग लखि जलद जलावैं री, छकि जावैं छविकाम अनन्त।। चरण महावर अति लहलहावैं, जगमगावैं नखज्योति जगन्त।। डाँरे पीत धोती हरत बिज्जुज्योति, जड़ितजामा पर चदराफवन्त।। साजेब्याह भूषण मओर किधौं पुषण, अधर मधुरे पान ललाई लसन्त।। कुसुमी रुमाल नासामणि रसाल, रसिक हिअरा संग संगहिं हलन्त।। नयननि कजरा नेहभरे नजरा, सुगर गजरा मणिदाम द्युतिवन्त।। 'मोद' भाग्यभाजन, भइ पाय साजन, सुप्रसादे गौरी शम्भु भगवन्त।।

।। पद ।। (१३१)

नवल चारो नवसय अवलोकु ऐ अली।। माथे मंजुल मौरन, लाजैं बिज्जु इजोरन, केसरि दधि खौरन भृकुटि सुभली।। नयनन नेहजोरन, काजर कोर कोरन, चितौनी चित्त चोरन-चोरैं चारु चली।। अलक डोलैं गालपै, मणी नासा उत्तालपै, अधर लाल लाल पै जाऊँ वली वली।। हसनि मन्दमन्द री, हैं मोद मुदकन्द री सुपद अरविन्द री लाओ हिये थली।।

।। पद ।। (१३२)

गणप गौरि गोहराय के गाउ सुमंगली। विप्रसन्त सिरनायके गाउ सुमंगली।। जनक नृपति की जाइके गाउ सुमंगली। चारो दुलह सुखदाइ के गाउ सुमंगली।। नयननिको फल पाइके गाउ सुमंगली। पीत सुमन बरसाइके गाउ सुमंगली।। चारु दम्पति हिय लाइके गाउ समंगली। 'मोद' महा मुद छाइके गाउ सुमंगली।।

॥ पद ॥ (१३३)

साजो साजो सहेलि रंगसाजरी। रंगसाज सजि, सकल ला तजि, सियसिय प्यारे संग, छयल छलवारे संग, करोरंग जंग आलि आजरी। कटि पीत पट छीनि, पहिनाय सारी झीनी, चोलीदै चटकदार, झुमक दय झलकार, चन्द्रिका पेन्हाओ छिनि ताजरी॥ संगहि नचाओ मिलि, गाओ औ गवाओ भलि, घूँघट सुकढ़वाओ, प्यारि पाँव परवाओ--'मोद' लूटैं सखिन समाजरी॥

अवध नवेली

॥ पद ॥ (१३४)

चलो सखी जानकीघाट, सज्जनहित जानकि अइहैं। करि निजकर खटरस व्यञ्जन बहु, पियप्रीतमहि पवैहें॥ हित भरि हेरी जानि चेरी, रघुवीर स्वभाव सुनइहैं। लखि छवि नयन बयन सुनि कानन, उर आनन्द सरसइहैं॥ चलो लाओ झटपट कलसन, न तो आय सिया फिरि जइहैं। 'मोद' टेर सुनि चली अली, हिलि मिली महामुद छइहैं॥

॥ पद ॥ (१३५)

ऐ प्यारी निन्दिआ युगल नयन आ जा। अलसाने झपलाने नजरा, चारुलखा चख जरनि जुराजा॥ होरी रास रहस्य सुरति श्रम, ऐ सुखदे तूँ आय दुराजा॥ मंजु कंज कर धरे परस्पर, हरे हरे छविरस सरसाजा॥ चखा अमित रति मदन माधुरी 'मोदहिं' मोद देइ हरषाजा॥

॥ पद ॥ (१३६)

पाहुन छी अहाँ महा कनौना। भरिसक अहाँ-कनौलौं हुनको, जिनकर भेलौं छौना॥ मातु कैशल्या पावनि कैलनि, रंगक थार जुठौना। थरथर काँपिकए व्याकुल भेली, तखन कैल मुसुकौना॥

अस्थिमात्र सुखि भेला स्वयम्भुव, त देलिऐन वरदौना। प्राणक प्रण करवा सियजूसँ, शंकर धनुष तोरौना॥ सूतलछोरि अवध वासिनके, नयन नीर झहरौना॥ पाहि पाहि सुनि पाहि भरत के, पट धनुसर बिसरौना॥ व्याकुल ह्वै खसला बजरंगी, कैलिऐन हीय मिलौना। महाविरह में तड़पा तड़पा, पितुसुरलोक पठौना॥ बहुत दिवसनिसि कलपैत बीतल, अब न उचित कलपौना। मन भरि 'मोद' मिलू न त छोरू करुणानिधि कहौना॥

॥ प्रार्थना ॥ (१३७)

लघुचेरिकी सुनिये विनय, सियस्वामिनी सियस्वा०
छमि दीजिये पिय में प्रनय, सियस्वामिनी सियस्वा०
मन मग्न हो गुण गण गणय, सियस्वामिनी सियस्वा०
नहिं जाय दृगते छविछनय, सियस्वामिनी सियस्वा०
सत संग हो सब काल में, सियस्वामिनी सियस्वा०
रति होवैं श्री रघुलाल में, सियस्वामिनी सियस्वा०
नमताइ होवैं भाल में, सियस्वामिनी सियस्वा०
जीजा फसैं छविजाल में, सियस्वामिनी सियस्वा०
मौन रहना प्रीय हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
जेवनको जूठन जीय हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
पद पर्स तर्सन हीय हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
हर्दम सुरति भवदीय हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
सौभाग्य भूषित माथ हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
लव मात्र विलग न गाथ हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
थात्यों पुनह सिर साथ हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
ना भावती पर गाथ हो, सियस्वामिनी सियस्वा०
कब देखैहौं मुखन्द हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
टपकट छबी अमिबुन्द हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
राजति सहित सुखकन्द हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
जिय बसिय मुसुकत मन्द हे, सियस्वामिनी सियस्वा०

लालित चरण ब्रह्मानि हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
मोहि लखैये निज जानि हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
जयजयति सद्गुणखानि हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
फल चारिहूँ को दानि हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
रघुवंश की सौभाग हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
पुनि करनि जिय पियलाग हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
रखु शरण दय अनुराग हे, सियस्वामिनी सियस्वा०
को 'मोद' को तोहिं त्याग हे, सियस्वामिनी सियस्वा०

॥ पद ॥ (१३८)

जो दिन बीता सो बीता मीता, करु अब सियपिय पद प्रीता। सोचु उरन्तर अन्त समय को है तेरो हीता॥ सद्गुरु से ले युगल मंत्र जपु, जब-तक तूँ जीता। ह्वै शरणागत शुद्ध भाव से, त्यागहु तूँ चिन्ता॥ रामभजन विन मिटै न कबहू, भव भ्रम जम भीता॥ वसि सतसंग रसिक सन्तनके, सीख भजन-रीता॥ करिहैं पूरण काम राम, हीतल सीतल सीता॥ पगिहैं 'मोद' महा परमानन्द, लगिहैं विषय भोग तीता॥

॥ पद ॥ (१३९)

समझ बूझके रंग अंग पै डार ऐ रंगरसिया। ना तो फिर बचना होगा दुसवारऐ रंगसरिआ॥ झुण्ड झुण्ड मिथिलानीगण, सबहीं के सब हैं अनखानी। धर बरजोरी बनायेंगी नव नार ऐ रंगरसिआ॥ चारु चरण में जावक देंगी पायजेव पहनायेंगी। सरिआ खूब सँवारेंगी गुलेनार ऐ रंगरसिआ॥ चित्रित चामीकर कंचुकि में, ऊँची उरज कसाएँगी। हिय में देंगी चम्पाकलि चन्दहार ऐ रंगरसिआ॥ कंकण चुरिआ बाजू हैकल, हसुली गर अधरन में तिल। नकबेसर झुमका देंगी झलकार ऐ रंगरसिआ॥ चोटी सींटि गूँथि पाटी, सिन्दुर भरि 'मोद' सजायेंगी। पड़वायेंगी सियपद पै सौ बार ऐ रंगरसिआ॥

॥ पद ॥ (१४०)

अब हम रंगिये जैबे ना सजनी रंगीला सिय साजन लखि रंग रंगिये जैबे ना॥ अँखिआ जितहिं जावै, तितहीं दिखावैं बिरह दव दगिये जैबे ना। रौनक रोम रोम लहरावैं मति गति छगिये जैबे ना॥ लोक लाज कुलकानि, कछुओ न भावे, निन्द से जगिये जैबै ना। अब हम जातिपाति कुल-कर्म धर्म से टगिये जैबे ना॥ चतुरी गुनत रहीं, अपनाके अपने, सुमति से डगिये जैबे ना॥ लगन लगल अब, नवल लालसे ललकिके, लगिये जैबै ना॥ सीय सरकारजी से, जोरि सरोकार सबै विधि सगिये जैबे ना॥ स्वामिनि कृपाकोर सौं 'मोद' प्रेममें पगिये जैबैना॥

॥ पद ॥ (१४१)

ऐ मैथिली मिथिलापै नजर फेरिये जरा। कर दीजिये निज भक्ति से इसके हृदय हरा। विद्वान हों बलवान छमावान दयावान। नीतिज्ञ सदाचारी शुद्ध सभ्यता भरा॥ हों दूर द्वेष दुर्मती दुर्भाव दुराचार, परिपूर हो सद्भाव सद्उद्योग से धरा॥ नैहर की नात मानि सबै 'मोद' दीजिये। अपना ओ अपने कन्त का कीर्त्तन करा-करा॥

॥ पद ॥ (१४२)

अब कब सियाराम सियाराम रटवे। जगत रहट सौं हटवे। एकसौ बारह युग बीति गेलौ, खटैत खटैत कत खटवे। नाम रटन तीक्षण कुठार लय, कब निज फन्दा कटवे॥ चौरासी लख पहिरि चोलना, नटले अय कत नटवे। जूठा अधर अनूठा गुणि गुणि चटले अबकत चटवे॥ सदा अविद्या के बस होके, घटले अब कत घटवे। चेतन अमल सहज सुखराशी, बनक ठाट कब ठटवे॥ वाद कुतर्क त्यागि शिवशंकर मत पथ में आ डटवे। नाम सनेहिन के संगतमें 'मोद' बता कब सटबे॥

॥ पद ॥ (१४३)

अरे मन सियाराम सियाराम रटतूँ। विमुख संगसे हट तूँ॥ जिनके संगसे सुमिरण भूले, भूलिन जाहु निकट तूँ॥ हिंसक निन्दक आय जुटैं तो ऊठि जाहु चटपट तूँ। नामरटन बिनु कटै न संकट जानिलेहु अलगट तूँ। उल्टा रटिके व्याध ब्रह्म भय सुल्टा रट में डटतूँ॥ नीच जानसबसे अपनाके मान प्रभुहिं घट घट तूँ॥ नाम अगर भूलि जाय हाय कहि सुमिरणकर पुनि झट तूँ॥ नटत नटत बहुतो युग बितलौ, अब नटखट मत नट तू। 'मोद' अगर चाहैं परमानन्द, सन्त समागम सट तूँ॥

॥ रास-प्रकरण ॥ पद ॥ (१४४)

श्रीरघुनन्दन रसिक सिरोमणि रास रचायोरी। नख सिख भूषण वसन सँवारि नवेलिनि धायोरी॥ चित्रित चान्दनि चारु सुहावन। कोटिन सरद मयंक लजावन। फर्स सजी मलमली बिछावन। मानिनि के मन मैन जगावन, लयलय यन्त्रणि सब सहचारिणी समसरसायोरी॥ मध्यविराजैं प्रीतमप्यारी। अगणित रतिमनमथगतिहारी। दम्पति देत ताल पर तारी। रसभरि कहैं वाह बलिहारी। लागीं नृत्य करन ललनागन छननन-छायोरी॥ नयननि ते नयननि जब जूटैं। कंचुकिबंद तरातर टूटैं। रसिआ रहसि-रहसि रस लूटैं। मोतिन हरिआचुरिआ फूटैं। आनन्द उमगि उमगि अंग अंग अनंग समायोरी॥ मन्द मुसुकि दइ इन्दु इसारा। ह्वैगै अमित रसिक सरदारा। द्वैप्यारी बिच बिच पियप्यारी। नृत्य करैं करि कला अपारा। सूर्य सिथिल नाद सुनि 'मोद' महामुद पायोरी॥

॥ पद ॥ (१४५)

सियपिय लूटैं सरद बहारैं, सरयु किनारे हो रामा। आपसमें दोउ तनमन बारैं, गरभुज डारे हो रामा॥ वीणा इन्दुकला झंकारैं। ललनागण गति पै पग धारैं। पैजनिध्वनि छुम्म छननन छननन छुम्म

छम्मकारैं हो रा०॥ नृत्यैं कोटि कलान नवेली। सर्वकला कुशला अलवेली। गावैं सप्तस्वरन त्रयग्राम मूर्छना धारे हो रामा॥ प्रीतम उर उमंग अति बाढ़े। द्वैप्यारी बिच विच भय ठाढ़े। सरस्यो 'मोद' मंजु रस साम से भयउ सकारे हो रामा॥

॥ पद ॥ (१४६)

सजनी आजु अशोक विपिनि में रास रचाये हो रामा। साजे नटनि साज रंगरसिआ रंग मचाये हो रामा॥ यन्त्रणि मिलाये अलिअन समसरसाये रस उमड़ाये हो रामा। तदिअन दिरना तुमतन दिरना गति दरसाये हो रामा॥ युगल माधुरि गाय गाय उमगाये, तनहिं भुलाये हो रामा। नेही नाहजू नेह नहाये सबहिं रमाये हो रामा॥ वीना को बजाये चन्द चन्द्रहिं थम्हाये चलन भुलाये हो रामा। अद्भुत वाद्यकला लखि प्रीतम कंठ लगाये हो रामा। अलिन विलोकि फूलि फूल वरषाये, भइ मन भाये हो रामा। 'मोद' मोदहूँ के हीय मोद छाये हो रामा॥

॥ पद ॥ (१४७)

रमि रहे रमताम्बर रमिताम्बरा। पगि पगि परमानन्द प्रेमापरा॥ बहु दम्पति ह्वै कल केलि करैं, अंग अंग अनंगनि रंग भरैं, यह भेदन और को जानि पड़ै, युग मल्ल जुरे जनु जोश भरा॥ रमि॥ सबही रमणी यह जानत हैं, सबसे बढके मोहि मानत हैं, अधरामृत को सब छानत हैं। उन्मत्त भई न टरैं न टरा॥

॥ पद ॥ (१४८)

प्रीतम रंक सरिस भरि अंक रतन रस लूटैं री। क्या टिकि रही अटूट टकाटकि कबहु न टूटैं री॥ कसि भुजपास परस्पर सीपी, मत्त भये अधरासव पीपी। दोउन दमक दसो दिसि दीपी, मती

सहेलिनि केलि अमीपी, चंचल चारु लंक कल अलक कपोलनि छूटैंरी।। अलिअन लय मैरेयन प्याला, प्यायै मादक भरी निराला, अरुझ्यो दोउ महा रसजाला सरुझन अगम भये तिजहुँकाला, रसिकन सम्पति दम्पति जुट्यो बहुरि नहिं जूटैं री।। कविकोकिल रमताम्बर गायो, रमुक्रीड़ा श्रुतिटेरि सुनायो, यह रस रसिक संत अपनायो, पलपल मोद परानन्द पायो, नाम रटैं रस एक सो रसिक लहैं रस घूटैं री।।

।। पद ।। (१४९)

कंचन बिपिन कूल कमला के, नृत्यतगावत दोउन तननन। करकंकणियाँ, कटिकिंकिणियाँ पग पयजनियाँ, बाजत झननन।। रमकि घुरनि गुड़कनि लबि लुड़कनि, उरनि छुवनि छमकनि छुम्म छननन। झुमि झकनि झोकनि भुज झिझकनि, अंगनि भूषण रव रुम्म रननन। बैठनि उठनि ठुमुकि पिठ ठोकनि ठगि ठगि ठमकनि ठुम्म ठुम्म ठननन।। भरि भरि गोदनि पगनि प्रमोदनि मोद सुमोदनि गुम्म तन मननन।।

।। पद ।। (१५०)

नै कहाइ ऐ केहुना, कोना कहु पहुना, पल कलप बुझाइऐ अहाँ दुहुँक बिना।। सदा लखितैं रही रुख रखितैं रही, चित चखनि चहैऐ आब येहे चहना।। लखि सुखमा अपारी, अहाँ प्यारी पर वारी। ओहो मुग्ध रहथि अहाँ लखितहिना।। बीरा रुचिर बनावी, अति प्रेमसौं पबावी, मुख पोछि सुख पावी, से अकथ कहना।। दोउदृग मारा-मारी, देखी पट ओट टारी, जेहि जोहे बिनु जाति न दृगनि दहना।। सीता सीतल करैया, सुनुगुनु सियसैंयाँ, हिय निवसु सदैया मानू 'मोद' कहना।।

॥ पद ॥ (१५१)

अजब तुम्हारी शान्ती, ये सियवर अजब तुम्हारी शान्ती। वह अपने रंगमें राती ये सि०॥ यह तिनहीं को ताकती, तजैं तीन अभिमान। परदुख परसुख सुखी, जानै सबहिं समान। उन्हीं को प्रेमसे कंठ लगाती ये सि०॥

धन विद्या बल रूप गुण, सबहीं मद करि चूर। औरन को अति आदरैं, आपबनै पग धूर। उन्हीं संग सोती ओ सुखसे सोलाती ये सि०॥

सोई शाहंशाह है, सोई है सुखराश। जिनके हिय में है सदा, तेरी बहन का बास। सोई धन धन्य अहैं सब भाँती ये सि०॥

जहाँ विलोकत आप हैं, वहाँ जाति ये दौर। भाइ-बहन में मेल अस, लखी न दूजी ठौर। प्रशंसा 'मोद' करैं केहि भाँति ये सि०॥

॥ गोपाष्ठमी ॥ (१५२)

गोमाता की सेवामें, लगजायँ सभी प्यारे भाई।
है भारत को भरना सुख भण्डार अगर प्यारे भाई॥
जब जब धरा अधर्मियों से, अति अधीर हो जाती हैं।
तब तब गौ का ही शरीर धर, प्रभु को टेर बुलाती हैं
मटिआमेट मिलाते हैं, दुष्टों को वह जनसुखदाई॥
गोसेवा सिखलाने हित वह, खुद आ धेनु चराते हैं।
गोरस के चसके नटनागर, शौकत शान भुलाते हैं।
गोरस हीं के कारण ऊखल, से बँधवाये कन्हाई॥
रघुवंशी गुरुवर वशिष्ट, शवलाकी सेवा करते थे।
नृप दिलीप गौओं के पीछे, पीछे सदा विचरते थे॥
गौ को ग्रास दिये बिन भोजन, नीति उचित नहि बतलाई॥
गोहत्या जिस राज्य में होती, प्रजा अन्न बिन मरती है।

नाना व्याधि उपाधि भयंकर, टारे भी नहिं टरती है॥
पाना चहै 'मोद' तो घर घर, प्रण करके पालैं गाई॥

॥ पद ॥ (१५३)

दुख देती है ठोक बजाइ, अनादर गौओं को। दुर्लभ हुआ गोदुग्ध, अब हम क्या नहीं पीते। मुर्दे बने हैं साफ, सिर्फ नाम को जीते। दिनदिन बढ़ै रोग सवाइ। अ०॥ गोबर की खाद डाल, जब थे अन्न उपजाते। होती थी शुद्धि बुद्धि, रोगहीन थे गाते। अब क्या बने कहि नहीं जाइ॥ अ०॥ निज दुग्ध से हमको सदा, बलवान बनाती। निज पूत से धर्ती जोता, दुनिया को जिलाती। तिनके हित कछु न उपाइ॥ अ०॥ गोभक्ति अगर आज सबके दिल में आ जावैं। आश्चर्य कुछ न 'मोद' रामराज्य हो जावैं। गोहत्या देहु उठाइ॥ अ०॥

॥ कवित्त ॥ (१)

एरे चित्त चंचल तूं हो जा अब अचल, सुन कर्मभूमि आये तो सुधर्म कछु कमायले। जनम लै अनेक माते जगनाते महँ एको बार सियबर से नाता तूं लगायले। बैठिके निरन्तर श्रीसीयराम-मन्त्र जपि, मोद तूं उरन्तर में लाड़ को लड़ायले। सियाराम रटिवे में कैसे सुख होत सो तो, सियाराम सियाराम रटिके अजमाय ले॥

॥ कवित्त ॥ (२)

जोनिन में जन्म लै-लै सहते क्यों महादुःख विमुखनके संगत से अवहूँ मुख मोड़ दे। छीजत हैं छिन-छिन यह देवहूँ को दुर्लभ देह, सन्तनसों नेह कै कै छल-छन्द छोड़दे। तिया ओ तनय तो तेरो अन्त को न साथी याते, ममता के तागन को तड़ातड़ के तोड़ दे। 'मोद' चाहैं यदि तूं जमालय में न जाना तो जानकी के जीवनजू में जियराको जोर दे॥

॥ कवित्त ॥ (३)

कीजिये सनाथ नाथ जानिके अनाथ, सुनि आयो गुण गाथ मेरे माथे हाथ दीजिये। दीजिये सनेहिनकी सतसंग सीयकान्त, भवपन्थ थके जानि अपनाय लीजिये। लीजिये सम्भारि निजविरद को रघुवीर अपनी छमाते मेरो छलछन्द छीजिये। कुवासना उपासना बसैये उर मिथिला के नाते 'मोद' खता माफ कीजिये।

॥ कवित्त ॥ (४)

आये थे यहाँ तो नेक सौदा ही बेसाहने को, लेकिन खुब जान-जान करते बदसाजी तूँ। जिह्वाके स्वाद हेत हत्या से न डरै परनारिन से करै छिप-छिपके ऐशबाजी तूँ। सज्जन सतसंगिन को देखि तेरे अंग जरैं, करैं लोक हाँसी तऊ नेकहूँ न लाजी तूँ। बाँधिके जंजीर में जमदूत जब चखैंहैं मजा, पायहौ कियेको फल 'मोद' मयन पाजी तूँ॥

॥ कवित्त ॥ (५)

एरे मन मेरे क्यों न भजै ताको प्रेम दगे, भजैं सदा जाको अविनासी वासी काशीको। गर्भमें कियो कबूल 'मोद' ता को भूल-भूल करते हो फूल-फूल संग पाप राशीको॥ भलो जो बतावैं तासो पूरो बकवाद करैं, मोह में हो चूर मूढ़ दास बनै दासीको। सियबर सुखरासीको उपासी होइहौं नाहिं जौं तो, दै हैं जमराज मजा तेरी बदमासीको॥

॥ कवित्त ॥ (६)

मीठ हूँ को रसिक भये खाटीहूँ को रसिक भये, चरपराहूँ रसिक भये चसकि के कुचसकैं। दामहूँको रसिक भये वामहूँ को रसिक भये, चामहूँ को रसिक भये नीचसंग बसिके। नशाहूँ को

रसिक भये किस्साहूँ को रसिक भये 'मोद' वेश्यारसिक भये आप खुसी नसिके। सबहीं रसरसिक भये राम रसिके रस नाहिं, पुछिहैं जमदूतैं मारि जूतैं शीश कसिके॥

॥ कवित्त ॥ (७)

रसना तूँ लागे सदा पर के अपवादन में, अति ही अनुरागे सदा खाँड़ और घीर्तन में। बने तू चतुर सदा चुगली चपाती ही में, खूब हीं बहादुर बने बोलिबो अनीर्तनमें। हरिजी को गुणगण को प्रेम से न गाय हाय चाव कै कै चसके तूँ चौलबाजी वीर्तन में। जिह्वे निर्लज्ज जौ न लाजे तूँ कुकर्मन में, 'मोद' तो क्यों-लाजैं सियारामनाम-कीर्तन में॥

॥ कवित्त ॥ (८)

डोलैं इतरात काहे भूलि निज तब की बात, सिर धुनि पछतात थे जब गर्भ की शिकस्ती में। आके विषयवाटिका में खुशी से विहार करैं, फिरैं जहाँ जमगण लै जंजीर गदा गस्ती में। सन्तन के संगत में तो भूलिके न जावैं कभू, इन्द्रिन के हेत धूमैं गली-गली वस्ती में। छोड़ मोह मस्ती तन नशत लख छन हीं छन, प्रेमरंग रंगाले 'मोद' ऐसे तनदुरुस्ती में॥

॥ कवित्त ॥ (९)

रहिये जू नरतन में बिताइये न वृथा छन, पर को उपकार कछु नित्य किया चाहिये जू। चाहिये जो सुख तो संतोष को न भूलैं, विषयवासना को प्रबल प्रवाह में न बहिये जू॥ बहिये एक ईश को निवास सबही में जानि, काहू से कठोर बैन कबहू ना कहिये जू। कहिये रघुनाथजू को नाम लखा चाहिये तो 'मोद' सदा मैथिली की शरण होय रहिये जू॥

॥ कवित्त ॥ (१०)

तजिके अव्यक्तपना पुत्र बने दसरथजू को, भक्तनके हित नाथ वन-वन पग धारी हैं। भिल्लन को लगाय हिये, गृद्ध को सराध किये मारे छिपि वालि और सहे वाकी गारी है। सवरी की बदरी पै सारे स्वाद वारे नाथ, वधि दसमाथ भार भूमि की उतारिहैं। प्रेमिन के प्रेमवश क्या-क्या नहिं किये नाथ, रावड़े स्वभाव पर 'मोद' बलिहारी है॥

॥ कवित्त ॥ (११)

मारयो भृगु लात छमा माग्यो जोरि चारो हाथ, अजहूँ लौं नाथ चिह्न हीय बीच धारी हैं। सदना के बधना के पानी प्रेमयुक्त अच्यो, तीलोचनजू के घर बने टहलकारी हैं। गज की पुकार सुनि गरुड़को छाड़ि दौड़े, द्रौपदीके हेत झट आप बने सारीहैं। प्रेमिन के प्रेम वश क्या-क्या नहिं किये नाथ, रावड़े स्वभाव पर 'मोद' बलिहारी है॥

॥ कवित्त ॥ (१२)

वेदन को सार काव्य भेदन को सार, 'मोद' निश्चय निर्धार प्रभु सार जग असार हैं। ग्रन्थों के सार सर्वपन्थों के सार, मतिवन्तों के विचार को तो ऐसही प्रचार हैं। सारहू को सार छौ अठारहुँ को सार हैं, तपधारिहूँ को सार जानैं सारा संसार है। कर्मकाण्डहू को सार ज्ञानकाण्ड हूँ को सार सब ब्रह्माण्डहूँ को सार कौशलेश के कुमार हैं॥

॥ कवित्त ॥ (१३)

सीय मुखज्योति देखि ब्रह्मज्योति गुप्तर हैं, पूर्णचन्द्र ज्योति होति अति हीं अधूर हैं। चपला ओ चंचला की चरचा चलावैं कौन,

कमला कमनीयताइ होत चूर चूर हैं॥ दिव्यता बखानन में बाणिहूँ अयानी बनै, ऐसी भूमिजाकी भव्यताई भरपूर हैं॥ लाल हूँ लुभाये रहैं लखते लुनाई सदा, 'मोद' झाँकि लीजै अबौ राजते हजूर हैं॥

॥ कवित्त ॥ (१४)

अगणित ब्रह्माण्डन की उत्पति थिति प्रलय करैं जाकी एक बारन की दिव्य भौंहफेरनी। जाकी कृपाकोर भये वस होत रघुचन्द टूटै भव फन्द छूटै मेरी और तेरनी। शम्भु सखी वेष धारि जाकी महल टहल करैं खड़े रहैं जोड़े कर शक्तिन की ढेरनी। 'मोद' अलि भाखैं उरअन्तर प्रमोद भरे काको नहिं चेरो करैं सीयाजू की हेरनी॥

॥ कवित्त ॥ (१५)

बिना तलवार 'मोद' म्यान से न काम सरैं, ज्ञान बिन जीव जैसे पावैं न आराम है। राधा बिना-माधो जैसे आधो हीं प्रतीत होत, बिना धन जैसे नहिं धनिक ऐसो नाम हैं। सर बिना बारिवारिकंज विन, रंज के खाली बंदूक से न सरैं जैसे काम हैं। दूध ज्यों मलाई बिन देह प्राण बाई बिन, तैसे रघुराई बिना सिया के बेकाम हैं॥

॥ कवित्त ॥ (१६)

प्रथम सु चाह युत जइये सतसंग मांह, सुनि हरिकथा सुख उरन्तर सरसाइये। गुरुपदपद्म सइ लेइ उपदेश तजि कपट सप्रेम, ललिलाल गुण गाइये। मंत्रराज जपिये जो जपत महेश, तोष सम, दम को धारि अन्य दोष न मन लाइये। हरिमय सब देखि लेखि हरि से विशेष सन्त, नित्य यह पाठ 'मोद' चित्त को पढ़ाइये॥

॥ कवित्त ॥ (१७)

वाहिआत बातैं तजि, विमुखन संघातैं तजि, जौं लों चाह जौं

ना सुसंगत में जूटिबो। तजि के प्रतिकूल कर्म जौंलों न अनुकूल करैं चित्त ते न टारैं टेब सज्जनते टूटिबो। प्रभु सुमिरण भूलिबे को जौ लों अफशोस नाहिं, तौलों हैं मुश्किल भवबन्धन के छूटिबो। जो लौं धारि नेम ना सियाबरसों प्रेम करैं, 'मोद' तौ लों कथनी है भूसा की कूटिबो॥

॥ कवित्त ॥ (१८)

तन को लखि भूलो तूं न धन को लखि भूलो, ऐन जन को लखि फूलो अन्त जाना जमधाम है। सुखहित सौधन्धा ज्यों करते 'मोद' अन्धा, त्यों रामभजन बन्धा कर लागैं नहि दाम हैं। करिहैं खल हाँसी सुनि होहु ना उदासी, तेरो सियबर सुखरासी काम पूरक अभिराम हैं। ऊठत सियराम चलत बैठत सियराम, कभू नाम ना भुलावै यही भक्तन को काम है॥

॥ कवित्त ॥ (१९)

बने लापरवाह धन धाम की आरामन में, कामना में मग्न हो गुलाम बने जनियाँ को। भावै सोइ खावै हटै ताहि को हरावै, भल लोगन के बीच धरै लाह की लवनियाँ को। सुनिके हित जरते हितकारी पै गुफरते सरकार से न डरते जो हरैंगें पाजिपनियाँ को। भक्ति को न गने रामकथा को न सुने आखिर खोपड़ी धुनोगे 'मोद' खोयकें जवनियाँ को॥

॥ कवित्त ॥ (२०)

चाह सुदाम दय वस्तु लय नाम ही, भू महँ बोय उपजाने में कस्त हैं। सुमती जल सींचि सुपुष्ट करैं कुमती तृण कोरि कमाने में दस्त हैं। नीति पथी को सुबुद्धिते आदरैं, बाले बचे हरि भक्ति में मस्त हैं। 'मोद' सो भुक्तिहु मुक्तिहुँ भोगैं, अत्युक्ति नहीं वह सत्य गृहस्त हैं॥

॥ कवित्त ॥ (२१)

मिथिला भुविमें नरदेह के पाय, श्रीमैथिलि के जे नै दास कहैलनि। छाड़ि वृथा बकवाद सप्रेम, सियें पियके गुणगाथ न गैलनि। जानिओ क जे अजान जकाँ, निज जीभ के कारण जीव के खैलनि॥ 'मोद' से जन्म बितौलनि व्यर्थ, कहू कहु त कहु त किओ कैलनि॥

॥ कवित्त ॥ (२२)

यही हो निश्चय सब हुआ भी है वे हुआ सा, जौ लौं नहिं जिआ सियाराम का सनेही हो। उनको जो नेह करैं प्रीतमसो, दीनहूँ ते दीन वह कैसेहुँ भले ही हो भले ही हो। दुर्दशा ये तन की तिहारी तऊ, नाम की रटनि उर टेक टेक ही हो। टेके ही होवै न टूटै पल ये री 'मोद' शायद कहैं तेरी साँस आखरी न येही हो॥

॥ कवित्त ॥ (२३)

चामकी गुलामी में जौ लों 'मोद' चूर रहैं, जौं लों हिय पूर रहैं कामना अरथ के। सत्य की प्रतिष्ठा की ह्रिये में निष्ठा जौ लों नहिं, जौं लौं नहि छूटै हैं कुटेव वृथा कथ के। बड़े बड़े पण्डित प्रवीण मिलि निश्चय किये, चार छौ अठारह मतान्तरों को मथके। शुद्ध प्रेम जौं लों नहि तौं लों नहि पूरीपरैं चाहे कोइ मत के हों चाहे कोई पथ के॥

॥ कवित्त ॥ (२४)

आजु सौभाग्यवती भई चखचकोरी मोरी, युगल मुखचन्दकी सुचन्द्रिकानि चाखनते। जादिन ते होश औ हवाश को सम्भाली हूँ, हिय हहराति आइ याही अभिलाषन ते। चन्द्रकला लाड़िलीप्रसाद ते भयो सुयोग, किधौं श्रीसियाकी पद्पद्म सीस राखन ते। सेवा करैं 'मोद' अब भरि भरि अनुरागन, आप हेरा करैं याहि प्यारे अनिआरे आँखनते॥

॥ कवित्त ॥ (२५)

युगल सरकार सदा सोहते सिंहासन पै रूपसुधा प्यारे सनेहिन को पिलाया करैं। मन्द मुसुक्यान बाँकी, चितवनि तिरछी चोखी, मार पद मारन परस्पर पिलाया करैं। कबहुँ कबहुँ प्यारी आसन में चन्दमुख कौमुदी से प्रेमिन हिय कुमुदिनको खुलि खुलि खिलाया करैं। रसिक सुजान 'मोद' ललिकहि मधुरीली जानि, युगल दृग जोहनि ते जोहिके जिलाया करैं॥

॥ कवित्त ॥ (२६)

युगल सरकार सदा विलसैं सुखासन पै, मोहिन चकोरकोटिन को दिखाते मुख चन्द चन्द। नवरंग मणिगनको भूषण अंग अंगन मैं, की धौ रंगरंगन की फनाये हैं फन्द फन्द। अंजन युत भरि जब दोउ पेखैं परस्पर, दसो दिसा पूर्ण होत प्रेम मकरन्द मन्द। अपनो बनावैं जग सपनों जनावैं अलि 'मोद' मुसुकावैं जब सियपियचन्द मन्द मन्द॥

॥ कवित्त ॥ (२७)

झूमि झूमि आइ चहुओरन ते चंचलासी, चकचौंधिन चितैवे हित जूमि जूमि। जूमि जूमि जोहि के युगल की अनमोली शोभा, भव्य भाव भरि गइं सबहिन हिय भूमि भूमि। भूमि भूमि उमंगि रही ललित लुभीली प्रभा, अलिन पावैं मकरन्द मदनन्द घूमि घूमि। चूमि चूमि करकंज मुखकंज मंजु 'मोद' लली लालमुखी बाँकी झाँकी झाकैं झूमि झूमि॥

॥ कवित्त ॥ (२८)

सहज श्रृंगार सजि, धाईं निमिपुर नारि, निरखि निहाल भईं माधुरी नमकदार। चित्र अवरेखी सी जहाँ की तहाँ थकित भईं देख

रोम रमकि गये दम्पति दमकदार। धीरज धराय धारे अंसन भुज परस्पर, झमक्यो झमाक झमझम भूषण झमकदार। लुभिगे लुभीले हिय 'मोद' मुख हेरि हेरि, चुंभि गे चुभीले चोखे चितवन चमकदार॥

॥ कवित्त ॥ (२९)

कोटिन सरद चन्द चान्दनि करन मंद, पेखि रहे परस्पर प्रेम पुलकनि। अंसन भुज धारि दोउ दोउन बलिहारी होवैं, जोवैं भगिनी सहेली सुख मुलकनि॥ युगल मयंक अंकमालिका दय हेरि, बिहँसिजुरावैं 'मोद' लतिका उर ढलकनि। चूमन चह्यो ज्यों बुलाक प्यारी बेसरिको, चूमि लियो बेसरि चमकि चट बुलकनि॥

॥ कवित्त ॥ (३०)

॥ श्रीरामभद्रजू के जन्मोत्सव सुअवसर पर ॥

कोइ लई क्रीट कोइ मकुट कोइ कुण्डलनि, कोइ हिय हार हुमुकि उतारली। कोउ बाहु भूषण कोउ कंकण करज कोउ चपला-सी चमकि चादर सम्भारली। कोउ रचि युक्ति जड़िजामा लई, उमगि उमंगी कोउ अंगुठा उतारली। 'मोद' कौशल्या के बरजत हूँ दासिन, दसजानजू को आधो कटिपट फारली॥

॥ कवित्त ॥ (३१)

रहा करें रमें हमेश अग्नि बीज ज्यों, दिनेश आकार में ही कहा करै। कहा करैं अकसर मकार चन्द्र बीज ओ तो, दोउ ताप आप आपही दहा करें। दहा करें पाप परिताप 'मोद' नाम नामी के हीय सदा सीतहीं चहा करें। चहा करें अपनी सीतलाई जौं तो सदा सीयस्वामिनी के शरण में रहा करें॥

॥ कवित्त ॥ (३२)

नवल छल अयन रंग घालि कल नयन, अतिकीन अचयन आज पूरे सो कराऊँगी। कटिपट छीनि, पहनाय सारी झीनि दै कंचुकि नवीनि कूच ऊँचकै धराऊँगी। उर चम्पाकलि नासा वेसरि दै भलि गाल अविर मसलि भाल सिन्दुर भराऊँगी। श्रीसियपद पारि गाय गाय 'मोद' गारि प्रसूनन मारि मारि परयंक पै पराऊँगी॥

॥ कवित्त ॥ (३३)

विविध प्रसूनन की मुकुट सुक्रीट रचि, प्यारिहि पहनाय पिय करि करि निहोरी हैं। कटि में कसायो पटपीट जामा जरीदार चादर चटक भरे छहरैं मणि छोरी हैं। आप बनि नागरि गुलाल दोउ गाल मल्यो दोउ अंग अंगनि अनंग रंग बोरी हैं। कंचन वन खोरी 'मोद' खेलैं खुलि अनोखी होरी, लालह्वै लाड़िली किसोर ह्वै किसोरी हैं॥

॥ कवित्त ॥ (३४)

यद्यपि अव्यक्त तऊ भक्तन के भक्तिवस रघुकुल सु कैरव के चन्द भो दयानिगाह। ऋषिमख रखवारी करितारी मुनिनारी अहो चरण छुये की हिय छाय रह्यो महा आह। चाँप को चढ़ायो निज छमाते छकायो, छकि छोनिप छेदैयाजू पधारे तपोवन की राह। राघव रंगीले की स्वभाव कैसो सोचो 'मोद' हरे हरे हरे हरे वाह वाह वाह वाह॥

॥ कवित्त ॥ (३५)

सावनमें साउनी पठायो श्रीसुनयना सजि, लालन की नयना लग्यो अच्छी अच्छी चीज में। सखन समेत सजि भूषण वसन बैसो,

छायो छवि जैसो न कोटि मनसीज में। श्रीचन्द्रकला कही सही मिथिलैं बढ़ाई शोभा, सीय हँसि बोली सयन दैके सखि नीज में। बारेक हरायो दोय बारेक हरायो अब लालन को हार तिहराओ 'मोद' तीजमें॥

॥ कवित्त ॥ (३६)

मैके हमारी जैसी सुथला सु मिथिला हैं, आरज अवास पुनि तैसिहिं सुखदैया हैं। जैसे वहाँ कमला विमला यमुनी दुग्धमती अमला, तैसेहि यहाँ सरयू की सरिहूँ सुहैया हैं। लक्ष्मी निधि भैया छमाछोह को करैया वहाँ यहाँ रघुरैया सदा रुख को रखैया हैं। 'मोद' समतैयापै मृदु लैया चतुरैया, रमणैया रसिकैया मिथिलें अधिकैया हैं॥

॥ कवित्त ॥ (३७)

वेद शास्त्र संतन के सम्मत सनातन मत, जिनकी सुमारग सर्वेश्वरे के जोरे हैं। जा में बहु भक्तें भगवन्त वशकारी भये, जिनके प्रमाण ग्रन्थ अबहूँ ना थोरे हैं॥ ताको तजि दम्भिन कलिराजकी मनेजर ह्वै, भाग्यहीन पात्रन में नाना मत घोरे हैं। श्रीरामजू को नाम रूप लीला धाम छोरि 'मोद' और सारे बात बादी गप्पिन के गपोरे हैं॥

॥ कवित्त ॥ (३८)

गलबाँही को देय के प्रेमासन पै प्यारे प्यारी, परा प्रेम पगे प्यावै छवि पय प्रेमीचाही को। चाही को ही को चाह नीके पहिचानी चतुर, चखनि मिलाये चारु अति हीं उमगाही को। गाही को अलक मिलानि मुसुकानि छटा, लतिका सु 'मोद' वाणी वाणी बदै नाहीं को। नाहीं कोउ और वस्तु जाचूँ लली लाल जू मैं; झूमैं नयन माँही तब झाँकी गलबाँहीं को॥

॥ कवित्त ॥ (३९)

साजि साजि साज सिय सहचरिसमूह आज, जुरी फाग चौक लिय पिचका रंग झोरी हैं। उत रघुलाल संग सखन समूह सोहैं, दूहूँ ओर विजय की इच्छा अथोरी हैं। औचकहिं आय पिय प्यारी पट रंग डारे, प्यारी पिय पाग छीनि झट रंग बोरी हैं। 'मोद' सुघराई लखि सबहिन ठहाका मारि, कहन लगी होरी है होरी है होरी है॥

॥ कवित्त ॥ (४०)

लखि ललिताई मिथिलेश लोट-पोट भये, घूँघटन बारीहूँ घूँघट सम्भारे री। जासु छटा छीटन पै कोटिहूँ छपाकर छिपैं अमित अनंग अंग अंग बलिहारैं री॥ देखि अभिरामता मुनिन सेवैं वाम बनि, रैनिचर छवि छकि तन मन न्योछारै री। रसिक रघुलाल की लुनाई ललचीली लखि, 'मोद' ऐसो को न जो न तन मन धनवारै री॥

॥ कवित्त ॥ (४१)

विमुखीन के संग में बैठन ते, 'मोद' चूका करो सदा चूका करो। गुरुहीन के पौरि में पैंठन ते, सदा लूका करो सदा लूका करो। पितु मातु दुखावैं तिन्हैं सिर अग्नि दै फूका करो सदा फुका करो। नहिं नाम रटैं मुख ता मुख में सदा थूका करो सदा थूका करो॥

॥ कवित्त ॥ (४२)

सियाराम विमुखी के संगतसे येरे 'मोद' हट्टे रहो ४
काम क्रोध लोभ तीनों शत्रुन से लड़ने को, डट्टे रहो ४
कर्मभूमि आ के सदा सुकृति सुठाटन को ठट्टे रहो ४
चार छौ अठारह को सार सतसंग ता में सट्टे रहो ४

॥ कवित्त ॥ (४३)

खाते डकराते जम्हुआते 'मोद' फिरा किये, जहाँ तहाँ हाहा

हा हाही ही ही ही हँसके। भला एक कहे कोइ एकहत्तर सुनाये ताहि, किया ना परबाहि गये नास्तिकाइ नसके। सन्तन को जान्यो तृ जीते बेवकूफ महा बन्यो बकवाद में बारिष्टर बहसके। एरे बेशर्म कर्मभूमि आ के क्या कमाया, पूछिहैं यमदूतैं मारि जूतैं शीश कसके॥

॥ कवित्त ॥ (४४)

पुर में पधारे तो विराजैं 'मोद' सुखपुर्वक, निज भाव भर देवैं सबहिनके उर में। उरमें न आवैं अन्य तर्क औ वितर्क कछु केवल लगि जावैं अब हिअरा हुजुर में। जुर में ये होगी जो हरेंगे न जिअरा को सब कोइ कहेंगे बेवफाई एकसुर में। सुरमें दिये नचननमें शोक भरे सयनन में। सियाजूके संग सदा राजैं निमिपुर में॥

॥ कवित्त ॥ (४५)

साजि साजि सहचरी सचाव खड़ी रंग भरी, राजैं पिय प्यारी दोउ गेरे हाथ गरबा में। कोउ धारे छत्रें कोउ चामर कोउ अत्रैं कोउ नेत्रकै इकत्रै परी परमानन्द सरवा में। कोऊ अलक डोलनिपै कोउ कल बोलनिपै कोऊ दृग लोलनि कोउ माधुरी अपरबा में। रसिकनकी सम्पति अनूपरूप दम्पति सदैव 'मोद' सिरसे नित चारु चारु तरवा में॥

॥ कवित्त ॥ (४६)

अखिल ब्रह्माण्डन रमण अभिरामराम मन आकर्षक घनश्याम यदुरैया भै। भक्तन अरिष्ट नष्टकारक नृसिंह, विरह रसास्वाद लेन चैतन्य सुखदइया भै। विद्यारस पायबे को आप वेदव्यास बने छमता सिखावन हेत धारत हिय पैया भै। भक्तिरस देन हित निपढ़ सुधि लेन हित, 'मोद' सियसैंयाँ किधौं तुलसी गुसैयाँ भै॥

॥ श्री गुरवे नमः ॥
॥ श्री चन्द्रकलायै नमः॥
॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥
॥ श्रीचन्द्रकलायै नमः ॥

॥ दोहा ॥

अगर मोद करना चाहै कर्मभूमि का काम।
सद्‌गुरु से ले भावनामनन करो वशु याम॥

॥ मञ्ज ॥

नौबत बाजैं कनकभवन में, चार घड़ी जब रहैं रयन।
कुञ्ज-कुञ्ज में सिय सहचारिणि, गान करैं बहु साज लयन॥
पुनि करि नित्यक्रिया परिकरयुत, चन्द्रकला ढिग आवैं सबन।
शीश नाय सब बैठि सभा में नृत्य वाद्य करि होंहिं मगन।
चोपदारिनी विनय करैं तब, उठि सर्वेश्वरि करैं गवन।
जुत्थेश्वरि युत लली-लाल को, आय लखैं सब दिव्य भवन॥
कनक पिञ्जरन ते पक्षिन तब, कल किल किलं कलापत हैं।
जगमोहन महँ बैठि सबै, सह यन्त्रणि राग अलापत हैं॥
सो सुनि खासि खवासि जगैं पुनि, खासे शुक मृदु बादैं वयन।
शब्द सुनत रसिकेश सियावर, खोलि देत हैं कंज नयन॥
पुनि कर परसि जगावैं प्रीतम, साधत हैं सिय मुद्रा नेक।
मन्द मुसुकि चट डारि गले भुज, लेत जम्हाई सुख अनेक॥
भोर सरोजविनिन्दति नयननि, श्रीमुख वास भ्रमैं अलि श्रेण।
डंक की त्रास तिन्हैं सियवल्लभ, दूरि विडारत पीत पटेन॥
छूटि रही अलकैं मुखचन्द पै, मानो अमी अहिपान करैं।
साजि सुभूषण लाललली अँग अंगज आरसि आगे धरैं॥
श्रीसर्वेश्वरि सप्त युथेश्वरि, भीतर जाइ सुरंगन सो।
परसि चरण सिरनाय आरसी, आगे दीन्ह उमंगन सों॥

वारि उत्थापन आरति, श्रीअंग, अंगनि पै भइ चित्रिणि सी सब।
कै अति आदर लाल लली झट, बैठनको सबहीं से कह्यो तब॥
बादल पीले रंग होतहीं, मणिपलंग से लली ललन।
मत्तमतंगहंस पंचानन, को लजबत चलैं भली चलन॥
युगल सखी मुर्छल करती अरु, चार पाँबड़े डारैं वसन।
युगल कहैं जय जयति युगल की, बलि बलि ह्वै लखि युगल हसन॥
चहूँ ओर बहु छड़ी दार पुनि बदैं, नकी वनि बाक बरं।
कोउ कन्दुक कोउ कंज भ्रमावैं, मृदंग बजावैं धारि स्वरं॥
बहुनितैं बहु लिये खिलौना, बहु करि छौना करैं पीकन।
मंगल कुंज सदा आवैं इमि, सिय स्वामिनि स्वामिनि जीवन॥
आइ मंगला दर्सथार लय, युगल सखी छवि दिव्य वरन।
अर्घपांवड़े देत प्रेम भरि, चली लिवाकर वंदि चरन॥
रत्न खचित चौखण्ड दलानै, छवि साने लट्टू लटकैं।
लखि विहंग प्रतिबिम्ब खम्भमें, चूमि-चूमि भ्रमि भ्रमि भटकैं॥
ललित सुमंडप मध्य बिछौना, तापर सिंहासन राजैं।
ता ऊपर बैठारि सुमंगल शृंगारणभूषण साजैं॥
धूप दीप नैवेद्य अँचै करि, बीरीदय चौकैं पूरी।
मंगल कलश थार सजि आरति, करैं एकटक ऋणतूरी॥

॥ एक घड़ी तक ॥

एकघड़ी उपरान्त चले सब, संग भले द्विज मंजन-कुञ्ज।
प्रथम नगाड़े बजे युगल सखि, आइ थार सजि मंगल पुञ्ज॥
अर्घ पांवड़े देत सुअद्भुत, चौकिन पै बैठायो जाइ।
कोमल चिक्कन दीन प्रभाती, लगे छुड़ावन पान ललाइ॥
युगल युगल लय झारि अंगोछिन, अँचवाये अंगुछाय सप्रेम।
तिलकाञ्जन सजि बसन सुभूषण, बैठाये बंगला मणिहेम॥
लखि सिंहासनासीन सखी, दय धूप पुनः युगवर्ति बनाय।
थारन में सजि मेंव फलन बहु, पावै मोद पवाय पवाय॥

पुनि अचबाय पोछि मुख बीरी, दै दै अतर सुपुष्पन बारि।
आरतिकय बहु गाय यन्त्र युत, देत लेत सुख ह्वै बलिहारि॥

॥ दो घड़ी तक ॥

दोय घड़ी उपरान्त चलैं स्नान सुकुञ्जैं लाल लली।
बाजी नगाड़ा प्रथम चौक, सजिथार लाइ युग नवल अली॥
चितै चन्दमुख चित्तचोर की, करि प्रणाम सुख सद्म चरण।
सादर चलीं लिवाय जहाँ, चौखण्ड दलानैं दिव्य वरण॥
ताकी कुर्सी ताखदार, ताखन प्रति पुतरी हैं कलकी।
ताखन की मेंहरा वन में, मोतिन झब्बेकी अति झलकी॥
प्रथमाबृत मोतिन खम्भे, दूजे मरकत मणि मन अटकैं।
तिनमें झालर रंग रंग, बहु मोतिन की लट्टू लटकैं॥
छज्जन पर बहु मणि पक्षिन, पुनिमणिहींकी बहु झार फुले।
नील मणी की सरौ वृक्ष, द्वै पांति चारहू द्वार खुले॥
तोरण मणी पुष्प पत्रनकी, चहू ओर ते हैं बन्धे।
ताके मध्य कुण्ड मणि मण्डित जलैं अमल अति शुचि गन्धे॥
चार घाट सीढ़ी सोरह, दोहरी दालान सु छवि पुञ्जै।
चान्दनितनी बनाति बनी, चहु कोन चार मञ्जन कुञ्जैं॥
प्रथम हरित मणि भूमि पुरट मन अटकत लखि वेलन बूटैं।
अष्ट कोण चोकी अद्भुत पर बैठत हीं फुहार छूटैं॥
लालमणीकी बनी दूसरी, सोभसनी चौकी भारैं।
बैठतहीं झट चार पूतरी, इकधारा करि जल ढारैं॥
नील मणी की भूमि तीसरी, दिब्य चौक तहां झलकारैं।
चारोकोण हेम हस्ती, चहुँ बैठत सूढ़न जल डारैं॥
चौथी सुन्दर स्वेतमणी तहाँ, हौद चार कल जल आवैं।
ग्रीषम सीतल शिशिर गरम, मलि अंग फुलेललि अन्हवावैं॥
बसन झीन अंगोछि अंग, साड़ी सुनीलमणि भरति छटा।
पहनाई सखि जनकलली जूको, रघुनन्दनजू को पीत पटा॥

दै सिर ताज ओढ़ाय दुशाला, चले वहाँ से पिय स्वामिनि।
आय दुख ड दलानै भीतर, मनो संग ह्वै घनदामिनि॥
द्वै सीढ़ी की दिव्य सु चौकी, जड़े जाहि में मणिजूथन।
क्रमसों बैठि प्रीति-भययुत, प्रियतम लागे चोटी गूथन॥
दुहूँ ओर द्वै अली खड़ी, लीने मुर्छल अति छवि छाविन।
मुक्तायुत गूथैं वेणी, मनो निज हित घन पूजैं नागिन॥
शीशा लय इकसौंह खड़ी, दरसावत द्वौ जगबन्दन के।
रागाकर भूषण श्रीू की, भाशाकर नृपनन्दन के।
साजि सजातन दोउ परसपर, बैठि सुचौक सुरंगन सौं।
चौपड़ खेलत द्यास भयो, रस दण्ड सचाव उमंगन सौं।

॥ छौ दण्ड तक ॥

छठा दण्ड जब बीतगयो, इक आइ कलेवाकुंज सखी।
प्रणाम जकि रही चित्र-सी, युगल माधुरी चखन चखी॥
कह्यो जोरि कर चलैं लालललि, भई कलेवाकाल अजी।
आय समाज समेत सियावर, प्रथम चौक दुन्दुभी बजी॥
युगल आइ मंगलादर्स लय, अपर अनेक लियावनको।
दिव्य चौक में आनि बिठाये, सिया सहित मनभावन को॥
चरण प्रछालि अँचाय सुगन्धन, सविधि धूप दै रिझवारी।
अकथनीय पकवान भरी, दोऊ मध में राखी थारी॥
लेंहि दोउ मुद भरी ग्रास पर, दोउ न अपने कर पावैं।
सो विलास लखि युगल रसिककी, सहचारिणि वलि-वलि जावैं।
चतुर सखी चहुँओर सौज लै, युगल-युगल झारीन घरे।
लघुपात्रन पय प्याय प्याय, बलि जाय-जाय अति मोद भरे॥
अपर सखी बहु थार लिये, रुचि पूछि परसि के परसावैं।
सबैं पवाय अँचाय युगल मुख, पोछन में सुख सरसावैं॥
कृपाबती बीरी पवाय, बैठाय सिंहासन मोदप्रदा।
अतरमाल दै कै आरति, आरसि महँ छवि लखि भई मुदा॥

॥ एक पहर तक ॥

पहर दिवस उपरान्त चलैं श्रीलाललली शृंगारनिकुंज।
बज्यो नगारा सजे थारयुग, युत्थेश्वरि आई छवि पुंज॥
अर्द्ध पांवड़े देत पुनः, पियप्यारी को लै चली तहाँ।
चहुँ ओर द्वै खण्ड मन्दिर, सब प्रकारसे दिव्य जहाँ॥
भूषण बसन लली लाला को, चहूँओर कोठरिन सबैं।
ता के छज्ज कंगूर कलस, झालरैं झलाझल अमित फबैं॥
ताके मध्य महा चौकी, गादी तकिये सु अनन्दनि के।
अति आदर युत बैठारि दई, जगबन्दन औ जगवन्दिनि के॥
नखसिख सजि दोऊ लली लालको, सनेहबुन्दन बरषैं।
तन में भूषण लाड़मात्र, भूषण ही की शोभा सरसैं॥
प्यारी मुदित पिया को लखि, तिमि प्रिया निरखि अति मुदित पिय।
युगल छटा पै छकित होंहि, तिर्छी चितवनि तकि सर्वतिया॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, करत भई युत्थेश्वरिजू।
प्रेम सहित स्वीकार करैं, श्रीरसिकेश्वर रसिकेश्वरिजू॥

॥ डेढ़ पहर तक ॥

पहर जाम सौं डेढ़ पहर लौं, रहिशृंगारगृह सीतावर।
पुनि सुखमय सुखपालन पै चढ़ि, चलैं दोउ छवि छजैं छहर॥
सूर्य्यमुखी दोउ दिसि बाँसन में, सजल मेघवत तेहि छाजन।
नवरंग मणि झालरैं झालझल, बिछि बिछावन अतिपावन॥
अष्ट अष्ट दोउ ओर दासिका, रूपरासिका नवजोवन।
सजि मंजीर किंकिंणी कंकण, ताकी मधु रव क्वणन-क्वणन॥
निमिबंसिन अति प्रेम प्रशंसिनि, तेउ सुखपालन में सोहैं।
रंग भरीसंग चली जाति, मृदुवयन विलाप मोहा मोहैं॥
एहि प्रकार मिथिलेन्द्रनन्दिनी, कौशलेन्द्रजू के लाला।
मध्य सभा मंडप के पहुँचे, संग लिये नवलामाला।
राज-देव-गन्धर्वकन्यका कोटि कोटि तहाँ बैठी सुठी।
उमा रमा सावित्रि सरस्वति, एकबारगी सबै उठी॥
सभामध्य अद्भुत सिंहासनासीन भये प्यारे-प्यारी॥
कहैं नकी बनि नाम करैं जूहार सबैं न्यारी-न्यारी।

॥ सभाछवि ॥

प्रभा सभा की कौन कहे, सत खण्ड बने चहुँ ओर सदन।
द्वार चार चहुँ ओर बने, बिच भूमि मणी की नील बरन॥
ताके मध्य विशाल वेदिका, विद्रुम की अति छविपुञ्जैं।
मणि वृक्षावलि तेहि नीचे तापै मणि अलिये अति गुञ्जैं।
करगर पै मणि की पुतली, कंचन की छड़ी करनधारे।
वेदी की चौकोन चार, मर्कत मणि की चौकी भारे॥
जो पुतरी के निकट जात, तेहि पकरि लेत दोउ करन भलें।
केतो करैं करैं न हटैं, मरमीन छोराबत फेरि कलें।
वेदी पर वेदिका मंजु, तेहि ऊपर मंडप वारिमणी।
रूप खम्भ के प्रथम आवरण, सबहिन के सुखकारि बनी॥
दूसर कंचन की राजैं, तहाँ देव कन्यका छवि छाजैं।
तीसर नीलमणी गन्धर्विनि, सह-समाज साजे साजैं।
चौथे फटिक मणीन बनी, तहाँ नाग-कन्यका छविजाला।
पंचम विद्रुम केर सजैं तहाँ रजैं उत्तराधिप बाला॥
छठा पिरोजन की स्वच्छण, तहाँ दक्षिण की बहु नृप तन्या।
सप्त हरित मणि भरित छटा, जहां पूर्व दिसाधिपकी कन्या॥
अष्टम हैं पाटल मणि की तहाँ; पश्चिम की बहु नृप क्वारी।
नवम मुक्ति छवि युक्त तहाँ, मिथिलानि तड़ितकी द्युतिहारी।
ताके मध्य अमूल्य मणिन की चतुरावृत ह्वै सिंहासन।
प्रथमावृत्त चौंसठि जुत्थेस्वरि, सजे सुभग तन नीलवसन।
द्वीतिया-वृत्त वत्तीस युथेस्वरि, पीत बसन शोभा सरसैं।
त्रितिया में श्रीचन्द्रकलादिक, हरित हरित आभादरसैं॥
ताके मध्य मन्द मुसुकाते, छवि वर्षाते प्रियाप्रीतम्।
पीछे युगल छबीली छविमय, छाजत छत्ते युगल घृतम्॥
युगल-युगल लय चर्म मुर्छलन, अपर अनेकन सौज लिये।
सेवा करैं भरैं छविरंगन, देति सोई जोई चाहैं जिये॥
करन लगीं बहु नृत्य-गान, भाँड़न की बनिता नकल तबैं।
हँसि देत प्रिया-प्रीतम अति ही, हसि मगन होत सुख सिन्धु सबैं।

॥ १४ दण्ड तक ॥

भई चारि दस दण्ड दिवस, पुनि भोजन-कुञ्जै चले सबै।
बजे नगारा सजे थार युग, सखी जुहारी आय तबै॥
दय के अर्घ लिवाय चली, शुचि भोजनसाला बनी जहाँ।
चहूँ ओर हैं चार मन्दिरैं, रत्नखचित अति दिव्य तहाँ॥
पूर्व दिशा कंचनमन्दिर, कच्ची सामग्री अनुउपा॥
पाक्यकारिनी बहुत बनी तहाँ की अधिकारिनि बररूपा।
दक्षिण में हें फटिकसदन, पकवाननकी वहाँ है साजन।
अधिकारिनि तहँ कुमकुमांगी, श्रीसियपीय प्रेम भाजन॥
उत्तर दिसा प्रबाल सदन, जहाँ पेंड़ा बने प्रकार अती।
अधिकारिनि तहँ हैं अनूपअलि, जेहि स्वरूप लखि लजैं रती॥
पश्चिम में गृह हरितमणिन को, जहाँ अथाने अमित बनी।
चहुँ मंदिर समीप लघु मंदिर, पनश्चिमेंसि हैं पिरोचनी॥
मध्याविशाला भोजनशाला, चान्दनिचौक बहू मणि के।
चहूँ ओर अलिवृन्द बैठि गई, नृपनन्दन नृपनन्दिनि के॥
कंचनथार अनेक कोपरन, बहुब्यञ्जन से भरी-भरी।
सबके आगे परुषि गई बहु, गान करै रस चावभरी॥
लाइ सुचौकी लाल-लली ढिग, मरकत मणि की शोभसने।
पाया आठ सुमोर अकार हजार पत्रकी कंजबने।
धरी थार व्यञ्जन अपार भरि, युगल झारि लय युगल खरी॥
युगल लिये लघुपात्र ब्यजन, दोउ जेवन लगें सुचाव भरी।
प्रथम सलोन सखण्ड पुनः कुछ सोन्ह वस्तु भोजन कीन्हें॥
रुचि लखिके रुचिलखनि सखी, चट चौकी ह्वा से लै लीन्हैं।
अचवावैं युग खड़ी-खड़ी, खड़िका लीन्हे युग मोद-भरी॥
चिक्कन झींनि अंगोछि पोछि मुख वीरी दई रस दिव्य भरी॥
साजि अंग साधारण भूषण वसन अतर-माला दय गर।
गई लिवा दोउ रसिकेश्वर को, दिव्य रत्न-सिंहासन पर॥
दय आगे अति दिव्य आरसी, लगी आरती करन सखी।
राम श्यामघन स्वाति सलिल छवि, सखि चख चातकि चखी चखी॥

॥ दोपहर तक ॥

दोय याम उपरान्त सीयपिय, सयनकुंज को पधरत भै।
बजी नगारा प्रथम चौक सखि, मिल्यौ थार सजि मंगलमय॥
अर्घ देइ चट चली लिवा, पद बन्दि परसि कोमल करसे।
सयनसदन मणि फटिक जहाँ बहु, ददपति केलि करत दरसे॥
छन फूले बहु फूल भ्रमर-गण, तिनपै गुञ्जत भूलि रहे।
चहूँ ओर मन्दिर अवली, झब्बे लट्टू बहु झूलि रहे॥
जिनमें बहु पलिका झलकदार, जुत्थेस्वरि सब तहँ जा पैठे।
तेहि भीतर मंडप दिव्य पलंग, तहँ लाल-लली प्रमुदित पैठे॥
प्रगट भई अंगजा अष्ट, तिन बहु प्रकार सेवा सु किये।
सुखऐन चैन रति-मैन लजावन, मनभावन दृग बन्द किये॥
जानि समय सर्वेश्वरिजू, युत्थेस्वरि युत मृदु गान किये।
सुनि सो मुधरीस्वर यन्त्रसहित, जागे सिय वल्लभ प्राण सिये॥
अंगज पाछे धय मसनद, दोउ भूषणबसन सजे छन में।
धरि आरसि आगे अष्टसखी, पुनि प्रविसि गई दोऊ तन में॥
खोलि दई परदा सखियाँ, अति छाइ गई सु प्रभा तेहिछन।
आइ गई सर्वेस्वरिजू, सब संग लिय जुत्थेस्वरि गन॥
जड़ित सु चौकी चन्द्रबती, ला धरी सु जामें ज्योति झला।
तकिये तेहि ऊपर प्रीतिप्रदा, झट आनि धरी श्री चन्द्रकला॥
रमक सहित श्रीप्यारि पिया चट राजत भै तापै तेहि छन।
श्रीचन्द्रकला श्रीस्वामिनिजू को, अचवायो अति प्रमुदित मन॥
चारुसिला अलि रसिकलाल ढिग, झारिन जल जै कर कंजन।
अँचवाये अँगुछाय 'मोद' भरि, भाल दृगनि दिय तिलकाञ्जन॥
पुनि दरपन दरसाय दिव्यअति, लखी माधुरी युगल सुठी।
कुञ्जेश्वरिजू सविधि दीप किय, जाते लगैं न दीठि मुठी॥
बेश स्वाद वेसन की लड्डू, लोनि पवाये अति पावन।
अँचवाये अंगुछाय पान दै, सजी आरती उत्थापन॥
रतीलजाबनि लगी बजावनि यन्त्र दिखावनि गृढ़गती।
जयति जयति ध्वनि गूँजि उठी, लूटैं परमानन्द भाग्यवती॥

॥ तृतीय पहर ॥

पहर दिवस जब रह्यो तबहिं, जलकेलि चाहना करत भये।
सहसमाज रघुराज-सियाजू, दिव्य निदाघा कुंज गये॥
कुञ्जेश्वरि झट झीन वसन, तन साजि सुचौक बैठाय दई।
लगी फुहारे परन झरन, बहु फूल विचित्र सुगन्धमई॥
हौज कोर पर मणिपुतरिन, तिन निज निज कर यन्त्राणि धारे।
जब फुहार जल भरै हौज तब, लगै साज बजवन सारे॥
सब एकस्वर हो मधुस्वर गावैं, राग रागिनी दरसावैं।
वर्षावैं प्रभुसुयशसुधारस, उर अन्तर सुख सरसावैं॥
सो विलास लखि एक घड़ी लौ, केलि-कुंज चले सह गोइयाँ।
करि करिणी-सी विलासावेशित, धरे दोउ गलबहियाँ।
भव्य चमन में दिव्य द्रुमन तर, सुमन बिछावन नव्य बने।
ताके मध्यम कुंड मणिमण्डित, खग पण्डित जनु शोभभने॥
कुण्डमध्य बहु गुप्त कुण्ड, लुकि छिपन हेतु ललि-लाला को।
चार बंगला चहू कोनपर कहै कौन छविजाला को॥
छरे वसन सजि 'मोद' भरे वनिता वृन्दनयुत कुण्ड परे।
जो दूजो बसन न धारि सके, तेहि बारि बोरि कल हास्य करे।
द्वैदल ह्वै जल-केलि करन, लागी सबही सियसहचारी।
जल छीटैं पग पकरि घसीटैं, बहु सरसिजनी करैं मारी॥
करिसंकेत प्रिया प्रीतम तब, जाय छिपे उपकुण्डन में।
सुघड़ सखी लखि कही सुनत हीं, सोच पड़ी अलिझुण्डन में॥
कुञ्ज-कुञ्ज द्रुमलतन पुञ्ज में, ढूँढ़ि ढूँढ़ि भइ व्याकुल सब।
देखि सो दशा कौतुकी दम्पति, भक्तन सम्पति प्रगटे तब॥
पाय दरस दोउ रसिकराय को, मुदित सबै चख चख हेरी।
लगी बुलावन सखिन सखिनको, बहुविधि टेरि मदन भेरी॥
लगे पुनः बहु खेल करन, चढ़ि चढ़िके कूदन अट्टन से॥
मनहु बारिधन वारिप्रवेशैं, मिलि बहु दामिनि ठट्टन से॥
लगे उछालैं लेन सबै, मानहुँ बहु तड़ित छिपे घन में।

उदधि मान खण्डन हित जनु, बहु मुखमयंक प्रगटे छन में॥
पुनि कंजनमदगंजनहित, अद्भुत करकंज प्रगट कीने।
मनरंजन मन रंजि सबहि, पुनि बाहर भए भीने भीने॥
कुञ्जेश्वरि झट सबहिनको, साजे तन भूषण दिव्य वसन।
लली लाल को वसन संदली, साजि सँवारी तिलकाञ्जन॥
दिव्य भूषणनि भूषित कै, पधराय नगन जरि सिंहासन।
धूपदीपनैवेद्य मधुर दय, दय अचवन मुख पोछि बसन॥
बीरी अतर सुमाल देइ करि, करी आरती यन्त्र ठटा।
हर्षि हर्षि बहु सुमन वर्षि, लगि 'मोद' लखनसब मंजु छटा।

॥ सर्वानन्द भवन ॥

सन्ध्या करि चढ़िके सुखपालन सर्वानन्द भवन सियनाथ।
आय दुखण्ड विशाल कच्छ पै, सोहि रहे परिकरगन साथ॥
बिछी जड़ित जगमगित जाजमैं, मणिदीपन दीपैं चहुँओर।
सहित समाज बैठगय तापर, जनककिशोरी अवधकिशोर।
देश-देश के राजतनय बहु रघुवंसिनके कुंवर अनेक।
सबै सुघर सचरित्र धनुर्धर, परम प्रवीण एक-ते-एक॥
कौशलेश के अपर तनय, सतसात और खोड़श छविधाम।
भरत लषण रिपुहन युत सबही, आयजुहार करन तेहि ठाम॥
द्वारपालिका खबर कही, दरबारि पुशाकैं सज्यो सुनत।
पैजामा किनखाप मोहरा, पचरंगे मणि लगी बनत॥
जड़ित सु जामा झलाझली की, कटिपट पटुका मणि मेढ़े॥
स्वर्ण सूत्र आभास मित्रसी, सीसपाग पेंचन टेढ़े॥
सर्पेंचन पर तुर्रे कलंगी, झब्बे फब्बै अहो जैसी।
कानन में मोतिन चौकड़ पुनि, नासामणिहुँ बनी तैसी॥
हाथों में जड़ाउ बाला, कंठों में कंठा गजमुक्ता।
पदिक हार जयमाल धुक धुकी, साजि दई सखि छवियुक्ता।
बायँ कांधपै ढाल धरे, दहिने तलबार जड़ित सोहैं।

कंज नयन अंजन रंजित, अतिचंचल सबके मन मोहैं॥
अलक कपोलन पै बिखरी, वीरा सजि सजि दीन्हें बाला।
कोटि कामछवि दूर करैं, श्रीचक्रवर्तिजू के लाला॥
सब प्रकार सजि सर्व अंग, पुनि आय सभा में मन्द गमन।
लगे करन जूहार सबैं, चोपदार बतावैं नाम सबन॥
वय किसोर के बहुत खबासन, सोजन लै मन मुदित खड़े।
कोउ करछत्र चम्र मूर्छल कोउ, पानदान पिकदान धरे।
देश-देश के कथक कलामत, भाड़ कंचनी आ-आकर।
निज निज विद्या को दरसावै, यन्त्रणयुत बहु गा गाकर।
बहु बोली बहु बोल सुनावै, बहुरूपी रूपन लावैं।
गोकन से श्रीजनकनन्दिनी, लखि सुनि के अति सुख पावैं॥
ताहि समय उर्मिला माण्डवी, श्रुतिकीरति सियकी प्यारी।
संग लिये रघुवंश बधूटिन आइ बैठि करि जूहारी॥
कृपाकोर की अभिलाषिनि लखि स्वामिनि अति सत्कार दई।
निरखि-निरखि सब कौतुकन, सीयसहित सब मोदमई॥
सभा बिनोद बिलोकत हीं, रस दंड रैनि जब बीत गई।
मातु कौशिला बोलि सुजानहिं, कह्यो व्यारु की बेरि भई॥
कह्यो सुनीतहिं जाय कहो अब, सकल बधूटिन इत आवैं।
मनमाने खटरस व्यञ्जन, श्रीलाल लली युत सब पावैं॥
आय सुजान सुनाय सभा में, सूनीता सिय पर आई।
चले सखन युत गज सवारि सों, सो शोभा न बनै गाई॥
आगे बहु नकीब जगरे करखाउ, उच्च स्वर से गावैं।
राजकुमर सब तुरंग नचावैं, छुटैं रबाइस छवि छावैं॥
अटा-मार्ग श्रीजनकनन्दिनी, सखिन सहित निरखैं शोभा।
गोकन में सब मातु खड़ी, बहु करैं आरती लखि ओभा॥
प्रथम गये जहँ चक्रवर्तिजू, बैठ रहे संग मुनि जू के।
सर्वश्रेष्ठ श्रीगुरुवशिष्ठ को, कीन्ह प्रणाम चरण छूके॥
ब्रह्म वृद्ध सरदारन सिरना, पितु जुहार करि नय नागर।

सखन समेत समीप बैठगये, सीलस्वरूप गुणन सागर।
तैसेहि उत मिथिलेशनन्दनी, अरुन्धती पद वंदि मुदम्।
अति-सनेह भरि सब सासुन को, वन्दन कीनी परसि पदम्॥
यथायोग मिलि बैठि गईं सब, तब गुरुनारि बखानै हैं।
करवाओ व्यारू सबहिन को, लालन सब अलसाने हैं॥
मुनि सुहावने बैन अम्बजू, मँगवाईं कंचन थारी।
बारि दीप धारि लवण ललनको, आरति करैं मुदित भारी॥
सादर पुनः लिवाय गईं जहँ, बनी सु भोजन की साजा।
ललिन सहित सब अम्ब एकदिसि, दूसर लालनयुत राजा।
व्यञ्जन अमित सुस्वाद-भरी, झट धरी सुआरन थारन तब।
रानि राय आज्ञा दइ दुहुँदिसि, लगे मुदित मन जेवन सब॥
दुहूँ ओर की सुघर दासिका, गारि सुनावै युक्ति करी।
हँसैं राउ रानिनयुत सुनि-सुनि, बातैं व्यंग सुउक्ति भरी॥
दय अँचवन बैठारि सुमन्दिर, दिव्य सुभूषण वसन दई।
कह्यो राउ अब बेगि पठाओ, सयन करन को समय भई॥
बन्दि चले सब सयनसदन को, करि सबारि सुख-पालन को॥
रानिराय गुणशील सराहैं, बहु प्रकार ललि लालन को॥
स्वामिनि चढ़ि सुखपालनपै, सहसखिअन आईं कनक भवन।
श्रुतिकीरति उर्मिला माण्डविहिं, वचन तोष दै फेरि सबन।
तिमि रघुलाल सखन आदर दय, पुनः पधारे मध्य सदन।
सखि बैठारि सुदिव्य सिंहासन, निरखि विनिन्दैं कोटि मदन।
करि आरति प्रणाम अति आदर, सबहिं बिदा दिन्हें सियनाथ।
गये जड़ाव जड़े पलिकापै, पियप्यारी परसे दोउ हाथ॥
चौंसठि युत्थबतीस युत्थेस्वरि करैं सदा प्रति घटिका से[illegible]
अँगज अष्ट प्रसिद्ध रहैं, अलिमोद गोप्य अति गोप्य ये भे[illegible]

॥ आरती ॥

आरती दम्पति की कीजै, उरन्तर नख-सिख रख लीजैं।

महावर चारु चरण सोहैं,
ललित अंगुलियन मनमोहैं,
कड़ा पायल झमझमको हैं,

साड़ि सु सजीलो, धोति पट पीलो, चादर चटकीलो, निरखि अँखियन सनेह भीजै॥

लसै कंचुकि जामा जड़ की।
सुभग मणिमाल पंचलड़की।
कुण्डल उत इत कानन तड़की।

अलक झलकोहैं, तकनि तिरछोहैं, परस्पर जोहैं, माधुरी उमगि उमगि पीजै॥

चन्द्रिका सियसिर ज्योंसत चंद।
क्रीट जगमगित धरे रघुनन्द॥
अंस भुजधारे मुसुकत मंद॥

सदा यदि रंग, रंगैं अंग अंग, हो प्रेम अभंग यही बर मोद अलिहिं दीजै॥

□□□

॥ श्रीजगन्नाथपुरी में लिखित पद ॥ (१)

जगदीश यो, जगदीश यो, जगदीश यो, जगदीश।
कनै कमल नयन सौं करुणा कैक, हेरु हमरा दीश॥
ई जगत जाल में जकरल, जीवन के सब दिन चलि गेल।
श्रीजानकि जीवन जूसों मन भरि, दरस परस नहिं भेल।
चटपटी दिय हियमें अति, छन-छन पल विश्वावीश॥
सीतापति कोठरी के ताला खोलवैया अपनेहीं।
जमलार्जुन जबन अजामिल अघ, धोलवैया अपनेहीं।
करु पूर्ण 'मोद' मन कामदिय येहे मंजुल बकशीश॥

॥ पद ॥२॥ प्रेम हास्य ॥

जगदीश अहाँ अजब जुलुम कलौंयो। दूनू भाई दुहू दिसि भेलौं, बिचमें सूभद्रहिं धय लेलौं, केयो नहिं कैलक से अहाँ कलौं, लाजो के लजैलौं यो॥ जग०॥ जौं ऊ बैसतथि अहाँके वाम, तौं जरि बरि जैतथि बलराम, हियमें सोचि नफा परिणाम, भगिनिके भाउज बनैलौंयो॥ जग०॥ घुरि घुरि घर घर गोरस चोरैलौं, सिकहर तोरलौं मटुकी फोरलौं, भरिसक अपन परार नैं छौरलौं, गलि-गलि 'मोद' मचैलौंयो॥ जग०॥

जयमाल ॥ पद ॥३॥

सिया चली सखिनके संग, राम गल माल दिये ह्वै रहीं सिथिल अंग अंग, श्याम रंग रंगि हिये॥ छाय रह्यो जय कार नगर नभ, उघटत तान तरंग--कहत धन धन्य विये॥ कुटिल महिप कुमुद कुम्भिलाने, देखि प्रबल मार्तण्ड सबै सकुचाय जिये॥ 'मोद' अली आनन्द मगन मन, उमगित पुलकित अंग, युगल छवि जोहि जिये॥

॥ जुल्मी की जादू ॥ पूर्बी ॥

सुनु सुनु सजनि आजुकि अजवहिं बात, येरी कछु कहलो न

जात, कहे बिन रहलो न जात, सजनि सीयाजुके साजन देखि जीया भइ बे हात॥ जबहिं विलोकि उनकी बांकि वांकि नयन, रतनारी कजरारी अति पयन, रसकारी बसकारीभरे मयन, सजनि तबहिं ते मेरे हियरा में थिरताइ तनिको हयन॥ जहाँ जहाँ हेरति तहाँ तहाँ वे दिखात, नख सिख साजे मनहर गात मन्द मन्द मुसुकात, सजनि पाँव कहवाँ धारूँ सोतो ठाँव ना लखात॥ जाउ जाउ सजनि वेगि सियाजू से सुनाउ, विनय करि स्वामिनीको लाउ, मैं तो हो रही कछु अन्या वेगि चैतन्या बनाउ॥ आइ हँसि हेरि सियजू, दीनी सिर कर डार, कीनी दूरि सो दृग मार, अपनी लाड़िली की करुणा पै मोदलतिका भइ न्योछार॥

॥ नम्रनिवेदन ॥

स्वामिनि सियाजू ये, सहलौं दुसह दुख आब सहल नहिं जाय॥ माइक तन के मान बड़ाई, दिन-दिन अति अधिकाय। राग द्वेष हठि पैसि उरन्तर, सुमिरण देत छोड़ाय॥ सम-सन्तोष दया विवेक जौं, किञ्चित मन ठहराय। तौं झट लोभक धार भयंकर, देत समूल बहाय॥ बार बार जग जलधि में बोरलक, जे परिवार बलाय। प्रबल होइत अछि तकरे ममता, करु आब बेगि सहाय॥ करुणानिधिसँ कहबैन नीके, मोदक अर्ज बुझाय। देथु-समागम सन्त विशुद्धक, नहि त लेथु बजाय॥

॥ पद ॥

बाजै-बाजै डमरुआ डम्म डम्म डम्म, नाचै-नाचै योगिनियाँ झम्म झम्म झम्म॥ गणपति तान पूर ध्वनि पूरैं, कार्तिक मृदंग करैं धम्म धम्म धम्म॥ तोरत तालन, भूत बैतालन, शंकर गावैं राम्म राम्म रान्म॥ कीर्त्तन करि शिव अग उपदेशैं, जानै सब मानै कम्म कम्म कम्म॥ डमरुनाद से बनी व्याकरण, मोद न जा विनु आगम निगम्म॥

॥ पद ॥

अब नय उचित अनाकानी करनीया, ऐ श्री स्वामिनि सीया, नयनिन निवसिअउ संगपिया॥ ऐश्री०॥ यदपि मलीना दीना, प्रीति धन हीना, ऐ० तदपि कहाइछी भवदीया॥ ऐश्री०॥ विरद विशद अछि, अहाँक अतीया ऐ० किअक कठोर, कै लौं हीया॥ ऐश्री०॥ छमि अपराध पुरू 'मोद' मन साध, ऐश्री० छी अहाँ छमाकरक धीया॥ ऐश्री०॥

संवत् युग सहस्र अरु पाँच।
प्रमुदित मोद पदावलि राँच॥

"गणेशाय नमः" "श्री हरये नमः" [illegible]

श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम

श्रीसीताराम नाम
लेखनजप पुस्तिका

आत्म-कल्याण के लिए श्रीसीताराम नाम अवश्य लिखें।